RNI No. MPHIN/25/A4421

दैनिक
दिव्य संवाद

वर्ष 01 अंक: 09 | उज्जैन शुक्रवार दिनांक 13 फरवरी 2026 फालगुन मास कृष्ण पक्ष एकादशी संवत् 2082 | पृष्ठ: 8 मूल्य :02 रूपये

भवन निर्माण में उत्कृष्ट दृष्टिकोण के साथ दीर्घकालीन कार्य योजना अपनाये : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने किया भवन विकास निगम के प्रोजेक्ट मैनेजमेंट सिस्टम 2.0 पोर्टल लॉंच

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि निर्माण सिर्फ ईंट- पत्थर का संयोजन नहीं, एक अभिनव कला है। इसमें उत्कृष्ट दृष्टिकोण के साथ दीर्घकालिक कार्य योजना को अपनाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि बदलते समय की आवश्यकताओं के अनुरूप अब हर निर्माण कार्य में कन्सेप्चुअल और क्वालिटेटिव एप्रोच अनिवार्य रूप से दिखाई देना चाहिए। गुणवत्ता से किसी भी स्तर पर समझौता नहीं किया जाना चाहिए। प्रदेश के विकास के लिए हम सभी को पूरी क्षमता दक्षता से काम करना होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव गुरुवार को रवीन्द्र भवन में लोक निर्माण विभाग अन्तर्गत मध्यप्रदेश भवन विकास निगम द्वारा आयोजित एक दिवसीय क्षमता संवर्धन कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। लोक निर्माण विभाग के तकनीकी अधिकारियों, वरिष्ठ एवं कनिष्ठ अभियंताओं को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वैचारिक प्रतिबद्धता और कार्यशैली में जड़ता से बचने और बदलती तकनीकों के अनुरूप स्वयं को अद्यतन रखने के लिए कौशल संवर्धन अत्यंत आवश्यक है। ऐसी कार्यशालाएं अभियंताओं की स्किल्स को रिफ्रेश करती हैं और उन्हें नई ऊर्जा प्रदान करती हैं। उन्होंने निर्माण कार्यों में दीर्घकालिक दृष्टि, नवाचार और पारदर्शिता को प्राथमिकता देने पर जोर दिया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में पीएम गतिशक्ति योजना के माध्यम से लोक निर्माण विभाग नवाचारों को धरातल पर उतार रहा है। वर्तमान समय में हमारे इंजीनियर्स साक्षात् भगवान विश्वकर्मा के अवतार हैं। लोक निर्माण विभाग ने पिछले 2 वर्षों के कार्यों के आधार पर अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है। इस अवधि में सराहनीय कार्य हुए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि गीता के अंतिम अध्याय में ज्ञान और विज्ञान की बात कही गई है, जिसमें मन, बुद्धि और अहंकार के साथ पंच तत्वों की व्याख्या की गई है। लोक निर्माण विभाग के इंजीनियर्स की यह कार्यशाला आधुनिक संरचनाओं के निर्माण को गति प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण पहल है। हमारे इंजीनियर्स ने सांदीपनि विद्यालय सहित बड़े-बड़े अधोसंरचनात्मक विकास के निर्माण कार्य किए हैं। सड़क, पुल, स्टेडियम और भवन जैसे निर्माण कार्य लोक निर्माण विभाग के माध्यम से ही किये जाते हैं। विभागीय इंजीनियर्स की क्षमता संवर्धन के लिए समय-समय पर प्रशिक्षण की आवश्यकता भी है। उन्होंने कहा कि इंजीनियर्स को अपना काम करने में अनेक चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है। आज की कार्यशाला में एमपीआईडीसी सहित देश की विभिन्न संस्थाओं के साथ समझौते हुए हैं। प्रदेश में ग्रीन बिल्डिंग के विकास को लेकर सहमति बनी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सभी कार्यों और नवाचारों के लिए लोक निर्माण मंत्री एवं विभाग को बधाई दीं।

लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह ने क्षमता संवर्धन कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि यह केवल एक प्रशिक्षण कार्यक्रम नहीं, बल्कि विभाग की उस निरंतर सुधार यात्रा का प्रतीक है जिसमें नई सोच, नई प्रणाली और उच्च गुणवत्ता के साथ लोक निर्माण विभाग आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि जब सोच बदलती है तभी व्यवस्था बदलती है, और यह कार्यशाला विभाग के नवाचारों की श्रृंखला का एक महत्वपूर्ण कदम है। मंत्री श्री सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में देश में अधोसंरचना विकास को केवल निर्माण कार्य तक सीमित नहीं रखा गया है, बल्कि उसे सुशासन, पारदर्शिता, तकनीक और नागरिक सुविधा से जोड़ा गया है। उन्होंने प्रधानमंत्री गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान, डिजिटल इंडिया, ईज़ ऑफ डूइंग बिज़नेस, हरित विकास और आत्मनिर्भर भारत जैसे कार्यक्रमों का उल्लेख करते हुए कहा कि अब विकास समन्वित सोच के साथ आगे बढ़ रहा है। मंत्री श्री सिंह ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव के दूरदर्शी नेतृत्व में मध्यप्रदेश ने अधोसंरचनात्मक विकास को नई गति और दिशा दी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव का स्पष्ट संदेश है कि निर्माण केवल संरचना नहीं, बल्कि भविष्य की नींव है। समयबद्धता, गुणवत्ता, पारदर्शिता और पर्यावरणीय संवेदनशीलता अब विभाग की कार्य संस्कृति का अभिन्न अंग बनती जा रही है। उन्होंने कहा कि सीखने की कोई उम्र नहीं होती है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने लोक निर्माण विभाग के लिए 293 इंजीनियर्स के पद भरने की स्वीकृति प्रदान की है। इसके लिए विभागीय स्तर पर कार्य जारी है। मंत्री श्री सिंह ने बताया कि प्रोजेक्ट मैनेजमेंट मैन्युअल 2.0 विभाग की महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जो सरकारी भवन निर्माण परियोजनाओं के लिए एक समग्र मार्गदर्शिका का कार्य करेगा। मंत्री श्री सिंह ने पीएम गति शक्ति पोर्टल आधारित रोड नेटवर्क मास्टर प्लान के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

मंत्री श्री सिंह ने कहा कि सड़कों, पुलों और भवनों का वास्तविक आधार प्रशिक्षित एवं सक्षम मानव संसाधन होता है।

मौसम आज

तापमान
न्यूनतम - 16 डि.से.
अधिकतम - 30 डि.से.

न्यूज गैलरी

महिलाओं के ऑनलाइन उत्पीड़न पर सरकार का कड़ा रुख, डेटिंग एप पर लगाम की तैयारी

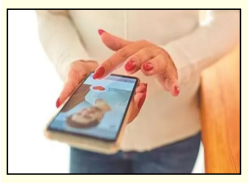

नई दिल्ली (एजेंसी)। सरकार ने इंटरनेट मीडिया और डेटिंग एप्लिकेशन समेत विभिन्न डिजिटल प्लेटफार्मों के बढ़ते दुरुपयोग पर ध्यान देते हुए और सख्त रुख अख्तियार किया है। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय आनलाइन लैंगिक हिंसा से निपटने के लिए गृह मंत्रालय और इलेक्ट्रानिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के साथ निकट समन्वय में काम कर रहा है। इसमें पहचान की चोरी, फर्जी प्रोफाइल का दुरुपयोग, अश्लील सामग्री का प्रसार, गैर-सहमति से अंतरंग चित्र (एनसीआईआई) और डीपफेक्स शामिल हैं, जो अंतर-मंत्रालयी परामर्श, सलाह, नियामक उपायों और पीड़ित सहायता तंत्र के माध्यम से किया जा रहा है। महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री सवित्री ठाकुर ने राज्यसभा में बताया कि मिशन शक्ति के तहत महिलाओं की सुरक्षा, सुरक्षा और सशक्तिकरण को बढ़ाने के लिए एक समग्र और पीड़ित-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाया गया है, जिसमें प्रौद्योगिकी-संबंधित अपराधों से सुरक्षा भी शामिल है। साइबर उत्पीड़न के पीड़ितों को एकीकृत सेवाएं प्रदान की जाती हैं, जैसे कानूनी सहायता, परामर्श और देशभर में स्थापित वन स्टाप सेंटरों से शिकायतें दर्ज कराने की सुविधा। निर्भया फंड के तहत सरकार ने महिलाओं और बच्चों के खिलाफ साइबर अपराध रोकथाम (सीसीपीडब्ल्यूसी) योजना लागू की है।

वीबीएसए बिल की जांच के लिए संसदीय समिति का हुआ गठन, भाजपा की पुरंदेश्वरी होंगी अध्यक्ष

नई दिल्ली (एजेंसी)। विकसित भारत शिक्षा अधिष्ठान (वीबीएसए) विधेयक की जांच करने के लिए भाजपा सदस्य डा. पुरंदेश्वरी की अध्यक्षता में 31 सदस्यीय संयुक्त समिति का गठन किया गया है। इसके जरिये उच्च शिक्षा नियामक स्थापित करने का प्रयास करना है। लोकसभा सचिवालय की मंगलवार को जारी एक अधिसूचना के अनुसार, यह समिति दोनों सदनों के सदस्यों से मिलकर बनी है और अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करने से पहले यह समिति प्रस्तावित कानून के प्रविधानों की जांच करेगी। शीतकालीन सत्र के दौरान पेश किया गया वीबीएसए विधेयक उच्च शिक्षा नियामक ढांचे में सुधार करने का प्रयास करता है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के अनुरूप है। यह प्रस्तावित कानून कई मौजूदा नियामकों को एक एकल समग्र निकाय से बदलने और मान्यता, वित्तपोषण और मानक निर्धारण कार्यों के पृथक्करण की व्यवस्था प्रदान करने का लक्ष्य रखता है।

वीबी-जी राम जी के तहत दस लाख करोड़ खर्च होंगे,

त्रिपुरा में बोले कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय कृषि, किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि अगले पांच वर्षों में ग्रामीण भारत में 10 लाख करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे, जो कि विकसित भारत रोजगार और आजीविका मिशन (ग्रामीण) (वीबी-जी राम जी) के तहत होगा।

उन्होंने कहा कि यह योजना विकसित भारत के निर्माण के लिए एक व्यापक रोडमैप प्रदान करती है। त्रिपुरा की राजधानी अगरतला में वीबी-जी राम जी कार्यक्रम पर एक सम्मेलन में बुधवार को केंद्रीय मंत्री चौहान ने कहा कि यह योजना समाज के सभी वर्गों की सेवा के लिए बनाई गई है। ग्रामीण भारत में 10 लाख करोड़ रुपये खर्च होंगे

वीबी-जी राम जी 125 दिनों की रोजगार की गारंटी देता है, जो पहले की सौ दिनों के रोजगार से 25 दिन अधिक है। ग्रामीण कार्यक्रम के लिए 1,51,282 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं, जबकि वित्त आयोग के माध्यम से अतिरिक्त 55 हजार करोड़ रुपये प्रदान किए जाएंगे, जिससे कुल आवंटन एक वर्ष में दो लाख करोड़ रुपये से अधिक हो जाएगा।

कृषि सहकारी समितियों की स्थापना में तेजी, 27 प्रतिशत लक्ष्य हासिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कहा कि 2024-25 और 2025-26 के दौरान देशभर में अब तक 8,710 प्राथमिक कृषि सहकारी समितियों (पीएसीएस) की स्थापना की गई है, जिससे निर्धारित लक्ष्य का 27 प्रतिशत हासिल हुआ है। शाह ने बुधवार को राज्यसभा में अपने लिखित उत्तर में कहा कि सरकार ने 2024-25 और 2025-26 वित्तीय वर्षों के दौरान 32,752 पीएसीएस बनाने का लक्ष्य रखा है। लक्ष्य के मुकाबले अब तक कुल 8,710 पीएसीएस का गठन किया गया है, जो कि इन दो वर्षीय अवधि में राष्ट्रीय स्तर पर लगभग 27 प्रतिशत की उपलब्धि को दर्शाता है। इस अवधि में सबसे अधिक पीएसीएस ओडिशा (1,543) में स्थापित किए गए। इसके बाद राजस्थान (1,387), उत्तर प्रदेश (1,099), मध्य प्रदेश (621) और उत्तराखंड (621) का स्थान रहा। गुजरात में लगभग 525 पीएसीएस, असम और छत्तीसगढ़ में 469-469, महाराष्ट्र में 149 और हिमाचल प्रदेश में 116 पीएसीएस स्थापित किए गए। शाह ने यह भी बताया कि पीएसीएस को प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि केंद्र (पीएमबीजेके) संचालित करने, पाइप जल आपूर्ति योजनाओं का संचालन और रखरखाव करने और खुदरा ईंधन आउटलेट और एलपीजी वितरण का कार्य करने के लिए अधिकृत किया गया है।

चीन के चंदे से चलता था राजीव गांधी फाउंडेशन, बीजेपी ने कांग्रेस को घेरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में यह सियासी कबड्डी जैसा दृश्य था। बजट पर चर्चा के दौरान नेता विपक्ष राहुल गांधी ने लगभग 45 मिनट तक सरकार पर गंभीर आरोप लगाए और भाषण खत्म होते ही सदन से रवाना हो गए। इसके बाद सत्ता पक्ष की बारी थी।

राहुल गांधी के आरोपों पर भाजपा का पलटवार- एक बार फिर राहुल गांधी ने कटाक्ष किया कि जिनको झूठ बोलने की आदत होती है, वह ज्यादा देर टिक नहीं पाते।

भारत के एआई मॉडल का दुनियाभर में बोलबाला, अमेरिका-चीन से भी ज्यादा मजबूत सिस्टम

नई दिल्ली (एजेंसी)। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अब सिर्फ़ एक टेक्नोलाजी स्टोरी नहीं है। यह एक पावर स्टोरी है। जैसे-जैसे देश एडवांस्ड एआई सिस्टम बनाने की रेस में आगे बढ़ रहे हैं, वे इनोवेशन और गवर्नेंस के प्रतिस्पर्धा वाले मॉडल भी बना रहे हैं। अमेरिका टेक स्पीड और बाजार प्रभुत्व पर दांव लगा रहा है। चीन एआई को देश की रणनीति में शामिल कर रहा है और इसके जरिये निगरानी की क्षमता बढ़ा रहा है। अब सर्वम एआई के लांच के साथ भारत एक अलग सोच के साथ आगे बढ़ रहा है। बहुभाषी, संप्रभु एआई जिसका मकसद प्रभाव के साथ-साथ समावेशन भी है। आईए जानते हैं कि विश्व की तीन प्रमुख शक्तियां अगल-अलग सोच के साथ भविष्य की डिजिटल व्यवस्था को कैसे आकार दे रहीं हैं?

अमेरिका में ओपेनएआई, गूगल, माइक्रोसाफ्ट और मेटा के साथ बड़ी टेक कंपनियों का दबदबा है।

शिव और पार्वती का विवाह, प्रेम और भक्ति का अनोखा संगम

दैनिक दिव्य संवाद/ वाराणसी। चार पहर मे होती है बाबा कीं शादी मंत्रो के साथ चार पहर बैठते है महादेव, द्वारपूजा जयमाल, सिंदूर दान ,फिर होती है विदाई महाशिवरात्रि के साथ तीन रात्रिया होती है विशेष इन चार रात्रियों मे भक्तों कीं मनोकामना होती है पूरी शिव कीं महाशिवरात्रि कृष्ण का मोहरात्रि होली का दरूम रात्रि, माँ दुर्गा का नवरात्रि कीं नवमी, महाशिवरात्रि की पावन निशा में जब संपूर्ण काशी हर-हर महादेव के उद्घोष से गूंज उठति है तब मानो सम्पूर्ण जगत काशी कों निहारने मे लगा होता है महाशिवरात्रि शिव ...काशी (वाराणसी) में शिव-पार्वती विवाह महाशिवरात्रि के दिन अत्यंत पारंपरिक और शास्त्रीय विधि से मनाया जाता है, जिसे शिव बारात और पारंपरिक रस्मों (जैसे हल्दी, मेहंदी, विदाई) के साथ मनाया जाता है। इसमें महादेव के अघोरी रूप से सुंदरेश्वर रूप में बदलने की कथा मुख्य है, काशी विश्वनाथ मंदिर में वैदिक मंत्रों व लोकगीतों के साथ विवाह संपन्न होता है।

काशी में विवाह पद्धति के प्रमुख पहलू- भगवान शिव और पार्वती की शादी के चार पहर है

1. पहला पहर- द्वार पूजा - इसमें भगवान शिव का स्वागत किया जाता है और द्वार पर पूजा की जाती है। इस समय भगवान शिव के वाहन नंदी की पूजा की जाती है।

2. दूसरा पहर- जयमाल - इसमें भगवान शिव और पार्वती का मिलन होता है और जयमल की रस्म की जाती है। इस समय भगवान शिव और पार्वती को एक-दूसरे के गले में माला पहनाई जाती है।

3. तीसरा पहर- सिंदूर दान - इसमें भगवान शिव पार्वती के माथे पर सिंदूर लगाते हैं, जो विवाह का प्रतीक है।

4. चौथा पहर- विदाई - इसमें पार्वती की विदाई होती है और वह अपने पिता के घर से भगवान शिव के साथ कैलाश चली जाती हैं।

बाबा विश्वनाथ की बारात निकाली जाती है, जिसमें भूत-प्रेत, अघोरी, साधु-संत और देवताओं के वेश में भक्त शामिल होते हैं।

पारंपरिक रस्में- विवाह में हल्दी, मेहंदी, मटकोड़वा (मिट्टी लाना), और मंगलगीत जैसी रस्में स्थानीय महिलाओं द्वारा निभाई जाती हैं। माता पार्वती को काशी की बेटी मानकर उनके कन्यादान की रस्म भी होती है।

शास्त्रीय विधि (अग्नि साक्षी)- विवाह की रस्में पूर्णतः वैदिक मंत्रों से की जाती हैं, जहाँ ब्रह्मा जी के स्वरूप में पुरोहित और विष्णु जी के स्वरूप में अन्य गण रस्मों को पूर्ण कराते हैं।

अनोखा श्रृंगार- महादेव को राख और श्मशान की भस्म से सजाकर विवाह स्थल पर ले जाया जाता है, जो उनके वैरागी रूप को दर्शाता है।

भक्तिपूर्ण वातावरण- काशी के मंदिरों (विशेषकर विश्वनाथ मंदिर) में इस दिन रात भर विशेष अभिषेक, श्रृंगार और कीर्तन होता है, जो शक्ति (पार्वती) और शिव के मिलन का प्रतीक है।

यह उत्सव पुरुष और स्त्री ऊर्जाओं का मिलन माना जाता है, जहाँ महादेव को पार्वती (शक्ति) के साथ परिणय सूत्र में बांधा जाता है।

विश्वनाथ मंदिर पूर्व महंत परिवार कीं सात्वि पीढ़ी के हिमांशु त्रिपाठी, गोलू महराज ने शिव पार्वती विवाह कों साझा करते हुये बताया कीं अद्भुत पल फिर आने वाला है ज़ब देवों के देव के विवाह पर सम्पूर्ण सृष्टि देखने आती है

शिव-पार्वती विवाह महाशिवरात्रि के दिन अत्यंत पारंपरिक और शास्त्रीय विधि से मनाया जाता है

13 अर्चक होते है इस विवाह कों शास्त्री विधि विधान से सम्पन्न कराते है यह एक सौभाग्य कीं बात है

बाबा के विवाह का पल अद्भभुत होता है

विवाह कीं शुरुआत चार पहर से होती है

पहला पहर मे द्वारपूजा होता है दूसरे पहर मे जयमाल सम्पन्न होता है तीसरे पहर मे सिंदूर दान जो विवाह का प्रतीक है चौथे पहर मे विदाई होती माता पार्वती कों लेकर चले जाते है।

गोलू महराज ने बताया कीं महाशिवरात्रि का दिन बड़ा फलदाइ होता है इस दिन रात्रि भर भक्तों के विवाह के साक्षी बन कर आशीर्वाद प्राप्त करते है

इन चार रात्रि मे जगने से सारी मनोकामना पूर्ण होती है महाशिवरात्रि, जन्माष्टमी, होली, नवरात्रि

महाशिवरात्रि के दिन शयन आरती नहीं होगी, जबकि चारों प्रहर की आरती विधि-विधान से संपन्न होती है आरती के साथ-साथ बाबा के भव्य झांकी दर्शन भी भक्तों को प्राप्त होंगे। यह दुर्लभ संयोग भक्तों के लिए आस्था, श्रद्धा और शिव-कृपा का अद्भुत संगम होता है

चारों प्रहर के दौरान श्रद्धालुओं के लिए झांकी दर्शन सतत् जारी रहता है

विक्रमोत्सव 2026 का शुभारंभ 15 फरवरी को उज्जैन में होगा

संभागायुक्त श्री सिंह की अध्यक्षता में विक्रमोत्सव 2026 की तैयारियों के संबंध में बैठक आयोजित हुई

उज्जैन । संभागायुक्त श्री आशीष सिंह की अध्यक्षता में विक्रमोत्सव 2026 की तैयारियों के संबंध में बैठक आयोजित हुई। बैठक में महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ, स्वराज संस्थान संचालनालय, संस्कृति विभाग एवं उज्जैन जिला प्रशासन के सहयोग से विक्रमोत्सव 2026 के आयोजन किए जाने पर चर्चा की गई। बैठक में संभागायुक्त श्री सिंह द्वारा निर्देश दिए गए कि विक्रमोत्सव 2026 का आयोजन मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की मंशा अनुरुप भव्यरूप से किया जाना है। इसके लिए सभी विभाग अपनी ओर से पूर्ण तैयारी समय से पूर्व कर ले।

बैठक में महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ के निदेशक श्रीराम तिवारी ने जानकारी दी कि विक्रमोत्सव 2026 का शुभारंभ 15 फरवरी से हो रहा है। 15 फरवरी को सुबह 10 बजे कलश यात्रा निकलेगी। वहीं सायं 7ः30 बजे पोलिटेक्निक कॉलेज परिसर में सुप्रसिद्ध संगीतकार प्रीतम की ÷शिवोऽहम÷ की प्रस्तुति होगी। विक्रमोत्सव अंतर्गत 41 से अधिक बहुआयामी गतिविधियों में 4 हजार से अधिक कलाकारों द्वारा प्रस्तुतियाँ दी जाएंगी।

कलेक्टर सभागृह में आयोजित बैठक में कलेक्टर श्री रौशन कुमार सिंह, पुलिस अधीक्षक श्री प्रदीप शर्मा, नगर निगम आयुक्त श्री अभिलाष मिश्रा, श्री नरेश शर्मा, कुलगुरु प्रो. अर्पण भार?द्वाज एवं अन्य विभागों के अधिकारी और आयोजन समिति के सदस्य उपस्थित रहे।

12 से 16 फरवरी महाकाल वन मेला का आयोजन-विक्रमोत्सव के अंतर्गत 12 से 16 फरवरी 2026 तक दशहरा मैदान पर महाकाल वन मेला का आयोजन किया जा रहा है। मेला के अंतर्गत हर्बल उत्पादों और संबंधित प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन एवं प्रस्तुति?करण, कच्चे हर्बल और संस्कृत उत्पादों की भविष्य में खरीद बिक्री के लिए समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर, देश प्रदेश के कच्चे पर संस्कृत हर्बल उत्पादों को बेचने खरीदने का अवसर, पारंपरिक हर्बल ज्ञान के क्षेत्र में नवाचारों और उद्यमिता की एक झलक, आयुर्वेदिक डॉक्टर द्वारा निशुल्क स्वास्थ्य जांच और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे है।

15 फरवरी से 19 मार्च तक पौराणिक, आध्यात्मिक, ऐतिहासिक, जनजातीय विषयों पर प्रदर्शनियों का आयोजन-विक्रमोत्सव अंतर्गत 15 फरवरी से 19 मार्च 2026 तक महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ परिसर एवं कालिदास संस्कृत अकादमी परिसर में पौराणिक, आध्यात्मिक, ऐतिहासिक, जनजातीय विषयों पर 7 विभिन्न प्रदर्शनियों का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें सम्राट विक्रमादित्य और अयोध्या, आर्ष भारत, महाभारतकालीन अस्त्र-शस्त्र, चक्रव्यूह, पताकाएँ, शंख, 84 महादेव, जनजातीय देवलोक, श्रीकृष्ण प्रभात एवं रागमाला प्रमुख है। इन प्रदर्शनियों को महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ, जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी द्वारा तैयार किया गया है। प्रदर्शनी का अवलोकन प्रतिदिन प्रातः 11 बजे से किया जा सकेगा।

15 से 19 मार्च तक विक्रम व्यापार मेले का आयोजन-विक्रमोत्सव के तहत 15 फरवरी से 19 मार्च 2026 तक इंजीनियरिंग कॉलेज परिसर में विक्रम व्यापार मेले का आयोजन किया जा रहा है। प्रतिदिन प्रातः 11 बजे से मेले में अवलोकन किया जा सकेगा। व्यापार मेले में वाहन विक्रय स्टॉल, इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों का विक्रय, बैंक फाइनेंस की सुविधा, क्षेत्रीय कला एवं शिल्प की प्रदर्शनियां, विभिन्न माध्यमों के पारंपरिक शिल्पों का मेला, हथकरघा एवं टेक्सटाइल, देशज व्यंजन के स्टॉल रहेंगे। मेले का आयोजन सुक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम, कुटीर एवं ग्रामोद्योग, परिवहन विभाग द्वारा किया जाएगा।

15 से 19 मार्च तक अनादि पर्व का आयोजन-विक्रमोत्सव के तहत 15 से 19 मार्च 2026 तक अनादि पर्व के अंतर्गत अवंती महाजनपद के श्रेष्ठतम लोक कलाकारों की प्रस्तुतियां इंजीनियरिंग कॉलेज परिसर में प्रतिदिन सांय 7ः30 बजे से दी जाएगी। अनादिपर्व में सहभागिता संयोजन संस्कृति संचालनालय की रहेगी।

16 से 25 फरवरी तक विक्रम नाट्य समारोह का आयोजन-विक्रमोत्सव के तहत 16 से 25 फरवरी 2026 तक विक्रम नाट्य समारोह का आयोजन पं. सूर्यनारायण व्यास कला संकुल, कालिदास संस्कृत अकादमी पर प्रतिदिन साय 7ः30 बजे से किया जाएगा। दस दिवसीय इस विक्रम नाट्य समारोह में राष्ट्रीय नाट्य वि?द्यालय द्वारा तैयार की गयी प्रस्तुतियां जटायुवधम्, चारुदत्तम, भरतवाक्य, जाति जीवनम्, अभिज्ञान शाकुन्तलम् और चतुर्भाणी शामिल हैं। इसके साथ ही अंधायुग, भूमि सूर्य वीरगाथा, आदि-अनंत, अभंग नाद, सौगंधिकाहरणं का भी मंचन होगा।

26 से 28 फरवरी तक इतिहास समागम-विक्रमोत्सव के तहत 26 से 28 फरवरी 2026 तक प्रतिदिन प्रातः 11 बजे से पं. सूर्यनारायण व्यास कला संकुल, कालिदास संस्कृत अकादमी पर वृहत्तर भारत में संस्कृति साहित्य और पुरातत्व विषय पर इतिहास समागम का आयोजन किया जाएगा। इतिहास समागम का संयोजन अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली द्वारा किया गया है।

26 से 28 फरवरी में होगा पुतुल समारोह-विक्रमोत्सव के तहत 26 से 28 फरवरी तक प्रतिदिन प्रातः 11 बजे से अभिरंग सभागार, कालिदास संस्कृत अकादमी में पुतुल समारोह आयोजित होगा। भारत की विभिन्न पुतुल (कठपुतली) शैलियों पर आधारित पुतुल समारोह में 6 विभिन्न शैलियों में कठपुतलियों के माध्यम से सम्राट विक्रमादित्य, भीम और बकासुर, आठवां, द आर्चर स्टूड अलोन, दुर्योधन वधम् व पद्यगाथा की प्रस्तुतियां होगी।

28 फरवरी और 01 मार्च को वैचारिक समागम का आयोजन-विक्रमोत्सव के तहत 28 फरवरी और 01 मार्च को विक्रमादित्य का न्याय वैचारिक समागम का आयोजन होगा। यह आयोजन प्रातः 11 बजे से पं. सूर्यनारायण व्यास कला संकुल, कालिदास संस्कृत अकादमी पर किया जाएगा।

28 फरवरी से 02 मार्च तक अंतराष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन-विक्रमोत्सव के तहत 28 फरवरी से 02 मार्च तक अंतराष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय सभागार पर प्रातः 11 बजे से किया जाएगा। शोध संगोष्ठी का विषय मंदिर संस्कृतिः वास्तु, व्यवस्थापन संघर्ष एवं पुनरुत्थान होगा।

01 मार्च को लोकरंजन का आयोजन-विक्रमोत्सव के तहत 01 मार्च को रात्रि? 08 बजे से बहिरंग कालिदास संस्कृत अकादमी में लोकरंजन के अंतर्गत जनजातीय भाषा एवं बोलियों का अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा।

07 मार्च को नारी शक्ति अखिल भारतीय कवयित्री सम्मेलन का आयोजन-विक्रमोत्सव के तहत 07 मार्च 2026 को रात्रि? 08 बजे से बहिरंग कालिदास संस्कृत अकादमी में अंतराष्ट्रीय महिला दिवस की पूर्व संध्या पर नारी शक्ति पर केंद्रित अखिल भारतीय कवयित्री सम्मेलन का आयोजन किय जाएगा।

10 से 12 मार्च तक अनहद का आयोजन-विक्रमोत्सव के तहत 10 से 12 मार्च तक अनहद के तहत संगीत का उद्?भव एवं विकास वैचारिक समागम का आयोजन प्रतिदिन प्रातः 11 बजे से अभिरंग सभागार, कालिदास संस्कृत अकादमी में किया जाएगा।

12 से 14 मार्च तक अंतरराष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन-विक्रमोत्सव के तहत 12 से 14 मार्च 2026 तक भारतीय ज्योतिष में वेध परंपरा-वैशिष्ट्य एवं प्रमाण पर अंतराष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन होगा। संगोष्ठी का आयोजन प्रतिदिन प्रातः 11 बजे से महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय में किया जाएगा।

13 से 17 मार्च तक शिव पुराण, लोकनृत्य और नृत्य पाटिका का आयोजन-विक्रमोत्सव के तहत 13 से 17 मार्च तक शिवपुराण के अंतर्गत भारतीय ज्ञान परंपरा के अठारह पुराणों में से एक शिव पुराण आख्यान के चित्रांकन की प्रदर्शनी, लोक नृत्य तथा नृत्य नाटिकाओं का आयोजन होगा।

13 से 17 मार्च तक अंतरराष्ट्रीय पौराणिक फिल्म महोत्सव का आयोजन-विक्रमोत्सव के तहत पौराणिक फिल्मों का अन्तर्राष्ट्रीय महोत्सव 13 से 17 मार्च 2026 तक आयोजित किया जा रहा है। फिल्म महोत्सव प्रातः 11 बजे से सांय 07 बजे तक अभिरंग सभागार, कालिदास संस्कृत अकादमी में किया जाएगा। समारोह में अंग्रेजी, फ्रेंच, हिब्रु, रसियन, स्पेनिश, अइसलेन्दीक, इटेलियन, डच, मंगोलियन, फिजियन, इन्डोनेशियन, अफरीकन, नाइजिरियन, सिंहली, ग्रीक, भाषाओं की 25 से अधिक फिल्मों का प्रदर्शन होगा।

इंदौर के 13 वर्षीय मासूम अली की हत्या पर उज्जैन में आक्रोश

गाजी मियां कमेटी ने की फांसी की मांग, राष्ट्रपति के नाम सौंपा ज्ञापन

उज्जैन। पड़ोसी शहर इंदौर में 13 वर्षीय मासूम अली कादरी की निर्मम हत्या की गूंज अब उज्जैन में भी सुनाई देने लगी है। इस दिल दहला देने वाली घटना के विरोध में और आरोपियों को कड़ी से कड़ी सजा दिलाने के लिए शहर की सैयद गाजी मियां इमली वाले बाबा उर्स कमेटी ने गुरुवार को प्रशासन के माध्यम से महामहिम राष्ट्रपति से न्याय की गुहार लगाई है।

फास्ट ट्रैक कोर्ट में सुनवाई और फांसी की मांग

कमेटी के पदाधिकारियों ने उज्जैन कलेक्ट्रेट पहुंचकर भू-अभिलेख अधिकारी माधव मोगरे को ज्ञापन सौंपा। यह ज्ञापन उज्जैन कलेक्टर के माध्यम से महामहिम राष्ट्रपति को प्रेषित किया गया है। कमेटी ने मांग की है कि इस जघन्य अपराध का मुकदमा फास्ट ट्रैक कोर्ट में चलाया जाए। मुख्य आरोपी रेहान और उसका साथ देने वाले सभी परिजनों को जल्द से जल्द फांसी की सजा दी जाए। समाज में ऐसे दरिंदों के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए, ताकि भविष्य में कोई ऐसी घिनौनी हरकत करने की हिम्मत न कर सके।

मासूम को वापस नहीं ला सकते, पर न्याय तो दिला सकते हैं

कमेटी के सचिव जावेद शेख ने अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए कहा, ÷एक मां और बाप को उनका मासूम बेटा तो हम वापस नहीं लौटा सकते, लेकिन उनके लिए न्याय की आवाज तो उठा सकते हैं। हमारी पूरी कमेटी ने एक सुर में हत्यारों के लिए फांसी से कम कुछ भी मंजूर न होने की बात कही है।÷

क्या है पूरा मामला?

इंदौर के श्रीनगर कॉलोनी निवासी 13 वर्षीय अली कादरी 30 जनवरी (शुक्रवार) की शाम कोचिंग जाते समय लापता हो गया था। बाद में एमआईजी थाना क्षेत्र स्थित श्रीदेवी अपार्टमेंट के एक फ्लैट में पलंग पेटी के अंदर उसका शव बरामद हुआ। पुलिस ने इस मामले में मुख्य आरोपी रेहान और हत्या के बाद साक्ष्य छुपाने व मदद करने वाले उसके परिजनों को गिरफ्तार किया है।

ये रहे उपस्थित

ज्ञापन सौंपने के दौरान कमेटी के सदर इमरान खान, उस्मान खान, अमीन अब्बासी, जावेद शेख, इरफान खान (लल्ला), इंतिखाब अली, मजहर अंसारी, सुल्तान खान और समीर कुरैशी सहित समाज के कई गणमान्य नागरिक मौजूद थे। सभी ने एक स्वर में मासूम अली के लिए इंसाफ की मांग की।

स्वास्थ्य विभाग व महिला एवं बाल विकास विभाग की जिला स्तरीय संयुक्त बैठक सम्पन्न

उज्जैन । लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग व महिला एवं बाल विकास विभाग की जिला स्तर पर संयुक्त बैठक का आयोजन 12 फरवरी 2026 को कार्यालय मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जिला उज्जैन में किया गया। बैठक में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. अशोक कुमार पटेल, जिला कार्यकम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग श्री बृजेश त्रिपाठी, जिला स्वास्थ्य एवं महामारी नियंत्रण अधिकारी डॉ. सुनीता परमार , जिला टीकाकरण अधिकारी डॉ. रवीन्द्र कुमार पाल, समस्त खण्ड चिकित्साधिकारी, समस्त परियोजना अधिकारी, स्वास्थ्य संस्था प्रभारी, श्री मनीष भद्रावले जिला कार्यक्रम प्रबंधक, सुश्री परविन्दर बग्गा जिला मूल्यांकन एवं अनुश्रवण अधिकारी, श्री अनस कुरेशी जिला कम्युनिटी मोबिलाईजर, समस्त बी.पी.एम., बी.सी.एम., पब्लिक हेल्थ मैनेजर सहित विभिन्न अधिकारी कर्मचारी उपस्थित थे।

बैठक में निर्देश दिए गए कि, पोषण पुनर्वास केन्द्रों में कुपोषित बच्चों को भर्ती करवाने हेतु दोनों विभाग आपस में समन्वय रख बच्चों को भर्ती करवाकर उपचार करवाए व एनीनिक बच्चों का विशेष निगरानी रख उनको पूर्ण उपचार व प्रबंधन करवाए साथ ही दोनो विभागों की रिपोर्ट में एकरूपता हो इसका विशेष ध्यान रखें। गर्भवती महिलाओं का शतप्रतिशत ए.एन.सी. पंजीयन सुनिश्चित कर गर्भवती महिलाओं की 04 ए.एन.सी. जांच भी शतप्रतिशत पूर्ण करें। दोनों विभाग का मैदानी अमला ये सुनिश्चित करें कि किसी भी गर्भवती का घर पर प्रसव सम्पादित न हो मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य को दृष्टिगत प्रसूति की संभावित दिनांक के पूर्व ही गर्भवती महिला को क्षेत्र की शासकीय संस्था में भर्ती करवाकर संस्थागत प्रसव करवाए एवं डिलेवरी अपडेशन भी शत प्रतिशत करें।

जिले में होने वाली मातृ एवं शिशु मृत्यु की रिपोर्ट यथासमय कर इसका रिव्यू कर सुधारात्क कार्यवाही सुनिश्चित करे। अनमोल पोर्टल पर दर्ज हाईरिस्क गर्भवती महिलाओं के चिन्हांकन कर उनसे निरन्तर समन्वय कर उसका पूर्ण प्रबंधन करें। मॉडरेट एनीमिया गर्भवती महिलाओं, सिवीयर एनीमिया गर्भवती महिलाओं की भी प्रविष्टी पोर्टल पर कर इनकी सतत् निगरानी कर सुरक्षित संस्थागत प्रसव सम्पादित करवाए स्वास्थ्य एवं महिला बाल विकास विभाग प्रति सप्ताह सेक्टर बैठकों का आयोजन कर निर्धारित लक्ष्यों को पूर्ण करने हेतु समीक्षा कर आवश्यकतानुसार सुधारात्मक कार्यवाही कर लक्ष्य पूर्ण करने का प्रयास करें।

एच.बी.एन.सी. की प्रगति भी शतप्रतिशत करें। आयुष्मान भारत निरामयम योजना के तहत् भी पात्र हितग्राहियों एवं धरती आभा क्षेत्र के हितग्राहियों के भी शतप्रतिशत आयुष्मान कार्ड बनाए। दस्तक अभियान के द्वितीय चरण के सफल कियान्वयन हेतु निर्धारित दिशा निर्देशानुसार अभियान दिनांक 17 फरवरी से 19 मार्च 2026 तक अभियान के अन्तर्गत शत प्रतिशत लक्ष्य पूर्ण करने हेतु अभियान का संचालन करें। स्वास्थ्य विभाग के अन्तर्गत सी.एम. हेल्पलाईन पर दर्ज शिकायतों का त्वरित निराकरण अविलम्ब करने हेतु निर्देश भी दिए गए।

शासकीय संभागीय परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण केन्द्र उज्जैन में नि:शुल्क प्रशिक्षण

उज्जैन । एसएससी, रेल्वे एवं बैंकिंग चयन मंडलों एवं अन्य शासकीय सेवा में चयन के लिए आयोजित होने वाली आगामी प्रतियोगी परीक्षा में सम्मिलित होने वाले मध्यप्रदेश के अनुसूचित जाति एवं जनजातिय वर्ग के पात्र उम्मीदवारों के लिए परीक्षा पूर्व कोचिंग लेने के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित किए जाते है। प्रशिक्षण दिनांक 4 मार्च 2026 से प्रारंभ होना प्रस्तावित है। आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 27 फरवरी 2026 रहेंगी। प्रशिक्षण के लिए आवश्यक दस्तावेजों के साथ कार्यालयीन समय में जमा किए जा सकेंगे। आवेदन शासकीय संभागीय परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण केन्द्र सांवेर रोड, दीनदयाल कॉम्प्लेक्स के पीछे गांधी नगर में किए जाएंगे।

17वीं नेशनल बॉडीबिल्डिंग चैंपियनशिप-मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने किया फोल्डर का विमोचन, शुभारंभ का आमंत्रण स्वीकारा

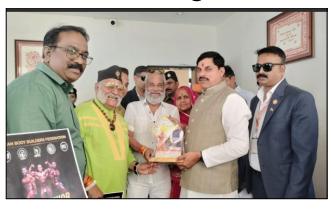

उज्जैन। इंडियन बॉडीबिल्डर फेडरेशन मुंबई के तत्वावधान और राज्य शरीर सौष्ठव संस्था मध्यप्रदेश मुख्यालय उज्जैन द्वारा आयोजित होने वाली प्रतिष्ठित 17वीं सीनियर मेंस एवं विमेंस नेशनल बॉडीबिल्डिंग चैंपियनशिप की तैयारियों ने जोर पकड़ लिया है। इस भव्य आयोजन के आधिकारिक फोल्डर का विमोचन प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा किया गया। राष्ट्रीय निर्णायक शैलेंद्र व्यास स्वामी मुस्कुराके ने बताया कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने न केवल स्पर्धा के फोल्डर का विमोचन किया, बल्कि चैंपियनशिप के शुभारंभ समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पधारने का आमंत्रण भी सहर्ष स्वीकार कर लिया है। यह आयोजन आगामी 28 से 29 मार्च को इंदौर के बास्केटबॉल कोर्ट में होने जा रहा है।

उज्जैन डाक विभाग की विशेष उपलब्धि-1 करोड़ रुपए से अधिक का डाक जीवन बीमा प्रीमियम संग्रहित

उज्जैन । प्रवर अधीक्षक डाक विभाग द्वारा दी गई जानकारी अनुसार भारतीय डाक विभाग के उज्जैन संभाग ने वित्तीय समावेशन और जनकल्याण के क्षेत्र में नया कीर्तिमान स्थापित किया है। कर्मचारियों की अथक मेहनत से डाक जीवन बीमा के तहत 1 करोड़ रुपए से अधिक की प्रीमियम राशि संग्रहित की गई, जिससे 1080 नागरिकों को एक दिन में बीमा लाभ प्रदान किया गया। इस उपलब्धि के उपलक्ष्य में उज्जैन में भव्य सम्मान समारोह आयोजित हुआ। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि पोस्टमास्टर जनरल (इंदौर क्षेत्र) सुश्री प्रीति? अग्रवाल रहीं।

समारोह की अध्यक्षता उज्जैन संभाग के प्रवर अधीक्षक श्री अजय कुमार ने की। इस दौरान 50 से अधिक उत्कृष्ट डाक कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में श्री बी.ए.के. सचान (उप अधीक्षक) श्री सुनील सोलंकी (सहायक अधीक्षक) संभाग के विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में डाक कर्मचारी उपस्थित रहे।

प्रवर अधीक्षक श्री अजय कुमार ने बताया, विभाग का उद्देश्य हर वर्ग तक वित्तीय सुरक्षा पहुंचाना है। यह राशि जनता के बढ़ते विश्वास को दर्शाती है। समारोह के अंत में सभी पुरस्कृत कर्मचारियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई।

साधकों ने योगाभ्यास के साथ जाने स्वस्थ जीवन शैली के गूढ़ रहस्य

उज्जैन। बाबा महाकाल की नगरी उज्जैन में पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के मार्गदर्शन में आयोजित दो दिवसीय भव्य योग शिविर अपार उत्साह और उमंग के साथ संपन्न हुआ। रघु प्रेम सेवा फाउंडेशन और पतंजलि योगपीठ परिवार के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस शिविर में बड़ी संख्या में योग साधकों ने भाग लेकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया।

शिविर का मुख्य आकर्षण परम पूज्य योग ऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज की परम शिष्या पूज्या साध्वी देवादीति जी का सानिध्य रहा। उन्होंने उपस्थित सभी साधकों को योगाभ्यास करवाया और स्वस्थ जीवन शैली के गूढ़ रहस्य साझा किए। अपने उद्बोधन में साध्वी जी ने कहा कि आहार, विचार और संस्कारों से ही एक समृद्ध भारत का निर्माण संभव है। उन्होंने भारतीय ऋषि संस्कृति की गहराई, ऋषियों की ज्ञान परंपरा, योग, आयुर्वेद और स्वदेशी अपनाने पर विशेष जोर दिया।

योग साधकों और गणमान्य नागरिकों का सम्मान-इस भव्य आयोजन में उज्जैन में निरंतर अपनी योग सेवाएं दे रहे योग साधकों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राजेंद्र भारती जी उपस्थित रहे। उनके साथ डॉ. सतिंदर सलूजा जी, डॉ. अंशु घोष जी, डॉ. मंजू राठी जी, ईश्वर पटेल जी, सीमा शिंदे, हेमंत व्यास, प्रमोद व्यास, राजेश अग्रवाल और उषा छजलानी सहित अनेक गणमान्य नागरिकों ने शिविर में अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई और सहभागिता की।

संगठन का विस्तार- नई जिम्मेदारी-संगठन के विस्तार और मजबूती के उद्देश्य से पतंजलि योगपीठ परिवार ने सर्वसम्मति से एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया। पूज्य साध्वी जी के नेतृत्व में श्रीमती सुषमा यादव जी को महिला पतंजलि संगठन का जिलाध्यक्ष नियुक्त किया गया।

इस विशेष अवसर पर महिला पतंजलि संगठन की राज्य प्रभारी श्रीमती सुधा त्रिवेदी, पतंजलि योगपीठ से राज्य प्रभारी संजय शर्मा, राज्य प्रभारी प्रेमाराम पुनिया, गजेंद्र मांडीवाल, श्रुति पैठने जी, श्रीकांत पैठने, सुमन गुप्ता, अंजू भाटीया और राधिका चंदनानी विशेष रूप से उपस्थित रहे। उज्जैन के सभी योग साधकों ने इस नियुक्ति का स्वागत किया और आयोजन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

विभिन्न संस्थाओं की सक्रिय भागीदारी-इस आयोजन को सफल बनाने में शहर की विभिन्न सामाजिक संस्थाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। इनमें मुख्य रूप से वृक्ष मित्र सेवा समिति, लायंस क्लब पैशन, गायत्री परिवार, सेवा भारती तथा अन्य संस्थाओं के सदस्यों और बड़ी संख्या में योग साधकों ने भाग लिया। रघु प्रेम सेवा फाउंडेशन एवं पतंजलि योगपीठ परिवार के साझा प्रयासों से यह भव्य आयोजन सफलता के साथ पूर्ण हुआ।

महाशिवरात्रि पर्व के लिए कलेक्टर श्री सिंह ने अधिकारियों की ड्यूटी लगाई

उज्जैन । श्री महाकालेश्वर मंदिर में महाशिवरात्रि का पर्व 15 फरवरी को मनाया जाएगा। महाशिवरात्रि पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु श्री महाकालेश्वर मंदिर में दर्शन के लिए पहुंचेगे। श्रद्धालुओं की सुविधा और व्यवस्थाओं के लिए कलेक्टर श्री रौशन कुमार सिंह ने अधिकारियों की ड्यूटी लगाई है।

कलेक्टर श्री रौशन कुमार सिंह द्वारा जारी आदेश अनुसार अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री आलोक शर्मा को श्री महाकालेश्वर मंदिर, पार्किंग स्थल, भीड़ प्रबंधन व यातायात की संपूर्ण व्यवस्था, आयुक्त नगर निगम अभिलाष मिश्रा को श्री महाकालेश्वर मंदिर के बाहरी क्षेत्र में साफ-सफाई व्यवस्था, पेयजल व्यवस्था, अतिक्रमण हटाने, फायरब्रिगेड की व्यवस्था, उज्जैन विकास प्राधिकरण सीईओ श्री संदीप सोनी को अस्थाई जूता स्टैंड संचालन व्यवस्था, वन मंडल अधिकारी श्री अनुराग तिवारी को श्री महाकालेश्वर मंदिर व बाह्य परिक्षेत्र, पार्किंग क्षेत्र में बंदरों की रोकथाम, मधुमक्खी के छत्ते हटाने की कार्यवाही करने, क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी श्री संतोष मालवीय को परिवहन व्यवस्था, डिविजनल कमाण्डेन्ट होमगार्ड श्री आर.के.पाठक को रामघाट ,नृसिंह घाट, पैदल पुल पर पर्याप्त संख्या में तैराकों।

लाइफ जेकेट, मोटर बोट की व्यवस्था के साथ मंदिर परिक्षेत्र में नगर सैनिकों की व्यवस्था करने, एसडीएम श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग, एसडीएम कोठी महल श्री पवन बारिया, एसडीएम श्रीमती कृतिका भीमावद को शांति एवं कानून व्यवस्था की संपूर्ण जिम्मेदारी व समस्त विभागों से आवश्यक व्यवस्था के लिए समन्वय करने, एसडीएम घट्टिया श्री राजाराम करजरे को दर्शन व्यवस्था का समन्वय करने, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. अशोक कुमार पटेल को श्री महाकालेश्वर मंदिर के प्राथमिक चिकित्सा केंद्र में पर्याप्त चिकित्सा व्यवस्था, पेरामेडिकल स्टॉफ, औषधि एवं आपातकालीन तैयारियों की व्यवस्था करने के लिए ड्यूटी निर्धारित की है।

महाशिवरात्रि पर्व 15 फरवरी को मनेगा

शिवरात्रि 44 घंटे खुले रहेंगे महाकालेश्वर मंदिर के पट

उज्जैन। महाशिवरात्रि पर्व 15 फरवरी को मनेगा। इसके एक दिन पहले 14 फरवरी की दरिमयानी रात 2.30 बजे खोले जाएंगे। इसके बाद से भक्तों को लगातार 44 घंटे भगवान महाकाल के दर्शन होंगे। इस दौरान गर्भगृह में भगवान के अभिषेक-पूजन का क्रम सतत जारी रहेगा। 16 फरवरी को शयन आरती के बाद रात 11 बजे मंदिर के पट पुनः बंद होंगे।

महाकालेश्वर मंदिर के पुजारी आशीष गुरु ने बताया कि 14 फरवरी शनिवार रात 2.30 बजे मंदिर के पट खुलने के बाद भस्म आरती होगी। रविवार सुबह 7.30 बजे बालभोग (दद्योदक) तथा सुबह 10.30 बजे भोग आरती होगी। दोपहर 12 बजे तहसील की ओर से शासकीय पूजन होगा। शाम 4 बजे होलकर व सिंधिया स्टेट की ओर से पूजा की जाएगी। शाम 7.30 बजे संध्या आरती में भगवान को गर्म मीठे दूध का भोग लगाया जाएगा। शाम सात बजे से कोटितीर्थ कुंड के समीप स्थित भगवान श्री कोटेश्वर महादेव मंदिर में शिवरात्रि की महापूजा शुरू होगी। पुजारी कोटेश्वर महादेव का अभिषेक-पूजन कर सप्त धान अर्पित करेंगे।

उसके बाद पुष्प मुकुट सजाकर आरती की जाएगी। इसके बाद रात 11 बजे से गर्भगृह में महानिशा काल में महाकाल की महापूजा शुरू होगी, जो अगले दिन नौ मार्च को सुबह छह बजे तक चलेगी।

इस दौरान भगवान महाकाल पंचामृत, फलों के रस, गुलाब जल, भांग आदि से अभिषेक-पूजन किया जाएगा। 16 फरवरी को भगवान को सप्तधान अर्पित उनके शीश सवामन फल व फूलों से बना पुष्प मुकुट सजाया जाएगा। सोने-चांदी के आभूषणों से भगवान का शृंगार होगा। भगवान पर चांदी का सिक्का व बिल्व पत्र न्योछावर किया जाएगा। भगवान को फलों का भोग लगाकर आरती की जाएगी। सेहरा दर्शन के उपरांत साल में एक बार दिन में दोपहर 12 बजे होने वाली भस्म आरती होगी। भस्म आरती के बाद भोग आरती होगी और शिवनवरात्र का पारणा होगा। रात 10.30 बजे शयन आरती के बाद रात 11 बजे मंदिर के पट बंद होंगे। इसके साथ ही महाशिवरात्रि पर्व संपन्न होगा।

महाशिवरात्रि पर इस बार कई शुभ संयोग

महाशिवरात्रि इस बार बहुत ही विशेष मानी जा रही है। दरअसल इस दिन शिव योग, सर्वार्थसिद्धि योग, प्रीति योग, आयुष्मान योग, सौभाग्य योग, शोभन योग, साध्य योग, शुक्ल योग, ध्रुव योग, व्यतिपात और वरियान योग का भी प्रभाव बना रहेगा। वहीं पूरे दिन सर्वार्थसिद्धि योग रहेगा। पर्व के दौरान ग्रहराज सूर्य और भाग्य ग्रह शुक्र कुंभ राशि में विराजमान रहेंगे। दोनों ग्रहों की युति इस राशि में होने से शुक्रादित्य योग बन रहा है। ऐसे में महाशिवरात्रि पर शुक्रादित्य का दुर्लभ संयोग भी इस बार रहेगा। इन सभी योगों में मंदिरों में अनुष्ठान आयोजित किए जाएंगे।

रोज महाकाल को चंदन और मां पार्वती को लगाई जा रही हल्दी

उज्जैन। महाकालेश्वर मंदिर में पिछले शुक्रवार से महाशिवरात्रि पर्व की शुरुआत हो चुकी है और बुधवार को इसका छटा दिन था। शुरुआती 6 दिनों में ही दुल्हा बने भगवान महाकाल के साढ़े 8 लाख से अधिक लोग दर्शन कर चुके हैं। इस दौरान प्रतिदिन दूल्हा बने भगवान महाकाल को चंदन और केसर तथा माता पार्वती को हल्दी लगाई जा रही है।

महाकाल में शिव नवरात्रि पर्व की शुरुआत 6 फरवरी से हो गई है और यह 15 फरवरी शिवरात्रि तक चलेगा। महाकाल मंदिर की पूजन परंपरा में फाल्गुन कृष्ण पंचमी से चतुर्दशी तक शिव विवाह का उत्सव मनाया जाएगा। उत्सव की इस श्रृंखला में भगवान की विशेष पूजा-अर्चना की जा रही है। महाशिवरात्रि 15 फरवरी को मनेगी और 14 फरवरी की रात 2 बजकर 30 मीनट पर मंदिर के पट खोल दिए जाएंगे जो सतत 44 घंटे 16 फरवरी की रात 2 बजे तक खुल रहेंगे। सहायक प्रशासनिक अधिकारी मूलचंद जूनवाल ने बताया कि शिवनवरात्रि के पहले दिन 1 लाख से अधिक लोगों ने महाकाल के दर्शन किए थे। जबकि दूसरे दिन शनिवार को यह आंकड़ा 1.5 लाख तक पहुंच गया था। तीसरे दिन रविवार को लगभग 2 लाख लोग दर्शन करने पहुंचे थे।

चौथे दिन सोमवार को भी करीब इतने ही लोगों ने भगवान के दर्शन किए थे। जबकि पांचवे दिन मंगलवार और बुधवार को भी को 1-1 लाख से अधिक भक्त यहां आए थे। पर्व के शुरुआती 6 दिनों में 8 लाख 50 हजार से अधिक लोग महाकाल दर्शन कर चुके हैं।

ऐसे में महाशिवरात्रि तक यह आंकड़ा 12 लाख से अधिक पहुंचने का अनुमान है। इधर कल पर्व के छटे दिन भगवान का होलकर स्वरूप में श्रृंगार किया गया।

गुरुवार सुबह से भी मंदिर में भारी भीड़ उमड़ रही थी। शाम को भगवान महाकाल का मनमहेश स्वरूप में श्रृंगार हुआ।

44 घंटे में कब-कब आरती पूजा होगी

- शनिवार - रविवार की मध्य रात्रि 2.30 बजे मंदिर के पट खुलने के बाद भस्म आरती होगी।
- रविवार सुबह 7.30 से 8.15 बजे तक दद्योदक (बालभोग) आरती होगी।
- सुबह 10.30 से 11.15 बजे तक भोग आरती होगी।
- दोपहर 12 बजे तहसील की ओर से भगवान महाकाल की शासकीय पूजा होगी।
- शाम 4 बजे से होलकर व सिंधिया राजवंश की ओर से पूजा अर्चना की जाएगी।
- शाम 7 बजे से रात 10 बजे तक कोटेश्वर महादेव का पूजन व सेहरा श्रृंगार होगा।
- रात 11 बजे से गर्भगृह में महाकाल की महापूजा होगी, जो सारी रात चलेगी।
- सोमवार सुबह 6 बजे से 10 बजे तक सेहरा दर्शन होंगे।
- दोपहर 12 बजे साल में एक बार दिन में भस्म आरती होगी।
- दोपहर 2 बजे बालभोग व भोग आरती होगी।
- रात 11 बजे शयन आरती के बाद पट बंद होंगे।

घाट निर्माण के दौरान मिट्टी धंसने से मजदूर की मौत

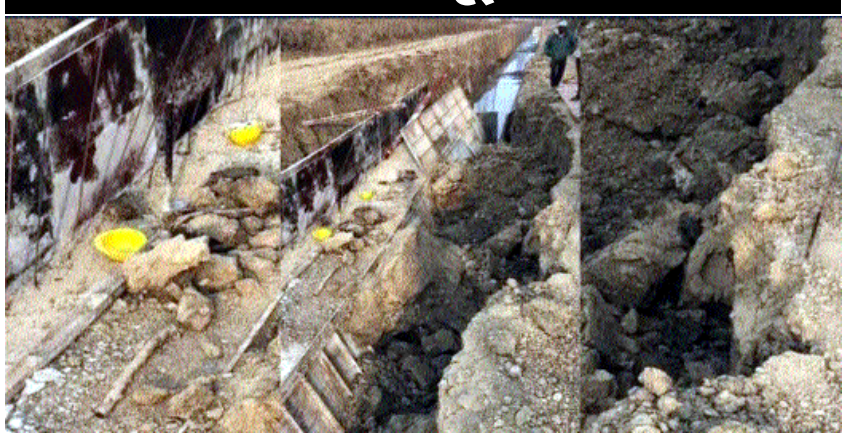

उज्जैन। सिंहस्थ 2028 की तैयारियों के नाम पर चल रहे निर्माण कार्य एक बार फिर जानलेवा साबित हुए। नीलगंगा थाना क्षेत्र के जीवनखेड़ी में शिप्रा नदी किनारे बन रहे घाट पर बुधवार सुबह मिट्टी धंसने से एक मजदूर की मौत हो गई। हादसे ने निर्माण स्थलों की सुरक्षा व्यवस्थाओं पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

मृतक की पहचान बड़वानी जिले के ग्राम डूंगरगांव (थाना सिलावद) निवासी 35 वर्षीय सुरेश पिता नरसिंह के रूप में हुई है। वह जीवनखेड़ी में घाट निर्माण कार्य में लगा हुआ था।

12 दिन में तीसरा हादसा, सुरक्षा इंतजामों पर उठे सवाल -बड़वानी का 35 वर्षीय मजदूर मलबे में दबा, अस्पताल में डॉक्टरों ने किया मृत घोषित

स्लोप की दीवार भरभराकर गिरी

बताया जा रहा है कि बुधवार सुबह करीब 11 बजे होटल शांति पैलेस के पीछे स्थित शिप्रा नदी किनारे बनाए गए मिट्टी के स्लोप पर काम कर रहा था। तभी अचानक स्लोप की मिट्टी की दीवार भरभराकर गिर गई और वह पूरी तरह मलबे में दब गया।

साथी मजदूरों ने तुरंत मिट्टी हटाने का प्रयास किया। करीब 15 से 20 मिनट की मशक्कत के बाद उसे बाहर निकाला गया, लेकिन तब तक वह बेहोश हो चुका था। उसे तत्काल चरक अस्पताल पहुंचाया गया, जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद मृत घोषित कर दिया।

गांव के 25-30 मजदूर साथ आए थे

सुरेश अपने भाई रोहित सहित गांव के करीब 25 से 30 लोगों के साथ उज्जैन काम करने आया था। परिवार में पत्नी और पांच छोटे बच्चे हैं। हादसे की सूचना मिलते ही गुरुवार सुबह परिजन उज्जैन पहुंचे। पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया। गांव में शोक का माहौल है।

12 दिन में 3 मौतें, फिर भी नहीं सबक

सिंहस्थ और उससे जुड़े निर्माण कार्यों में लगातार हादसे हो रहे हैं। इसमें 31 जनवरी को इंदौर-उज्जैन सिक्स लेन ब्रिज पर सरियों का जाल गिरने से झारखंड के मजदूर की मौत हो गई थी। वहीं चार दिन पहले बडनगर मार्ग (मुल्लापुरा) पर वाइब्रेट मशीन चलाते समय पश्चिम बंगाल के मजदूर की जान गई थी। इसके बाद

अब जीवनखेड़ी घाट पर मिट्टी धंसने से बड़वानी के मजदूर की मौत हो गई है।

लगातार हो रही इन घटनाओं के बावजूद निर्माण स्थलों पर सुरक्षा के ठोस इंतजाम नजर नहीं आ रहे। न तो पर्याप्त सुरक्षा उपकरण, न ही मजबूत सपोर्ट सिस्टम। मजदूर असुरक्षित माहौल में काम करने को मजबूर हैं।

सवालों के घेरे में ठेकेदार और जिम्मेदार विभाग

स्थानीय लोगों का कहना है कि घाट निर्माण स्थल पर मिट्टी के ढलान को मजबूत करने के पर्याप्त इंतजाम नहीं थे। यदि सुरक्षा मानकों का पालन किया जाता, तो शायद एक परिवार उजड़ने से बच सकता था। अब देखना होगा कि प्रशासन इस हादसे से सबक लेकर जिम्मेदारों पर क्या कार्रवाई करता है।

सिंहस्थ में बिछड़े बच्चों के लिए अस्थाई आश्रय स्थल बनेगा

स्टेशन पर चाइल्ड लाइन सेवा के लिए अमला भी बढ़ाएगा महिला एवं बाल विकास विभाग

उज्जैन। सिंहस्थ 2028 के दौरान करोड़ों श्रद्धालुओं के उज्जैन पहुंचने की संभावना है और इस दौरान कई बच्चे परिजनों से बिछडने की संभावना रहेगी। इस आशंका को ध्यान में रखते हुए महिला एवं बाल विकास विभाग ने उज्जैन रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर-1 पर चाइल्ड लाइन सेवा की शुरुआत की है और पर्व के दौरान नजदीक ही बच्चों के लिए अस्थाई आश्रय स्थल भी बनाया जाएगा।

महिला एवं बाल विकास विभाग के जिला कार्यक्रम अधिकारी बृजेश त्रिपाठी ने बताया कि यह सेवा प्लेटफार्म नंबर-1 पर स्थित जीआरपी थाना परिसर के समीप संचालित की जा रही है। सिंहस्थ के दौरान यदि कोई बच्चा अपने माता-पिता से बिछड़ जाता है अथवा स्टेशन परिसर में लावारिश अवस्था में पाया जाता है, तो उसे तुरंत चाइल्ड लाइन कक्ष में लाया जाएगा। उन्होंने बताया कि सिंहस्थ अवधि के लिए यहां अस्थाई आश्रय स्थल भी तैयार किया जाएगा, जहां बच्चों को सुरक्षित वातावरण में रखा जाएगा। माता-पिता के मिलने तक बच्चों के लिए खान-पान, रहने और देखरेख की समुचित व्यवस्था रहेगी। लगातार तलाश के बावजूद यदि किसी बच्चे के परिजनों का पता नहीं चलता है, तो नियमानुसार उसे बाल गृह भेजा जाएगा। स्टेशन पर शुरू की गई इस चाइल्ड लाइन सेवा को प्रभावी बनाने के लिए विभाग ने 24 घंटे स्टाफ तैनात किया है। वर्तमान में दो-दो कर्मचारियों की 8-8 घंटे की तीन शिफ्टों में कुल 6 कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है। सिंहस्थ के दौरान यात्रियों की संख्या बढने पर अतिरिक्त अमला भी तैनात किया जाएगा।

6 महीने में 12 हजार से अधिक लोगों को कराए तीर्थ दर्शन

19 हजार से अधिक लोगों को दर्शन कराने का है टारगेट

उज्जैन। मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना उज्जैन संभाग के धर्मस्व विभाग के माध्यम से संचालित की जा रही है। विभाग द्वारा पिछले 6 महीने में उज्जैन सहित प्रदेश के 44 जिलों के 12 हजार से अधिक लोगों को ट्रेनों के माध्यम से तीर्थ दर्शन कराए जा चुके हैं। वहीं इस साल मार्च अंत तक यह आंकड़ा 19 हजार से अधिक पहुंच जाएगा।

धर्मस्व विभाग से मिली जानकारी के मुताबिक मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन यात्रा योजना के तहत आईआरसीटीसी की भारत गौरव ट्रेनों के माध्यम से प्रदेश के 44 जिलों के वरिष्ठ नागरिकों को देश के प्रमुख तीर्थ स्थलों के दर्शन कराए जा रहे हैं।

इस योजना के अंतर्गत 25 अगस्त 2025 से 30 मार्च 2026 तक कुल 24 ट्रेनें संचालित की जानी हैं, जिनसे 19,200 वरिष्ठ नागरिक लाभान्वित होंगे। अब तक 25 अगस्त 2025 से 31 जनवरी 2026 के बीच 16 ट्रेनों के माध्यम से 12,800 तीर्थ यात्रियों को यात्रा कराई जा चुकी है। यात्रियों को यात्रा, भोजन और ठहरने की निःशुल्क सुविधा प्रदान की गई।

पंचमपुरा मार्ग के लोग अपने हाथों से उजाड़ने लगे आशियाना

उज्जैन। टैगोर चौराहा से पंचमपुरा (पुष्पा मिशन से दो तालाब) तक प्रस्तावित सड़क चौड़ीकरण योजना ने क्षेत्र में हलचल मचा दी है। नगर निगम द्वारा नोटिस जारी करते ही रहवासी और व्यापारी असमंजस में हैं। कई लोगों ने तो नुकसान से बचने की कोशिश में अपने मकानों और दुकानों का हिस्सा खुद ही तोड़ना शुरू कर दिया है।

नगर निगम ने इस संकरे सिंगल लेन मार्ग को भीड़ प्रबंधन के मद्देनजर 60 फीट चौड़ा करने की योजना बनाई है। इसके तहत सड़क किनारे स्थित निर्माणों की मार्किंग कर संबंधित लोगों को सात दिन के भीतर अतिक्रमण या प्रभावित हिस्से को स्वयं हटाने का नोटिस दिया गया है।

एक-दो फीट के लिए पूरा ढांचा खतरे में-क्षेत्र में कई ऐसे मकान और दुकानें हैं, जिनका केवल एक से दो फीट हिस्सा-जैसे ओटला या गैलरी-सड़क की जद में आ रहा है। लोगों का कहना है कि इतने छोटे हिस्से के कारण पूरा पक्का निर्माण तोड़ना पड़ेगा, जिससे लाखों रुपये का नुकसान होगा।

पंचमपुरा चौराहा क्षेत्र में सबसे ज्यादा प्रभाव देखा जा रहा है। यहां करीब 50 से अधिक मकान और दुकानें नोटिस की जद में आई हैं। व्यापारियों का कहना है कि यदि निर्माण तोड़ा गया तो उनका कारोबार भी प्रभावित होगा।

डिवाइडर की चौड़ाई कम करने का सुझाव-स्थानीय रहवासियों और व्यापारियों ने निगम प्रशासन को एक सुझाव भी दिया है। उनका कहना है कि प्रस्तावित योजना में सड़क के बीच तीन से साढ़े तीन फीट चौड़ा डिवाइडर बनाया जाना है। यदि इस डिवाइडर की चौड़ाई कुछ कम कर दी जाए तो सड़क की कुल चौड़ाई पर ज्यादा फर्क नहीं पड़ेगा और किनारे के मकानों को राहत मिल सकती है।

लोगों की मांग है कि अधिकारी और जनप्रतिनिधि मौके पर पहुंचकर वास्तविक स्थिति का निरीक्षण करें और तकनीकी समाधान निकालें, ताकि सड़क चौड़ीकरण भी हो जाए और आम लोगों का आर्थिक नुकसान भी कम से कम हो।

फिलहाल क्षेत्र में असमंजस और चिंता का माहौल बना हुआ है। लोग प्रशासन के अगले कदम का इंतजार कर रहे हैं।

भस्मारती की कतार से लापता 19 वर्षीय युवती 72 घंटे बाद प्रेमी से शादी कर लौटी

इंस्टाग्राम पर हुई थी दोस्ती, मंदिर में रचाया विवाह, बालिग होने का हवाला देकर पिता के साथ जाने से किया इनकार

उज्जैन। महाकाल मंदिर में भस्मारती की कतार से लापता हुई दिल्ली की 19 वर्षीय युवती 72 घंटे बाद खुद थाने पहुंच गई। युवती ने पुलिस को बताया कि उसने अपनी मर्जी से उज्जैन निवासी युवक से शादी कर ली है और अब वह उसी के साथ रहना चाहती है।

जानकारी के अनुसार दिल्ली के कंझावला क्षेत्र स्थित पंचवटी आश्रम के संचालक महंत पीर सूर्यनाथ अपने परिवार के साथ भगवान महाकाल के दर्शन के लिए उज्जैन आए थे। 8 फरवरी की तड़के पूरा परिवार भस्मारती में शामिल होने के लिए कतार में खड़ा था। इसी दौरान उनकी 19 वर्षीय बेटी अचानक गायब हो गई। काफी तलाश के बाद भी उसका कोई पता नहीं चला तो महाकाल थाने में गुमशुदगी दर्ज कराई गई। मामला संवेदनशील होने के कारण पुलिस ने तत्काल जांच शुरू की। महंत पीर सूर्यनाथ ने एडीजी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से भी मुलाकात कर शिकायत की थी। उन्होंने आशंका जताई थी कि दिल्ली का ही एक युवक उनकी बेटी को बहला-फुसलाकर ले गया है। मामला मुख्यमंत्री के संज्ञान में आने के बाद पुलिस ने शहरभर के सीसीटीवी फुटेज खंगाले और सर्च ऑपरेशन तेज कर दिया।

इंस्टाग्राम पर शुरू हुई थी बातचीत...

बुधवार रात करीब 8 बजे युवती अचानक महाकाल थाने पहुंची। उसने पुलिस को बताया कि उसकी पहचान उज्जैन के एक युवक से इंस्टाग्राम के माध्यम से हुई थी। दोनों के बीच लंबे समय से बातचीत चल रही थी और यह दोस्ती प्रेम संबंध में बदल गई। युवती के अनुसार बुधवार दोपहर दोनों ने शहर के एक मंदिर में विधि-विधान से विवाह कर लिया।

पिता के साथ जाने से किया इनकार

थाने में युवक और युवती के परिजनों को बुलाकर आमना-सामना कराया गया। बेटी को सामने देखकर माता-पिता भावुक हो गए और उसे अपने साथ दिल्ली ले जाने की जिद करने लगे। हालांकि युवती अपने फैसले पर अडिग रही। उसने साफ कहा कि वह बालिग है और अपनी इच्छा से शादी की है। वह अब अपने पति के साथ ही रहना चाहती है। पुलिस ने युवती के बालिग होने की पुष्टि के बाद आवश्यक कानूनी प्रक्रिया पूरी की। मामले में फिलहाल किसी तरह की आपराधिक साजिश सामने नहीं आई है। घटना ने सोशल मीडिया के माध्यम से बढ़ते रिश्तों और युवाओं के फैसलों को लेकर एक बार फिर चर्चा छेड़ दी है।

शादी-ब्याह की बसों पर बढ़ा परमिट शुल्क... अब महंगा होगा सफर

अस्थायी परमिट भी महंगा, 100 किमी तक 200 रुपये प्रति सीट, ट्रक खरीद पर बदला टैक्स सिस्टम, मालभाड़ा बढ़ने के आसार

उज्जैन। शादी-विवाह, बारात और धार्मिक आयोजनों में चलने वाली बसों को अब पहले से ज्यादा परमिट शुल्क देना होगा। परिवहन विभाग ने विशेष अवसरों पर चलने वाली बसों के शुल्क में बढ़ोतरी कर दी है। नई दरें तत्काल प्रभाव से लागू कर दी गई हैं।

अब इन बसों के लिए परमिट शुल्क 12 रुपये प्रतिदिन प्रति सीट से बढ़ाकर 18 रुपये प्रतिदिन प्रति सीट कर दिया गया है। यानी 50 सीट वाली बस पर पहले जहां 600 रुपये प्रतिदिन शुल्क लगता था, अब 900 रुपये देने होंगे।

अस्थायी परमिट भी महंगा....

परिवहन विभाग ने टेंपरेरी (अस्थायी) परमिट की दरों में भी बढ़ोतरी की है। नई व्यवस्था के अनुसार 100 किलोमीटर तक 200 रुपये प्रति सीट शुल्क लिया जाएगा। इसके बाद हर अतिरिक्त 10 किलोमीटर पर 12 रुपये प्रति सीट देना होगा। पहले यह दर 10 रुपये प्रति 10 किलोमीटर प्रति सीट थी।

अधिकारियों का कहना है कि लंबी दूरी के रूट पर चलने वाली बसों की निगरानी और राजस्व संतुलन के लिए यह बदलाव जरूरी था।

उपनगरीय बसों को राहत....

जहां विशेष बसों पर शुल्क बढ़ाया गया है, वहीं उपनगरीय बसों को राहत दी गई है। पहले इन्हें 150 रुपये प्रतिमाह प्रति सीट शुल्क देना पड़ता था। अब यह घटाकर 150 रुपये प्रति तिमाही प्रति सीट कर दिया गया है। इससे नियमित संचालन करने वाले बस संचालकों को फायदा होगा।

ट्रक टैक्स में भी बदलाव...

परिवहन विभाग ने ट्रकों के टैक्स सिस्टम में भी बदलाव किया है। पहले ट्रक की चेसिस और बॉडी पर अलग-अलग टैक्स लिया जाता था। अब यदि कोई रेडी ट्रक खरीदता है तो उसे मूल कीमत का 5 प्रतिशत टैक्स देना होगा। वहीं केवल चेसिस खरीदने पर 6 प्रतिशत टैक्स लगेगा। बॉडी पर अलग से टैक्स नहीं लिया जाएगा।

किराए और मालभाड़े पर असर संभव...

बस और ट्रक ऑपरेटरों का कहना है कि बढ़ी हुई दरों का सीधा असर किराये और मालभाड़े पर पड़ सकता है। हालांकि अंतिम फैसला बाजार की स्थिति और मांग पर निर्भर करेगा।

परिवहन विभाग का कहना है कि यह कदम व्यवस्था को सुव्यवस्थित करने और राजस्व संतुलन के लिए उठाया गया है। आने वाले दिनों में इसका असर शादी-ब्याह की बस बुकिंग और माल परिवहन दरों पर देखने को मिल सकता है।

संपादकीय

मीडिया और सिनेमा का सांस्कृतिक माध्यम

अभिव्यक्ति के हर माध्यम की अपनी चरित्रगत विशेषता होती है। साहित्य में लेखक अदृश्य बिंबों का सृजन करता है, जबकि सिनेमा पूर्णत दृश्य माध्यम है। इसलिए साहित्य का सिनेमा में रूपांतरण सीधे-सीधे अदृश्य का दृश्यों में रूपांतरण होता है। वह भी कला या मूर्तिकला की तरह एक स्थिर चाक्षुष बिंब भर में नहीं, बल्कि पूर्णत जीवंत और प्रत्यक्ष नजर आते जीवन के घटनाक्रम में। जाहिर है कि यह रूपांतरण अतिरिक्त संवेदनशीलता और अपने माध्यम में गहन निपुणता की मांग करता है, और इस हद तक सृजनशीलता की, कि जैसे फिल्म का निर्देशक उसे अपनी ही मौलिक कृति की तरह रचे।

एक व्यक्ति जब पाठक के रूप मे साहित्य पढ़ता है, तो वह अनायास स्वयं उस सृजन प्रक्रिया से संबद्ध हो जाता है। लेखक शब्दों के माध्यम से उसके सामने जो चरित्र प्रस्तुत करता है, उसे वह अपनी तरह से, अपनी कल्पना में सृजित करता है। उसके सामने जो घटनाएं लेखक प्रस्तुत करता है, उन्हें वह स्वयं अपनी कल्पना में आकार देता, और उन्हें घटते हुए देखता है। इस तरह सृजन की एक प्रक्रिया, जो लेखक द्वारा शुरू की जाती है, वह व्यक्तिगत रूप में ही सही, पाठक की कल्पना में साकार होकर पूर्ण होती है। वही व्यक्ति जब फिल्म देखता है, तो उसकी सृजन प्रक्रिया से संबद्ध नहीं हो पाता। इसलिए कि उसके चरित्र अपने पूरे रूप और साज-सज्जा में उसके सामने प्रस्तुत किए जाते हैं। संपूर्ण घटनाक्रम बना कर उसकी आंखों के सामने चलती-फिरती-बोलती वास्तविक जिंदगी की तरह दिखाया जाता है। बेशक वह फिल्म निर्देशक की कल्पना पर आधारित होता है। लेकिन उन्हें सृजित करने में दर्शक की कोई हिस्सेदारी नहीं होती। उसे महज देखना और देख कर पसंद या नापसंद करना होता है। पुस्तक पढ़ कर उसने अपनी कल्पना में जो बिंब सृजित किए होंगे, अगर सिनेमा के बिंब उनके अनुरूप या बेहतर हुए, तब तो वह उसे पसंद कर पाता है अन्यथा नहीं। लेकिन इससे इतर एक बड़ा दर्शक वर्ग वह होता है, जिसने साहित्य में उसे नहीं पढ़ा होता है। वह सीधे उस कहानी का परदे पर ही साक्षात्कार करता है। उसकी स्वीकृति सीधे इस पर निर्भर करती है कि निर्देशक उस साहित्य के कथानक, संवेदना और भावों को कितनी सफलतापूर्वक फिल्म में उतार पाया है। अगर बाहरी दबावों के चलते उसने अनावश्यक समझौते कर लिए हों, तो जाहिर है कि फिल्म अपेक्षित प्रभाव नहीं छोड़ पाती।

साहित्य में सहूलियत यह है कि लेखक पृष्ठ-दर-पृष्ठ चरित्रों के मनोभावों में गहरे उतरता चला जा सकता है, जैसे निर्मल वर्मा के गद्य में होता है। जबकि सिनेमा को अपने पात्रों के मनोभावों को प्रकट करने के लिए उसके चेहरे पर नजर आते भाव ही पकड़ने होते हैं। वह सिर्फ बाहरी बिंब पकड़ सकता है। उसके मन के भीतर नहीं उतर सकता। लेकिन उसके पास चलते-फिरते चाक्षुष बिंब हैं, आवाज है, लाईटों के प्रभाव हैं, और अब तो आधुनिकतम तकनीक भी है, जो दृश्यों को शब्दों की बनिस्बत अधिक सशक्त ढंग से प्रस्तुत कर सकती है। सामान्यतया जिस दृश्य या भाव को प्रस्तुत करने के लिए लेखक को विस्तार में जाना पड़ता है, उसे कैमरा महज एक क्षण में अधिक वास्तविक रूप में प्रस्तुत करने की क्षमता रखता है। साहित्य के पाठक के लिए कोई समय सीमा नहीं होती। वह एक ही पुस्तक को कई दिनों तक पढ़ता चला जा सकता है, बल्कि अनेक बार पढ़ सकता है। एक तरह से वह कृति उसकी संवेदना का हिस्सा हो जाती है। जबकि सिनेमा के सामने उसी कृति को महज ढाई घंटे में प्रस्तुत करने की सीमा होती है। ऐसा करने के लिए उसे बहुत से विस्तार और अंशों को भी उसमें से निकाल देना होता है। साथ ही चुनौती यह भी होती है कि ये तमाम परिवर्तन करते हुए साहित्यिक कृति की मूल कथावस्तु, मूल भावना और मूल संवेदना के साथ कोई छेड़छाड़ न हो। अगर यह जरूरी संवेदनशीलता के साथ नहीं किया गया, तो फिल्म न तो अपेक्षित प्रभाव छोड़ पाती है, न साहित्यिक कृति के साथ न्याय कर पाती है। बावजूद ऐसी अनेक कठिनाइयों और सीमाओं के, साहित्य का फिल्मों मे रूपांतरण होता है। अंग्रेजी में बड़े पैमाने पर होता है। वहां तो जैसे परंपरा-सी है कि क्लासिक कृतियों पर आधारित क्लासिक फिल्मों का निर्माण हो जाता है, और वह भी वैसी ही भव्यता, समझ और गुणवत्ता के साथ, जैसी रूपांतरण से अपेक्षित होती है। वे स्वयं प्रस्तुतीकरण और कला की उन ऊंचाइयों को छूती हैं, जैसी स्वयं साहित्यिक कृति। ऑस्कर अवार्ड प्राप्त फिल्मों में बड़ी संख्या साहित्यिक कृतियों से रूपांतरित फिल्मों की है।

फिर हिंदी में कहां बाधा आती है? होता है रूपांतरण, लेकिन बहुत कम होता है उसका अनुपात। शरतचंद्र, रवींद्रनाथ टैगोर, प्रेमचंद या अमृता प्रीतम आदि पर अवश्य कुछ अच्छी फिल्में बनी हैं। लेकिन फिल्मों को बेहतरीन कथानकों की जरूरत होती है, और हिंदी साहित्य में ऐसे कथानकों का भंडार उपलब्ध होता है, जो फिल्मों से अछूता रह जाता है। समांतर फिल्मों के दौर में अवश्य आशा बंधी थी कि सामाजिक समस्याओं से जूझती गंभीर कलात्मक फिल्मों के युग का आगाज होगा, और वे तत्संबंधी साहित्यिक कृतियों को आधार बनाएंगी। कुछ ऐसी बेहतरीन फिल्में आईं भी। लेकिन वह दौर दूर तक नहीं जा सका। हिंदी में फिल्मों को महज एक मनोरंजन का साधन मान लेने की जो अवधारणा बनी हुई है, वह गंभीर साहित्यिक कृतियों के फिल्मांकन में बाधा बनती है। फिल्मों को एक व्यवसाय मान कर, उसमें सैकड़ों करोड़ रुपए लगा कर, उसी अनुपात में मुनाफा कमाने की जो व्यावसायिक बाध्यताएं हैं, और उनके चलते जो तमाम तरह के अनुचित समझौते होते हैं, वे उन्हें साहित्यिक कृतियों के फिल्मांकन के लिए प्रेरित ही नहीं कर पाते। ऐसा करते समय वे दर्शकों की रुचि को भी खासा कमतर आंकते हैं। जबकि ऐसा है नहीं। जब भी किसी बेहतरीन कहानी पर लीक से हट कर बनी फिल्म आती है, तो दर्शक उसका स्वागत ही करते हैं। इससे आशा बंधती है कि आने वाले समय में साहित्यिक कृतियों के अधिक फिल्मांकन के लिए उर्वरक जमीन तैयार हो रही है।

हालांकि धार्मिक साहित्य पर अवश्य सफल फिल्में बनती रही हैं। बल्कि रामायण और महाभारत पर बने धारावाहिकों ने सफलता के कीर्तिमान स्थापित कर रखे हैं। लेकिन साहित्य तो अपने युग का प्रतिनिधित्व करता है, और अपने समय का प्रतिबिंब होता है। वह समकालीन समाज में मूल्यों के ध्वंस, मानवीय संबंधों के क्षरण और संस्कृति के अवमूल्यन को प्रतिध्वनित करता है। वह एक भयावह समय को बेनकाब करता है। फिर सिनेमा भी तो अपने समय का प्रतिबिंब होता है। 'मनोरंजन का साधन' वाले उसके भाग को छोड़ भी दें, (जो आवश्यक भी है और जिसके स्तर पर ध्यान देना वांछनीय) तब भी उसके दूसरे गंभीर पहलू से गहन सामाजिक यथार्थ का संप्रेषण अपक्षित है। ताकि साहित्य की ऐसी तमाम चिंताओं का उस सशक्त माध्यम में अधिकाधिक समावेश हो और वह अपने अपार दर्शकों के बीच उन अपेक्षाओं पर खरा उतर सके। आवश्यकता है साहित्य के साथ उसके और अधिक घनिष्ट संबंधों की। इस बात पर गहन मंथन अपेक्षित है कि जो प्रतिबद्ध और समर्पित फिल्मकार जोखिम उठा कर साहित्य से रूपांतरित ऐसी फिल्मों का निर्माण करने का साहस करते हैं, उन्हें कैसे अधिक से अधिक आर्थिक और अन्य किस्म का संरक्षण प्रदान किया जाए, ताकि वे फिल्में वृहत्तर दर्शक वर्ग से जुड़ सकें।

छात्र विकास, नेतृत्व के लिए आवश्यक रणनीतियाँ

सार्वजनिक रूप से बोलने से छात्रों का विकास और नेतृत्व बढ़ता है, लेकिन ग्लोसोफोबिया अक्सर उनकी क्षमता में बाधा डालता है। चूँकि 77त्न व्यक्ति इस डर का सामना कर रहे हैं, शैक्षिक सेटिंग में इससे निपटना उनकी उन्नति के लिए आवश्यक है। सार्वजनिक रूप से बोलना सबसे प्रभावी कौशलों में से एक है जो प्रस्तुतियों से लेकर छात्रों के व्यक्तिगत विकास और उनके नेतृत्व गुणों के निर्माण तक विभिन्न गतिविधियों में सहायक हो सकता है। हालाँकि, दर्शकों के सामने बोलने का विचार बहुत तनावपूर्ण हो सकता है। विशेष रूप से, ग्लोसोफोबिया या सार्वजनिक रूप से बोलने की चिंता छात्रों के बीच एक लगातार समस्या है, जिसके कारण टालमटोल होता है और विभिन्न अवसर छूट जाते हैं। पी सार्वजनिक रूप से बोलना एक प्रकार का सामाजिक भय है, जिसे दूसरों के सामने बोलने का डर या चिंता के रूप में वर्णित किया गया है। साइकसेंट्रल इसे एक ऐसी स्थिति के रूप में परिभाषित करता है जो शारीरिक और मनोवैज्ञानिक रूप से प्रकट हो सकती है; शारीरिक रूप से, इसमें पसीना आना, कांपना और दिल की धड़कन का बढ़ना शामिल है। साथ ही, बाद वाला शर्मिंदगी या नकारात्मक निर्णय का डर है। अनुसंधान से पता चलता है कि यह समस्या छात्रों को उनके शैक्षणिक प्रयासों में प्रभावित करती है।

फ्रंटियर्स इन कम्युनिकेशन द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार, जब सार्वजनिक रूप से बोलने की बात आती है तो लगभग 77त्न लोगों को किसी न किसी प्रकार की चिंता होती है। यह उच्च प्रतिशत इस समस्या से निपटने की आवश्यकता को दर्शाता है, विशेषकर शिक्षण संस्थानों में जहां सार्वजनिक बोलना एक महत्वपूर्ण पहलू है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रमाणित सॉफ्ट-स्किल ट्रेनर शालिनी अग्रवाल ने छात्रों के बीच सार्वजनिक रूप से बोलने की चिंता पर काबू पाने के लिए व्यावहारिक दृष्टिकोण साझा किए हैं गौरतलब है कि तैयारी काफी हद तक चिंता को कम करने में मदद कर सकती है। छात्रों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे अपनी सामग्री पहले से ही व्यवस्थित कर लें ताकि उनके पास अध्ययन के लिए पर्याप्त समय हो। इसमें विषय के लिए प्रारंभिक खोज करना और ग्राफिक प्रस्तुति की रूपरेखा और संगठन बनाना शामिल है।

अकेले और कुछ लोगों के सामने भाषण का अभ्यास करने से भाषण देने में आत्मविश्वास बढ़ाने में काफी मदद मिल सकती है। संदेश पर ध्यान दें, दर्शकों पर नहीं श्रोता की ओर से संदेश पर जोर बदलने से तनाव कम करने में मदद मिल सकती है। छात्रों को उनके द्वारा पैदा की गई धारणा के बजाय दिए जा रहे संदेश और उसके लाभों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। फोकस में यह बदलाव आत्म-चेतना को कम करने और वितरण को बढ़ाने में मदद कर सकता है। विजुअलाइज़ेशन तकनीकें चिंता को प्रबंधित करने के लिए विजुअलाइज़ेशन एक शक्तिशाली उपकरण है। छात्र सफलतापूर्वक अपना भाषण देते हुए, सकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त करते हुए और अपनी उपलब्धियों पर गर्व महसूस करते हुए कल्पना कर सकते हैं।

यह सकारात्मक प्रेरक भाषण आत्मविश्वास बढ़ा सकता है और डर को कम कर सकता है। साँस लेने योग्य उपलब्धियाँ साँस लेने के व्यायाम चिंता के शारीरिक लक्षणों को प्रबंधित करने में मदद कर सकते हैं। छात्रों को अपनी नसों को शांत करने के लिए भाषण से पहले और भाषण के दौरान धीमी, गहरी सांसें लेना सिखाएं। नियंत्रित श्वास हृदय गति को कम कर सकती है और शांति की भावना पैदा कर सकती है। क्रमिक अनुभव ए ऐसा इसलिए है क्योंकि जितना अधिक छात्र सार्वजनिक रूप से बोलने के संपर्क में आते हैं, उनका डर कम हो जाता है या दूसरे शब्दों में, छात्र असंवेदनशील हो जाते हैं। छोटे-छोटे बोलने के कार्यों से धीरे-धीरे आगे बढ़ें, जैसे किसी छोटे समूह के सामने बोलना या कक्षा चर्चा में योगदान देना। जैसे-जैसे आत्मविश्वास बढ़ता है दर्शकों और प्रस्तुतियों का आकार और कठिनाई धीरे-धीरे बढ़ाई जानी चाहिए। सकारात्मक आत्म-बातचीत विद्यार्थियों को नकारात्मक विचारों का सकारात्मक कथनों से मुकाबला करना सिखाएं। कहने के बजाय,÷मैं असफल हो जाऊंगा,÷ वे कह सकते हैं, ÷मैं अच्छी तरह से तैयार हूं और अच्छा भाषण देने में सक्षम हूं।÷ सकारात्मक आत्म-चर्चा आत्मविश्वास बढ़ाने और तनाव कम करने में मदद कर सकती है। इस प्रकार, छात्र उपर्युक्त व्यावहारिक रणनीतियों के उपयोग के माध्यम से डर को आत्मविश्वास में बदलने में सक्षम हैं। सार्वजनिक बोलना न केवल एक संपत्ति है, बल्कि उस व्यक्ति के हाथ में एक उपकरण भी है जो इसे विकसित करना चाहता है। एक बार जब छात्र अपनी चिंता पर काबू पा लेते हैं, तो वे नए दरवाजे खोलने में सक्षम होंगे और सर्वश्रेष्ठ बन सकेंगे।

प्रेम,श्रद्धा और सामाजिक समरसता का उच्चतम प्रतिमान माता शबरी

आज के दौर में जब वैश्विक परिदृश्य पर भारत अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाने के लिए अग्रसर है, तब आंतरिक रूप से समाज को जातियों के संकीर्ण खानों में बांटकर खंडित करने की साजिशें चिंताजनक रूप से गहराती जा रही हैं। यह विडंबना ही है कि जिस सनातन संस्कृति ने वसुधैव कुटुंबकम का उद्घोष किया, आज उसी के अनुयायी परस्पर वैमनस्य की अग्नि में झुलस रहे हैं। वर्तमान सामाजिक परिवेश में एक स्पष्ट दरार दिखाई देती है, जहाँ आरक्षित वर्ग के भीतर सवर्णों के प्रति एक प्रकार की चिढ़ और आक्रोश व्याप्त है, तो वहीं सवर्ण वर्ग का एक हिस्सा आरक्षित वर्ग को अपनी समस्त समस्याओं का मूल मानकर उन्हें कोसने में अपनी ऊर्जा व्यर्थ कर रहा है। वास्तविकता यह है कि यह वैचारिक प्रदूषण समूचे हिंदू समाज का स्वभाव नहीं है, बल्कि यह मुट्ठी भर उन अवसरवादी लोगों का षड्यंत्र है जो अपने स्वार्थ की रोटियां सेंकने के लिए सामाजिक ताने-बाने को छिन्न-भिन्न करने पर तुले हुए हैं। किंतु इस क्षुद्र राजनीति और संकीर्ण मानसिकता का खामियाजा पूरे सनातन समाज को भुगतना पड़ रहा है, जिससे इसकी सामूहिक शक्ति क्षीण हो रही है।

इस अंधकारमय समय में हमारे वेद,पुराण,शास्त्र और उपनिषद ही वह मशाल हैं जो हमें समाधान का मार्ग दिखा सकते हैं। यदि हम निष्पक्ष होकर अपने आध्यात्मिक इतिहास के पन्नों को पलटें, तो हमें ऐसे अनगिनत प्रसंग मिलेंगे जो आज की इन कृत्रिम दीवारों को ढहाने के लिए पर्याप्त हैं। ऐसा ही एक कालजयी और हृदयस्पर्शी प्रसंग माता शबरी का है, जो जातिवाद के चश्मे से ग्रस्त आज के समाज के लिए एक जीवंत संदेश है।

माता शबरी की कथा केवल एक भक्त और भगवान के मिलन की गाथा नहीं है, बल्कि यह सामाजिक समरसता का वह उच्चतम प्रतिमान है जिसे स्वयं मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने स्थापित किया था। यदि हम आज के प्रचलित और दूषित सामाजिक मानकों के आधार पर देखें, तो भगवान राम को क्षत्रिय होने के नाते सवर्ण वर्ग का प्रतिनिधि माना जा सकता है और माता शबरी को उनके भील मूल के कारण दलित, शोषित या आदिवासी वर्ग की श्रेणी में रखा जा सकता है, लेकिन सनातन संस्कृति की मूल चेतना इस प्रकार के वर्गीकरण को सिरे से खारिज करती है।

भारतीय मनीषियों के अनुसार,कोई भी व्यक्ति अपने जन्म से नहीं बल्कि अपने कर्म और भाव से महान बनता है। प्रत्येक जीव अपने पूर्व संचित कर्मों के आधार पर ही प्रारब्ध को प्राप्त करता है, और भक्ति मार्ग पर चलते हुए वह समस्त लौकिक बंधनों से मुक्त हो जाता है। शबरी माता का जीवन इसी सत्य का साक्षात्कार कराता है। वे अपने गुरु मतंग ऋषि के प्रति अगाध श्रद्धा रखती थीं और उन्हीं के आदेशानुसार निर्जन वन में साधु-संतों की सेवा में अपना जीवन व्यतीत कर रही थीं। तत्कालीन समाज में भी कुछ संकीर्ण सोच वाले लोग थे जो उन्हें अछूत मानकर तिरस्कृत करते थे, लेकिन शबरी की महानता देखिए कि वे उन अपमानित करने वाले लोगों की भी छुपकर सेवा करती रहीं। वे नहीं चाहती थीं कि जिन लोगों की वे सेवा कर रही हैं, उन्हें यह जानकर ग्लानि या दुख हो कि उनकी सेवा एक तथाकथित निम्न वर्ग की महिला द्वारा की गई है। उनकी इस निस्वार्थ और अहंकार-शून्य सेवा ने ही उन्हें उस पद पर प्रतिष्ठित किया, जहाँ तक बड़े-बड़े तपस्वी भी नहीं पहुँच पाए।

मतंग ऋषि ने शबरी की इसी निश्छल भक्ति से अभिभूत होकर समूचे ऋषि समाज के समक्ष यह घोषणा की थी कि साक्षात ईश्वर राम के स्वरूप में चलकर उनके आश्रम तक आएंगे। यह प्रसंग उन लोगों के गाल पर करारा तमाचा है जो स्वयं को श्रेष्ठ मानकर दूसरों को नीचा दिखाते हैं। उस वर्ग के लिए भी सीख है, जो स्वयं को दीन हीन जानकार अपनी दुर्दशा के लिए अनारक्षित लोगों को दोषी ठहरा रहा है। जिस समय शबरी प्रतीक्षारत थीं,उसी समय के अनेक तथाकथित उच्च कुलीन और विद्वान ऋषि-मुनि भी वहां तपस्या कर रहे थे, जिन्हें इस बात का दंभ था कि भगवान सबसे पहले उनके पास आएंगे। वे पूजा-पाठ और कर्मकांडों में उलझे रहे, जबकि भगवान राम ने उन सभी पांडित्यपूर्ण आश्रमों को छोड़कर उस भीलनी की कुटिया को चुना जिसने अपना पूरा जीवन प्रेम और सेवा में समर्पित कर दिया था। रामायण और रामचरितमानस में यह प्रसंग अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि शबरी ही वह एकमात्र भक्त शिरोमणि हैं, जिन्हें भगवान श्री राम ने स्वयं नवधा भक्ति का उपदेश दिया। भगवान ने वहां जाति, कुल, धर्म या पद की महत्ता को पूरी तरह नकारते हुए स्पष्ट रूप से कहा कि मानहुँ एक भगति कर नाता। अर्थात, ईश्वर के लिए केवल भक्ति का ही नाता सर्वोपरि है। भगवान राम द्वारा शबरी के जूठे बेरों को चाव से खाना इस बात का प्रमाण है कि प्रेम और श्रद्धा के समक्ष छुआछूत और ऊंच-नीच जैसी कुरीतियां अर्थहीन हैं।

आज के सवर्ण और आरक्षित, दोनों ही वर्गों को इस प्रसंग से गंभीर आत्मचिंतन करने की आवश्यकता है। हम किस आधार पर एक-दूसरे से श्रेष्ठ या हीन होने का दावा करते हैं? यदि हम स्वयं को सनातनी कहते हैं, तो हमें यह स्वीकार करना होगा कि हम सभी एक ही परमपिता परमात्मा की संतानें हैं। जब हमारे आराध्य देव ने स्वयं जाति-पाति का कोई भेद नहीं किया, तो फिर हम मनुष्यों को यह अधिकार किसने दिया कि हम समाज को इन कृत्रिम सीमाओं में बांधें? क्या हम जातिवाद को बढ़ावा देकर अनजाने में यह सिद्ध करने का प्रयास कर रहे हैं कि हमारी सोच हमारे भगवान से भी बड़ी है? यदि राम ने शबरी को मां कहकर संबोधित किया, तो क्या हम अपने ही भाइयों को गले नहीं लगा सकते? आज हिंदुत्व को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए एकात्म मानववाद के उसी मूल मंत्र की आवश्यकता है, जो मनुष्य और मनुष्य के बीच किसी भी प्रकार के भेदभाव को स्वीकार नहीं करता। हमें समझना होगा कि जात-पात की ये दीवारें हमारी शक्ति नहीं, बल्कि हमारी कमजोरी हैं, जिनका लाभ बाहरी शक्तियां हमेशा से उठाती आई हैं। यदि भारत को अपनी सार्वभौमिकता और अखंडता को अक्षुण्ण रखना है, तो इन दीवारों को तोड़ना ही होगा।

समरसता का अर्थ यह नहीं है कि हम केवल सतही तौर पर एक साथ बैठें, बल्कि इसका अर्थ है हृदय से एक-दूसरे के अस्तित्व को स्वीकार करना और सम्मान देना। सवर्ण वर्ग को अपनी श्रेष्ठता के दंभ को त्यागकर समाज के हर वर्ग को साथ लेकर चलने की उदारता दिखानी होगी, वहीं आरक्षित वर्ग को भी अतीत की कड़वाहट को छोड़कर सकारात्मकता के साथ मुख्यधारा में जुड़ना होगा। षड्यंत्रकारी ताकतें हमेशा हमें हमारे मतभेदों की याद दिलाती रहेंगी, लेकिन हमें अपनी साझा विरासत और आध्यात्मिक जड़ों को याद रखना है। माता शबरी का आश्रम केवल एक स्थान नहीं था, वह एक विचारधारा थी जहाँ समर्पण ने ऊंच-नीच को परास्त कर दिया था। आज प्रत्येक हिंदू को अपने भीतर वैसी ही शबरी जैसी दृष्टि विकसित करने की जरूरत है, जो सामने वाले में जाति नहीं बल्कि मानवता देखे। जब तक हम जातियों के मोहजाल में फंसे रहेंगे, तब तक हम एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण नहीं कर पाएंगे। अतः समय की पुकार है कि हम जातिगत चश्मों को उतार फेंकें और एकात्म भाव से ओतप्रोत होकर एक ऐसे समाज की रचना करें जहाँ केवल सद्गुणों और कर्मों की पूजा हो। यही सनातन धर्म का वास्तविक सार है और यही भारत की अखंडता का एकमात्र स्थायी मार्ग है। यदि हम इस सत्य को आत्मसात कर लेते हैं, तो कोई भी बाहरी साजिश हमारी एकता को भंग नहीं कर पाएगी और हम पुनः विश्व गुरु के पद पर आसीन हो सकेंगे।

निजीकरण बनाम कल्याणकारी राज्य

निजी क्षेत्र का अनावश्यक पक्ष लेना अब बंद करना होगा। अब ऐसे आर्थिक सुधारों की नींव रखने का समय आ गया है, जिसमें कल्याणकारी राज्य के लिए निजी क्षेत्र को भी बराबर का जिम्मेदार बनाया जाए। इस समय स्थितियां बड़ी विपरीत हैं। हम आर्थिक तरक्की के भ्रम में दिन-ब- दिन खुद को हांक रहे हैं। दूसरी तरफ, इस बात की स्वीकृति भी दे रहे हैं कि देश के गरीब आदमी की आय बढ़ाने के लिए एक लंबा सफर तय करना अभी बाकी है। गरीबी दूर करने के लिए आर्थिक असमानता एक मुख्य बाधा है। इन दिनों एक अजीब द्वंद्व या छलावा भी दिखता है, जब कल्याणकारी राज्य की जिम्मेदारी के साथ-साथ सरकारों द्वारा अपने चुनावी वादों को पूरा करने के लिए सामाजिक कल्याण को आर्थिक नीतियों में ज्यादा तरजीह दी जा रही है। इससे आर्थिक विकास पर बहुत विपरीत असर पड़ रहा है। राजनीतिक दलों के चुनावी घोषणापत्रों में वह सब कुछ शामिल हो रहा है, जो लोकलुभावन अधिक है, सर्वहित के लिए कम कल्याणकारी है। इससे राज्यों पर आर्थिक दबाव लगातार बढ़ रहा है।

नब्बे के दशक में उदारीकरण से निजी क्षेत्र को आगे बढ़ने का मौका मिला, पर अब समय आ गया है कि कल्याणकारी राज्य और सामाजिक कल्याण दोनों का मिश्रण गरीबी दूर करने के लिए एक ! एक मुख्य उद्देश्य के तौर पर आर्थिक नीतियों में जगह ले और उसके संचालन की जिम्मेदारी सरकारों के साथ-साथ निजी क्षेत्र भी उठाए। भारत में कभी आर्थिक नीतियों में निजी क्षेत्र को एकाधिकार नहीं दिया गया। आजादी के से आर्थिक नीतियां सरकारी संरक्षण में ही रहीं। हालांकि आर्थिक विकास के आंकड़े इस बात की गवाही देते हैं कि सरकारी संरक्षण में बनीं, पली और बढ़ीं आर्थिक नीतियां, जिन्हें लोकहितकारी राज्य बनाने की सोच से देश के आर्थिक विकास को एक सुस्त वृद्धि ही मिली। इसी कारण हम विकसित मुल्कों की तुलना में पिछड़ते गए। इन दिनों अमेरिका में आर्थिक नीतियों का विरोध हो रहा है। वहां इस बात की मांग उठ रही है कि अर्थव्यवस्था का रुख अब पूंजीवाद से समाजवाद की तरफ मुड़ना चाहिए।

इसके बाद से यह चर्चा विश्व की सभी बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में भी शुरू हो गई है कि बदलाव का रुख उन्हें भी अपनाना होगा या उसमें अभी देरी है। भारत में भी पिछले कुछ अरसे से यह सुनने को मिलता कि देश में पूंजीपतियों की संख्या बढ़ रही जबकि गरीबी कम नहीं हो रही। यह कोई हैरत की बात नहीं, बल्कि पूंजीवादी आर्थिक नीतियों के चलते पैदा हुई आर्थिक विषमता का परिणाम है। समाज में पूंजीवाद का विरोध इसलिए भी जायज लगता है। कि करीब सभी जगह सरकारें आर्थिक विकास की बागडोर पूरी तरह निजी क्षेत्र के हवाले कर देती हैं और कई दफा उनकी गलतियों के बावजूद उन्हें संरक्षित भी करती हैं। अमेरिका में तो यह सब बहुत आम हो गया है। 2005-06 में निजी क्षेत्र की गलत नीतियों के चलते ही अमेरिका में मंदी का सामना करना पड़ा। मगर यह सोचना भी आवश्यक है कि क्या समाजवाद के माध्यम से आर्थिक विकास को वह तेजी दी जा सकती है, जो पूंजीवाद की नीतियों से मिलती है ? आर्थिक नीतियों के सरकारी संरक्षण के दौरान भारत में 1960 से 1990 के तीन दशकों में प्रति व्यक्ति औसत आय में वृद्धि मात्र 1.6 फीसद थी। 1990 के बाद से अब तक यह 3.6 फीसद रही। वहीं वर्ष 2005 से वर्ष 2010 तक का समय आर्थिक सुधारों के कारण काफी तेजी से बढ़ने का था। इसलिए वृद्धि दर 4.3 फीसद थी और 2010 के बाद से प्रति व्यक्ति विकास दर ने अपने अधिकतम स्तर 4.9 फीसद को छुआ। गौरतलब है कि 1991 के बाद भारतीय आर्थिक नीतियों में उदारीकरण को सम्मिलित कर लिया गया था और फिर सरकारी नियंत्रण लगातार कम होता चला गया। वर्ष 1975 तक भारत, चीन और वियतनाम में प्रति व्यक्ति आय लगभग बराबर थी, पर वर्ष 2000 के बाद से चीन और वियतनाम में प्रति व्यक्ति आय 35 से 50 फीसद के बराबर बढ़ी। आज चीन में प्रति व्यक्ति आय भारत से ढाई गुना अधिक है। इसका कारण भारत में आर्थिक नीतियों में उदारीकरण को काफी देर से शामिल किया जाना रहा है और परिणामस्वरूप प्रति व्यक्ति आय भी एक समय के बाद ही बढ़ी अगर पूंजीवादी आर्थिक नीतियों से आर्थिक विकास तेजी से बढ़ता है, तो फिर इसका आमजन में विरोध क्यों हैं? इसके पीछे कुछ संभावित कारणों में से एक, सरकारों द्वारा निजी क्षेत्र को बहुत हद तक संरक्षित करना है। अमेरिका के संदर्भ में इसे कई दफा दिवालिया होने वाली कंपनियों को बचाने से समझा जा सकता है, वहीं भारत के संदर्भ में इसे व्यक्तियों की वित्तीय आय पर लगने वाला कर तुलनात्मक रूप से कंपनियों के मुनाफे पर लगने वाले कर से बहुत अधिक है। इसकी पुष्टि आर्थिक आंकड़ों से हो जाती है। वर्ष 2023- 24 में भारतीय कंपनियों से मिलने वाले कर की राशि 9.3 लाख करोड़ थी, जो भारतीय अर्थव्यवस्था के जीडीपी का 3.11 फीसद था। वहीं व्यक्तिगत आयकर का संग्रह 10.22 लाख करोड़ के आसपास था, जो जीडीपी का 3.45 फीसद था। क्या इसका अर्थ है कि भारतीय कंपनियां कम मुनाफा कमा रही हैं, इसलिए वे कम कर का भुगतान कर रही है? यह एक गलत अवधारणा है। एक ताजा आंकड़े के मुताबिक तकरीबन पैंतीस हजार भारतीय कंपनियों का कर से पूर्व का पूर्व का मुनाफा पिछले पांच वर्षों में करीबन 144 फीसद बढ़ा है।

डेली कॉलेज की छात्रा से दरिंदगी की कोशिश, कैटेलाइजर कोचिंग की घटना, टीचर पर FIR दर्ज

इंदौर। इंदौर के अन्नपूर्णा थाना क्षेत्र से एक बेहद शर्मनाक मामला सामने आया है जहां एक नामी कोचिंग संस्थान के शिक्षक पर छात्रा के साथ छेड़छाड़ करने के गंभीर आरोप लगे हैं। डेली कॉलेज में अध्ययनरत दसवीं कक्षा की एक छात्रा की शिकायत पर कार्रवाई करते हुए अन्नपूर्णा पुलिस ने कैटेलाइजर कोचिंग संस्थान के शिक्षक आदेश जोशी के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कर ली है। पुलिस मामले की गंभीरता को देखते हुए साक्ष्यों को एकत्रित करने में जुट गई है।छात्रा द्वारा पुलिस को दी गई जानकारी के अनुसार यह घटना सोमवार शाम लगभग साढ़े पांच बजे की है। छात्रा जब कोचिंग पहुंची तो कुछ आवश्यक दस्तावेजों के न होने के कारण वह पहली मंजिल पर स्थित क्लासरूम में अपना बैग रखकर नीचे वापस आ गई। इसी समय आरोपी शिक्षक आदेश जोशी ने छात्रा को इशारे से अपने पास बुलाने का प्रयास किया और उसे वहां बैठने को कहा। इसके पश्चात आरोपी पैसेज एरिया में चला गया और छात्रा को भी वहीं बुला लिया। छात्रा का आरोप है कि वहां आरोपी ने उसे आपत्तिजनक बातें कहते हुए किस करने की मांग की। इतना ही नहीं आरोपी शिक्षक जबरन छात्रा का हाथ पकड़कर उसे केबिन के भीतर ले गया और उसे अपनी ओर खींचने की कोशिश करने लगा। छात्रा ने आपबीती बताते हुए कहा कि वह किसी तरह आरोपी के चंगुल से बचकर निकली और ऊपर जाकर एक सीनियर टीचर को पूरी घटना की जानकारी दी।

छात्रा का गंभीर आरोप है कि सीनियर टीचर ने आरोपी के विरुद्ध कार्रवाई करने के बजाय मामले को वहीं दबाने की कोशिश की। इसके बाद जब छात्रा अपना बैग लेने वापस गई तो आरोपी आदेश जोशी दोबारा उसके पास आया और छात्रा के बैग से परफ्यूम निकालकर अपने कपड़ों पर लगाने लगा। इस पूरी घटना से छात्रा अत्यधिक घबरा गई और तुरंत कोचिंग से भागकर अपने घर पहुंची।

परिजनों ने कोचिंग पहुंचकर की आरोपी की धुनाई- घर पहुंचते ही छात्रा ने आपबीती अपने परिजनों को सुनाई। घटना की जानकारी मिलते ही आक्रोशित परिजन तुरंत कोचिंग संस्थान पहुंचे। वहां परिजनों का गुस्सा फूट पड़ा और उन्होंने आरोपी शिक्षक की जमकर पिटाई कर दी। हंगामे की सूचना मिलते ही पुलिस टीम भी मौके पर पहुंची और आरोपी शिक्षक को हिरासत में लेकर थाने ले आई। पुलिस ने छात्रा के बयानों के आधार पर छेड़छाड़ और अन्य संबंधित धाराओं में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

महू रेलवे स्टेशन विस्तार को हरी झंडी- जमीन अधिग्रहण शुरू

इंदौर। इंदौर में डॉ. आंबेडकर नगर महू रेलवे स्टेशन को लंबी दूरी की ट्रेनों का स्टॉपेज बनाने की कवायद के तहत ब्रॉड गेज लाइन बिछाए जाने के बाद कई ट्रेनों का संचालन शुरू हो चुका है। हालांकि, स्टेशन परिसर में जगह की कमी के कारण स्टेशन विस्तार और ट्रेनों के ठहराव में परेशानी आ रही थी।

इसी को देखते हुए पश्चिम रेलवे द्वारा रक्षा मंत्रालय को भूमि अधिग्रहण के लिए पत्र लिखा गया था। रेलवे स्टेशन के समीप स्थित अवैध खान, कंचन विहार और खान कॉलोनी क्षेत्र में अतिक्रमण हटाने के लिए नोटिस जारी किए गए थे। अतिक्रमण हटने से रेलवे को लगभग साढ़े तीन एकड़ भूमि उपलब्ध होगी, जिससे स्टेशन विस्तार में आ रही बाधाएं दूर होंगी। मंगलवार को रक्षा संपदा विभाग, केंट बोर्ड महू और पश्चिम रेलवे के अधिकारियों की मौजूदगी में अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई शुरू की गई। इस दौरान जेसीबी, पोकलेन, डंपर, ट्रैक्टर सहित अन्य भारी मशीनों का उपयोग किया गया। कर्मचारियों द्वारा कई मकानों को हथौड़ों से तोड़ा गया। उल्लेखनीय है कि नोटिस जारी होने के बाद कुछ लोगों ने स्वयं भी अपने अतिक्रमण हटाने शुरू कर दिए थे।

कार्रवाई के दौरान सुरक्षा व्यवस्था के लिए आरपीएफ, जीआरपी और मध्यप्रदेश पुलिस का बल तैनात रहा।

अतिक्रमण हटाने के दौरान क्षेत्रवासियों ने कार्रवाई का विरोध करते हुए कहा कि वे वर्षों से यहां निवास कर रहे हैं और मकान टूटने से वे बेसहारा हो जाएंगे। लोगों की आपत्तियों के बावजूद अधिकारियों ने कार्रवाई जारी रखी।

कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी द्वारा दो आदतन अपराधियों को छह माह के लिए जिला बदर करने के आदेश जारी

झाबुआ। जिला दण्डाधिकारी एवं कलेक्टर नेहा मीना द्वारा मध्यप्रदेश राज्य सुरक्षा अधिनियम, 1990 की धारा 5 (क, ख) के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए जिले में लोक-शांति एवं सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने की दृष्टि से दो आदतन अपराधियों को छह माह की अवधि के लिए जिला बदर किए जाने के आदेश जारी किए गए हैं। जारी आदेशानुसार अनावेदक बुवारिया पिता कोदर डामर, निवासी ग्राम मोईचारणी, जिला झाबुआ तथा अनावेदक विशाल पिता राजेश डामोर, निवासी आवास कॉलोनी, मेघनगर, जिला झाबुआ को आदेश प्राप्ति के 24 घंटे के भीतर झाबुआ जिले की राजस्व सीमा सहित समीपवर्ती जिले धार, रतलाम, आलीराजपुर एवं बड़वानी की राजस्व सीमाओं से बाहर जाना होगा। उक्त आदेश छह माह की अवधि तक प्रभावशील रहेगा। इस अवधि में सक्षम न्यायालय की पूर्व लिखित अनुमति के बिना संबंधित क्षेत्रों में प्रवेश पूर्णतः प्रतिबंधित रहेगा। पुलिस अधीक्षक जिला झाबुआ द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन के अनुसार अनावेदक बुवारिया पिता कोदर डामर, निवासी ग्राम मोईचारणी, थाना पेटलावद, आपराधिक प्रवृत्ति का व्यक्ति है। इसके विरुद्ध थाना पेटलावद में मारपीट सहित विभिन्न प्रकरण दर्ज हैं। वर्ष 1998 से यह थाना क्षेत्र पेटलावद में आपराधिक गतिविधियों में सक्रिय रहा है।

इसके विरुद्ध पूर्व में प्रतिबंधात्मक कार्यवाही भी की गई, किंतु व्यवहार में सुधार परिलक्षित नहीं हुआ।

इसके कृत्यों से आमजन के व्यापार-व्यवसाय एवं दैनिक गतिविधियों में बाधा उत्पन्न हो रही थी तथा लोग भयवश रिपोर्ट दर्ज कराने या साक्ष्य देने से कतराते थे। अपराधों की पुनरावृत्ति से क्षेत्र में शांति एवं सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा था। परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए जिला बदर की कार्यवाही आवश्यक पाई गई।

पुलिस अधीक्षक द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन में उल्लेखित है कि अनावेदक विशाल पिता राजेश डामोर, उम्र 31 वर्ष, निवासी आवास कॉलोनी मेघनगर, थाना मेघनगर, गुण्डा प्रवृत्ति का होकर क्षेत्र में भय एवं आतंक का वातावरण निर्मित कर लोक व्यवस्था एवं परिशांति को प्रभावित कर रहा था।

डीएवीवी में हैप्पीनेस सेंटर बना सिर्फ कागजों की कहानी

इंदौर। देवी अहिल्या विश्वविद्यालय (डीएवीवी) में छात्रों की मानसिक सेहत सुधारने के उद्देश्य से प्रस्तावित हैप्पीनेस सेंटर अब तक शुरू नहीं हो सका है। करीब सवा साल पहले इस सेंटर को खोलने का निर्णय लिया गया था, लेकिन आज तक न तो सेंटर की शुरुआत हुई और न ही किसी काउंसलर की नियुक्ति हो पाई है। विश्वविद्यालय प्रशासन का कहना है कि प्रस्ताव पास हो चुका है और प्रक्रियाएं जारी हैं, लेकिन जमीनी स्तर पर कोई प्रगति नजर नहीं आ रही है।

मानसिक तनाव की घटनाओं के बाद लिया गया था फैसला- बीते कुछ वर्षों में विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच मानसिक तनाव बढ़ने और आत्महत्या जैसी घटनाओं के सामने आने के बाद हैप्पीनेस सेंटर खोलने का निर्णय लिया गया था। इसका उद्देश्य छात्रों को तनाव, अवसाद, परीक्षा दबाव और निजी समस्याओं से उबरने में मदद करना था। इस योजना को तत्काल जरूरत मानते हुए कार्यपरिषद में प्रस्तुत किया गया था, जिसे कुलगुरु के साथ पहली या दूसरी बैठक में स्वीकृति भी मिल गई थी।

काउंसलर और मनोवैज्ञानिक की नियुक्ति नहीं - योजना के तहत हैप्पीनेस सेंटर में प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिक और काउंसलर नियुक्त किए जाने थे, ताकि छात्र खुलकर अपनी समस्याएं साझा कर सकें। प्रोफेसरों का मानना है कि मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े मामलों में देरी गंभीर परिणाम दे सकती है। इसके बावजूद अब तक किसी भी काउंसलर की नियुक्ति या जॉइनिंग नहीं हो पाई है और न ही सेंटर के लिए अलग से स्टाफ तय किया गया है।

सरकारी प्रक्रिया बनी बड़ी बाधा- हैप्पीनेस सेंटर जैसी संवेदनशील योजना भी सरकारी प्रक्रियाओं और लालफीताशाही में उलझ गई है। फाइलें अलग-अलग स्तरों पर घूम रही हैं, लेकिन ठोस नतीजा सामने नहीं आ रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी योजनाओं को प्राथमिकता के आधार पर तुरंत लागू किया जाना चाहिए था, क्योंकि यह सीधे छात्रों की जान और भविष्य से जुड़ा विषय है।

सेंटर की जगह और बजट अब भी तय नहीं- यह प्रस्ताव अक्टूबर 2024 के आसपास पारित किया गया था। उस समय उम्मीद जताई गई थी कि सेंटर जल्द शुरू हो जाएगा, लेकिन आज तक यह तय नहीं हो पाया है कि हैप्पीनेस सेंटर कहां संचालित होगा। इसके साथ ही कितने काउंसलर या मनोवैज्ञानिक नियुक्त किए जाएंगे, इस पर भी स्थिति स्पष्ट नहीं है। बजट, पद स्वीकृति और प्रशासनिक मंजूरी जैसे मुद्दों पर फाइलें अब भी अटकी हुई हैं।

फैकल्टी के लिए भी जरूरी मानी गई थी योजना- यह सेंटर केवल छात्रों के लिए ही नहीं, बल्कि फैकल्टी के लिए भी उपयोगी माना गया था। विश्वविद्यालय में पढ़ाई और प्रशासनिक दबाव के चलते शिक्षक भी मानसिक तनाव का सामना करते हैं। प्रस्ताव में यह भी शामिल था कि जरूरत पड़ने पर फैकल्टी को भी काउंसलिंग और मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जाएगा।

इस पूरे मामले पर कुलगुरु प्रो. राकेश सिंघई का कहना है कि हैप्पीनेस सेंटर खोलने को लेकर महत्वपूर्ण फैसले लिए जा चुके हैं, लेकिन फिलहाल आगे की प्रक्रिया की स्पष्ट जानकारी नहीं है।

बार-बार बदला छोटा उदयपुर- धार रेल परियोजना का अलाइनमेंट, 60 किलोमीटर का काम शेष

इंदौर। धार और झाबुआ जिले व गुजरात दाहोद के आदिवासी इलाकों के लिए महत्वपूर्ण छोटा उदयपुर रेलवे परियोजना का अलाइनमेंट बार-बार बदला जा चुका है। इस कारण अभी तक इस परियोजना का फायदा आदिवासी अंचल को नहीं मिल पाया है, जबकि तिरला से टांडा व अलीराजपुर में 60 किलोमीटर से भी कम लंबाई का काम शेष है। वन विभाग की जमीन भी अभी तक रेलवे को नहीं मिल पाई है। यदि सिंहस्थ से पहले यह परियोजना पूरी होती है तो गुजरात व महाराष्ट्र के यात्रियों को इसका फायदा मिल सकता है।

धार के समीप तिरला में इंदौर-दाहोद और धार-छोटा उदयपुर रेल परियोजना आकर मिलेगी। भविष्य में तिरला रेलवे के नक्शे पर बड़ा जंक्शन बनेगा। शिलान्यास के समय छोटा उदयपुर-धार रेल लाइन प्रोजेक्ट की लंबाई 157 किलोमीटर थी, जो नए अलाइनमेंट के बाद 145 किमी रह गई है। यह प्रोजेक्ट इंदौर के लिए बहुत जरूरी है, क्योंकि यह लाइन इंदौर को धार, छोटा उदयपुर होते हुए वडोदरा तक शॉर्ट कट कनेक्टिविटी देगी।

अभी इंदौर से वडोदरा जाने के लिए उज्जैन-रतलाम-दाहोद-गोधरा होकर लंबा रास्ता तय करना पड़ता है। छोटा उदयपुर के जरिए मुंबई-गुजरात से सीधे इंदौर का जुड़ाव होगा। वडोदरा की दूरी अभी इंदौर से 430 किमी है, लेकिन धार और छोटा उदयपुर के नए मार्ग से यह सिर्फ 310 किमी रह जाएगी। रेलवे अधिकारियों के अनुसार यह रूट तैयार होने पर वडोदरा-इंदौर जैसे महत्वपूर्ण कॉरिडोर में यात्रा समय कम होगा और माल परिवहन भी तेज होगा।

रेलवे मामलों के जानकार नागेश नामजोशी ने कहा कि छोटा उदयपुर रेल परियोजना कई आदिवासी व ग्रामीण इलाकों को भारतीय रेल के मुख्य नेटवर्क से जोड़ने वाली है। नई रेल लाइन गुजरने से छोटा उदयपुर, अलीराजपुर और धार जिलों को सीधा रेल कनेक्शन मिलेगा, जिससे इन क्षेत्रों के सामाजिक और आर्थिक विकास को गति मिलेगी। इसका अलाइनमेंट बार-बार बदले जाने से काम में देरी हुई है। इस परियोजना को पूरा करने पर रेल विभाग को प्राथमिकता देनी चाहिए।

कलेक्टर द्वारा मेले एवं एम्यूजमेंट राइड्स की सुरक्षा हेतु जिला एवं अनुभाग स्तरीय समितियों का गठन

झाबुआ। किसी भी मेले, झूले अथवा मनोरंजन स्थलों पर अव्यवस्था या भगदड़ जैसी घटनाओं की रोकने हेतु जिला प्रशासन द्वारा व्यापक कदम उठाए गए हैं। कलेक्टर नेहा मीना द्वारा जिले में आयोजित होने वाले एम्यूजमेंट राइड्स/मेले/मनोरंजन स्थल/गेमिंग जोन आदि के प्रभावी पर्यवेक्षण एवं नियंत्रण के लिए जिला एवं अनुभाग स्तरीय समितियों का गठन किया गया है।

जिला स्तरीय समिति- जिला स्तर पर गठित समिति में अपर कलेक्टर/अपर जिला दण्डाधिकारी, जिला झाबुआ को अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सदस्य होंगे तथा कार्यपालन यंत्री, लोक निर्माण विभाग सदस्य सचिव रहेंगे। इसके अतिरिक्त कार्यपालन यंत्री लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग, कार्यपालन यंत्री मध्यप्रदेश विद्युत मंडल तथा परियोजना अधिकारी शहरी विकास अभिकरण को सदस्य नियुक्त किया गया है। यह समिति जिले में आयोजित होने वाले समस्त मेलों एवं मनोरंजन गतिविधियों की समुचित निगरानी एवं समन्वय सुनिश्चित करेगी।

अनुभाग स्तरीय समिति- अनुभाग स्तर पर मेले/एम्यूजमेंट राइड्स/मनोरंजन स्थल/गेमिंग जोन आदि के लिए अनुमति जारी करने हेतु समिति गठित की गई है। अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) एवं अनुविभागीय दण्डाधिकारी को अनुज्ञापन प्राधिकारी नियुक्त किया गया है। समिति में अनुविभागीय अधिकारी पुलिस, अनुविभागीय अधिकारी लोक निर्माण विभाग (भवन), अनुविभागीय अधिकारी लोक निर्माण विभाग (विद्युत एवं यांत्रिकी), तहसीलदार/नायब तहसीलदार, अनुविभागीय अधिकारी लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग, संबंधित थाना प्रभारी, सहायक यंत्री म.प्र. विद्युत मंडल, मुख्य नगर पालिका अधिकारी (नगर पालिका/परिषद) तथा मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत को सदस्य बनाया गया है।

कलेक्टर की अध्यक्षता में शांति समिति की विस्तृत बैठक सम्पन्न, सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में त्योहार मनाने की अपील

झाबुआ। आगामी त्योहारों को दृष्टिगत रखते हुए कलेक्टर नेहा मीना की अध्यक्षता में जिला स्तरीय शांति समिति की विस्तृत बैठक आयोजित की गई। बैठक में जनप्रतिनिधियों, विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों, सामाजिक संगठनों के सदस्यों तथा प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारियों की उपस्थिति रही। बैठक का उद्देश्य जिले में कानून-व्यवस्था, आपसी सौहार्द्र एवं साम्प्रदायिक सद्भाव बनाए रखते हुए सभी त्योहारों को शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराना रहा।

बैठक में उपस्थित सदस्यों से सुझाव आमंत्रित किए गए तथा विगत वर्षों में त्योहारों के दौरान उत्पन्न हुई समस्याओं एवं व्यवस्थागत चुनौतियों पर विस्तार से चर्चा की गई। सभी ने प्रशासन को सहयोग का आश्वासन देते हुए शांतिपूर्ण वातावरण बनाए रखने पर सहमति व्यक्त की।

बैठक में जानकारी दी गई कि 15 फरवरी 2026 को महाशिवरात्रि, 18 फरवरी से रमजान प्रारंभ, 24 फरवरी से 02 मार्च तक भगोरिया पर्व, 02 मार्च को होलिका दहन, 03 मार्च को धुलेंडी एवं गल-चूल पर्व, 08 मार्च को रंगपंचमी, 11 मार्च को शीतला सप्तमी, 20 मार्च को जमात-उल-विदा, 21 मार्च को ईद-उल-फितर (चांद दिखने पर निर्भर), 31 मार्च को महावीर जयंती, 03 अप्रैल को गुड फ्राइडे, 20 अप्रैल को परशुराम जयंती, अक्षय तृतीया तथा 14 अप्रैल को डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती सहित अन्य पर्व आयोजित किए जाएंगे।

इन आयोजनों के दौरान शांति एवं कानून-व्यवस्था बनाए रखने के उद्देश्य से संपूर्ण जिला झाबुआ क्षेत्र में भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा 163 के अंतर्गत प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किया गया है। इसके तहत असामाजिक तत्वों, आपराधिक प्रवृत्ति के व्यक्तियों एवं निहित स्वार्थी तत्वों की गतिविधियों पर प्रभावी निगरानी रखी जाएगी। कलेक्टर नेहा मीना ने सभी नागरिकों को अग्रिम शुभकामनाएं देते हुए कहा कि जिले की पहचान आपसी भाईचारे एवं सांस्कृतिक समरसता से है, जिसे बनाए रखना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने निर्देश दिए कि किसी भी प्रकार के जुलूस, रैली, मेला या सार्वजनिक आयोजन हेतु पूर्व अनुमति लेना अनिवार्य होगा। आयोजन की संपूर्ण जवाबदेही आयोजन समिति की रहेगी। अनुभाग एवं थाना स्तर पर भी शांति समिति की बैठक आयोजित कर स्थानीय स्तर पर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए जाएं।

इंदौर के बाजारों में क्लीन स्वीप, खरीदारी के समय पुलिस ने होर्डिंग उखाड़े, दर्जनों गाड़ियां जब्त

इंदौर। शहर के प्रमुख व्यावसायिक क्षेत्रों में लगातार बढ़ते ट्रैफिक दबाव और जाम की स्थिति को देखते हुए आज ट्रैफिक पुलिस और नगर निगम की टीम ने स्थानीय पुलिस थानों के बाल के साथ संयुक्त रूप से क्लीन स्वीप अभियान चलाया। इस कार्रवाई के दौरान यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों पर नकेल कसी गई और सड़कों को घेरकर खड़े अतिक्रमण को भी हटाया गया। मुख्य रूप से राजबाड़ा, जेल रोड, नॉवल्टी बाजार और डॉलर मार्केट में हुई इस कार्रवाई के दौरान बड़ी संख्या में गाड़ियों को जब्त किया गया। शाम के समय जब बाजारों में सबसे अधिक भीड़ होती है उसी समय को कार्रवाई के लिए चुना गया ताकि सुनिश्चित किया जा सके कि पूरी सड़क का ट्रैफिक जाम क्लियर हो रहा है या नहीं। पुलिस की यह कार्रवाई मुख्य रूप से राजबाड़ा, सराफा, मारोठिया बाजार और जेल रोड जैसे क्षेत्रों में केंद्रित रही।

इन इलाकों में वाहनों की बेतरतीब पार्किंग और फुटपाथ पर दुकानदारों द्वारा किए गए अतिक्रमण के कारण पैदल चलना भी दूभर हो गया था। इस दौरान नो-पार्किंग में खड़े वाहनों और बिना हेलमेट/लाइसेंस वाहन चलाने वालों के खिलाफ मौके पर कार्रवाई की गई। सभी वाहनों को जप्त किया गया। बार-बार चेतावनी के बाद भी कार्रवाई के दौरान सड़क पर बीच में आवाजाही कर रहे वाहनों को पकड़कर क्रेन की मदद से ट्रैफिक थाने भिजवाया गया। वहीं दुकानदारों द्वारा दुकानों के बाहर फैलाए गए सामान और अवैध ठेलों को भी हटाया गया। दुकानदारों के द्वारा सड़कों पर रखे होर्डिंग और स्टैंडी भी पुलिस ने जप्त कर लिए।

व्यापारियों और जनता की प्रतिक्रिया- व्यापारी हिम्मत सिंह जादौन ने कहा कि व्यापारी इस कार्रवाई का स्वागत करते हैं क्योंकि इससे आवाजाही आसान होगी और अधिक संख्या में ग्राहक आएंगे। हमें भी बार बार गाड़ियां हटाने की परेशानी नहीं होगी और विवाद भी कम होंगे। वहीं कुछ स्थानीय व्यापारियों ने यह भी कहा कि आसपास के क्षेत्रों में पार्किंग के पुख्ता इंतजाम होने चाहिए।

पुलिस ने जारी किया हेल्पलाइन नंबर- डीसीपी राजेश कुमार त्रिपाठी द्वारा यातायात पुलिस टीम के साथ मुख्य बाजारों में पैदल भ्रमण किया गया। इस दौरान क्षेत्र के व्यापारीगण भी उनके साथ उपस्थित रहे। भ्रमण के दौरान राजवाड़ा, सराफा, कपड़ा मार्केट, खजूरी बाजार, सुभाष चौक एवं आसपास के पार्किंग स्थलों का निरीक्षण किया गया तथा यातायात व्यवस्था, पार्किंग स्थिति एवं नागरिक सुविधाओं का जायजा लिया गया। पुलिस उपायुक्त द्वारा दुकानदारों एवं व्यापारियों से अपील की गई कि वे अपने वाहनों को निर्धारित पार्किंग स्थलों में ही पार्क करें, जिससे दुकानों के बाहर बनी सफेद पट्टी के भीतर ग्राहक अपने वाहन अल्प समय के लिए खड़े कर सकें। उन्होंने स्पष्ट किया कि यदि किसी दुकान के बाहर कोई वाहन लंबे समय तक खड़ा रहता है, तो उसे अवैध पार्किंग की श्रेणी में माना जाएगा।उन्होंने बताया कि ऐसे वाहनों की शिकायत नागरिक एवं व्यापारी यातायात पुलिस व्हाट्सएप हेल्पलाइन नंबर 7049107620 पर कर सकते हैं, जिस पर यातायात पुलिस द्वारा त्वरित कार्रवाई की जाएगी।

कलेक्टर की अध्यक्षता में जिला जनगणना समन्वय समिति की बैठक आयोजित

झाबुआ। कलेक्टर नेहा मीना की अध्यक्षता में जिला जनगणना समन्वय समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में जनगणना 2027 की तैयारियों, प्रशासनिक व्यवस्था, प्रशिक्षण एवं डिजिटल प्रक्रिया के संबंध में विस्तृत समीक्षा की गई तथा आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

जनगणना 2027- भारत की जनगणना देश के नागरिकों की विभिन्न विशेषताओं से संबंधित सांख्यिकीय जानकारी का सबसे बड़ा स्रोत है। वर्ष 2027 में आयोजित होने वाली जनगणना वर्ष 1872 से 16वीं तथा स्वतंत्रता के बाद 8वीं जनगणना होगी। पूर्व में अंतिम जनगणना वर्ष 2011 में संपन्न हुई थी। जनगणना 2027 पूर्णतः डिजिटल होगी, जिसमें मोबाइल एप्लीकेशन एवं ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से आंकड़ों का संकलन, प्रबंधन एवं मॉनिटरिंग की जाएगी।

प्रशासनिक व्यवस्था- राष्ट्रीय स्तर पर भारत के महारजिस्ट्रार एवं जनगणना आयुक्त जनगणना कार्य का संचालन करेंगे। राज्य स्तर पर जनगणना निदेशालय के निदेशक इसकी जिम्मेदारी संभालेंगे। मुख्य सचिव के अधीन नोडल अधिकारी (सचिव, गृह) केंद्र एवं राज्य के मध्य समन्वय स्थापित करेंगे। जिला स्तर पर जिला कलेक्टर प्रमुख जनगणना अधिकारी के रूप में कार्य करेंगे। तहसील एवं नगरीय स्तर पर चार्ज अधिकारी (तहसीलदार/नगर पालिका अधिकारी) जिम्मेदारी निभाएंगे। इनके अधीन प्रगणक एवं पर्यवेक्षक कार्य करेंगे, जिनमें शिक्षक, राज्य शासन एवं स्थानीय निकायों के फील्ड कर्मचारी शामिल होंगे।

जिला झाबुआ की प्रशासनिक इकाइयाँ- जनगणना 2027 के अंतर्गत जिला झाबुआ में 6 तहसीलें, 5 नगरीय निकाय एवं 821 ग्राम शामिल हैं, जिनमें जनगणना कार्य संपादित किया जाएगा।

वेट लॉस करने से जुड़ीं इन पांच गलतफहमियों पर आंखें बंद करके न करें भरोसा

(एजेंसी)। आमतौर पर हम बहुत-सी चीजों के बारे में सुनते और पढ़ते हैं, जिन्हें खाने से वजन बढ़ता है। ऐसे में कई बार हम उन चीजों को बिना पूरी जानकारी के खाना बंद कर देते हैं जबकि ऐसा करने से कई पोषक तत्वों की कमी हमारे शरीर में हो जाती है। इस कारण आप वेट लॉस के लिए कोई भी तरीका अपनाने से पहले आपको उसकी सही जानकारी होना बहुत जरूरी है। वेट लॉस से जुड़ीं कुछ ऐसी गलतफहमियां हैं, जिन्हें सच मानकर लोग इन्हें फॉलो करते हैं जबकि वजन कम करने से जुड़ीं ये बातें पूरी तरह सही नहीं है। आइए, जानते हैं कौन-सी हैं वे बातें-

कार्बोहाइड्रेट का सेवन छोड़ना

हमारी हर छोटी-बड़ी गतिविधि के लिए शरीर को कार्बोहाइड्रेट की आवश्यकता होती है। जब सही कार्ब्स का पर्याप्त मात्रा में सेवन किया जाता है, तो इससे वजन नहीं बढ़ता है। वजन कम करने की कोशिश करते हुए, सभी भोजन में साबुत अनाज, कॉम्प्लेक्स कार्ब्स और प्रोटीन खाना जरूरी है।

पैकेज्ड फूड वेट लॉस में कारगर

घर के बने फ्रेश खाने की तुलना में पैकेट फूड्स कभी भी हेल्दी नहीं हो सकते। ऐसे कई पैकेज्ड फूड हैं, जो लो-फैट, फैट-फ्री और ग्लूटेन-फ्री होने का दावा करते हैं, लेकिन शुगर से भरपूर होते हैं और इस तरह आपके वजन घटाने की बजाय ये बढ़ाने का काम करते हैं। वहीं ज्यादातर लेबल सच्चे नहीं होते। पैकेज्ड भोजन के बजाय ताजा पका हुआ घर का भोजन करना सबसे अच्छा है।

हर्बल चाय पीने से होता है वेट लॉस

हर्बल चाय फाइटोकेमिकल्स और एंटीऑक्सिडेंट में उच्च होती है और इस प्रकार आपके शरीर को डिटॉक्स करने में मदद करती है लेकिन चाय सीधे वजन कम करने में आपकी मदद नहीं कर सकती है। वे मेटाबॉलिज्म एक्टिविटीज को बेहतर बनाती है।

कम खाने से वजन कम होता है

कम खाना खाने का मतलब है कि कैलोरी की कमी यानी आप जितना खाते हैं उससे ज्यादा कैलोरी बर्न करना। इस तरह कम खाना और अधिक चलना अधिक वजन घटाने के लिए लॉजिकल लगता है। कुछ दिन तक यह सही हो सकता है लेकिन लंबे समय तक फॉलो करना या रूटीन बनाना सही नहीं है। इससे फैट कम होने की बजाय आपके शरीर में कमजोरी हो जाएगी।

भूखे रहकर वजन कम होता है

क्रैश डाइट लंबे समय में मदद नहीं करती। बल्कि इससे आपका वजन बढ़ सकता है, क्योंकि लम्बे समय तक भूखे रहने से आपकी एनर्जी कम हो जाती है, जिससे फैट फूड, चीनी खाने की इच्छा होती है। इससे आप उन खाद्य पदार्थों का अधिक सेवन कर सकते हैं जिनसे वजन ज्यादा बढ़ता है।

ICC ने कदम पीछे खींचे, पाकिस्तान उस पर निर्भर नहीं, बॉयकॉट मामले पर PCB के पूर्व अध्यक्ष ने खड़ा किया नया बखेड़ा

भारत और पाकिस्तान के बीच टी-20 विश्व कप मैच को लेकर चला आ रहा विवाद अभी खत्म नहीं हुआ है। पाकिस्तान और आईसीसी के बीच चल रही खींचतान पर पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के पूर्व चेयरमैन नजम सेठी ने बयान दिया है। सेठी ने कहा कि इस मामले में आईसीसी ने एक कदम पीछे लिया है, न कि पाकिस्तान ने। इसी वजह से 15 फरवरी को कोलंबो में मैच खेलने पर सहमति बनी है।

दरअसल, पाकिस्तान सरकार ने ये एलान किया था कि कोलंबो में भारत के खिलाफ होने वाले ञ्20 वर्ल्ड कप 2026 के मैच का बहिष्कार करेगी, लेकिन ICC और बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड के साथ बातचीत के बाद पाकिस्तान खेलने को तैयार हो गया। फिलहाल इसकी आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है और पाकिस्तान खुद को सही दिखाने के लिए अलग-अलग बहाने बनाने में लगा हुआ है। पाकिस्तान ये दिखाने की कोशिश में है कि दुनिया को लगे कि आईसीसी पाकिस्तान के आगे झुका। इस पर पूर्व पीसीबी अध्यक्ष नजम सेठी के मुताबिक, पाकिस्तान नहीं बल्कि ICC पीछे हटा है।

उन्होंने इंडिया टुडे से बातचीत में कहा कि पाकिस्तान ने ये फैसला बहुत सोच-समझकर लिया था। उन्हें पता था कि अगर वे भारत के खिलाफ मैच नहीं भी खेलते, तो उन पर कोई बड़ा जुर्माना या प्रतिबंध नहीं लग सकता था। सेठी ने कहा, हमने वकीलों से सलाह ली थी। ज्यादा से ज्यादा हमारा एक अंक कटता, इससे ज्यादा कुछ नहीं होता। जब ICC को इस बात का अहसास हुआ, तब उन्होंने बातचीत शुरू की और पाकिस्तान को मनाने के लिए अपने अधिकारियों को भेजा।

सेठी ने एक और चौंकाने वाली बात कही। उन्होंने कहा कि अब पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड पैसों के लिए ICC पर निर्भर नहीं है। पहले पाकिस्तान को अपना खर्च चलाने के लिए ICC से मिलने वाले फंड की जरूरत होती थी, लेकिन अब पाकिस्तान सुपर लीग इतनी सफल हो गई है कि बोर्ड अपने पैरों पर खड़ा है। उनके अनुसार, अब पाकिस्तान को PSL से ICC से ज्यादा पैसा मिलता है।

दूसरी ओर PCB के मौजूदा चीफ मोहसिन नकवी ने दावा किया कि पाकिस्तान सरकार भारत के खिलाफ आने वाला T20 वर्ल्ड कप मैच खेलने के लिए तभी राजी हुई जब वे बांग्लादेश के लिए 'इज्जत' हासिल करने में कामयाब रहे। ICC ने ये भी एलान किया कि बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड पर कोई बैन नहीं लगेगा। उसे 2028-2031 साइकिल में एक ICC इवेंट भी दिया जाएगा।

भारत-पाकिस्तान मुकाबला देखना 5 गुना हुआ महंगा, रॉकेट की स्पीड से बढ़े फ्लाइट-होटल के रेट

पाकिस्तान के 15 फरवरी को भारत से मैच खेलने के फैसले के बाद कोलंबो की फ्लाइट टिकट और वहां के होटल का किराया महंगा हो गया है। 14 और 15 फरवरी को नई दिल्ली और मुंबई से कोलंबो की फ्लाइट के लिए पांच गुना तक किराया चुकाना पड़ सकता है।

मेकमाईट्रिप की वेबसाइट पर मंगलवार को 14 और 15 फरवरी को दिल्ली-मुंबई से कोलंबो फ्लाइट का किराया एक पैसेंजर के लिए 1.45 लाख रुपये तक दिखा रहा है। आम दिनों में कोलंबो की सीधी फ्लाइट का किराया 30 हजार रुपये के आस-पास तक रहता है। वहीं कोलंबो में बड़े होटलों का किराया भी 1.14 लाख रुपये तक पहुंच गया है।

होटल का भी बढ़ा किराया- दिल्ली से कोलंबो की एअर इंडिया की नॉनस्टाप फ्लाइट का किराया 90 हजार से 1.09 लाख रुपये तक है। मुंबई से 14 फरवरी को एअर इंडिया की नॉनस्टाप फ्लाइट का किराया 90 हजार तक है। वहीं, 14 और 15 फरवरी को कोलंबो में तीन सितारा, चार सितारा और पांच सितारा होटल एक रात का किराया 1.14 लाख रुपये तक है। आम दिनों में कोलंबो में बड़े होटलों का किराया 40 हजार तक रहता है। हालांकि, छोटे होटलो और गेस्ट हाउस में दो से तीन हजार रुपये तक में भी रूम मिल जाएगा। भारत-पाकिस्तान मुकाबले को लेकर पहले संशय बना हुआ था। 15 फरवरी को होने वाले इस मैच का पाकिस्तान ने बहिष्कार करने का फैसला किया था।

फिजिकल स्ट्रेंथ बढ़ाने के लिए करें ये पांच आसान

(एजेंसी)। आपने कई ऐसे लोगों को देखा होगा, जो देखने में तो हेल्दी लगते हैं लेकिन उनमें फिजिकल पावर नहीं होता यानी वे आसानी से सामान्य चीज उठा नहीं पाते। उनकी मांसपेशियां भी कमजोर होती है। फिजिकल स्ट्रेंथ होना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि इससे हम अपना रोजाना का काम आसानी से कर सकते हैं। आज हम आपको बता रहे हैं ऐसे पांच उपाय जिससे फिजिकल पावर को बढ़ा सकते है-

पानी का भरपूर सेवन

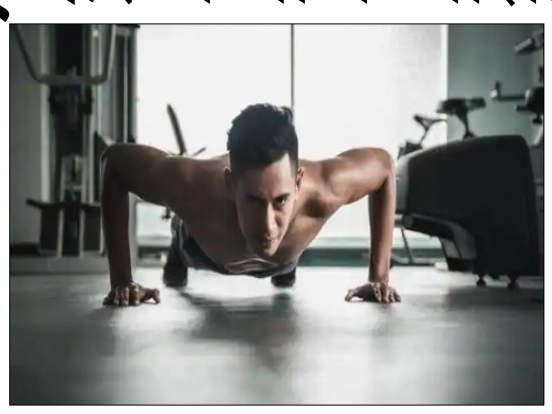

पानी पीने से मेटाबॉलिज्म तेज होगा और ऊर्जा का स्तर भी बढ़ेगा जिससे आप चुस्त फुर्तीले रह सकेंगे। खासतौर से सुबह के वक्त पानी की अच्छी मात्रा आपके मेटाबॉलिज्म को बढ़ाती है। आपका दिमाग बेहतर तरीके से काम करेगा और आप मस्तिष्क की ऊर्जा और क्षमताओं को बढ़ता हुआ महसूस करेंगे क्योंकि मस्तिष्क का 75 से 85 प्रतिशत भाग में पानी होता है। इसलिए आप अधिक से अधिक पानी पीकर उसे शक्ति प्रदान करते हैं और अपनी एकाग्रता को बढ़ाते हैं।

रोजाना 20 मिनट के लिए बॉडीवेट एक्सरसाइज

अपने शरीर का उपयोग करना शारीरिक शक्ति बढ़ाने का सबसे अच्छा और सबसे सुविधाजनक तरीका है। बॉडीवेट एक्सरसाइज की एक सीरीज है जिसे आप ट्राई कर सकते हैं। पुश-अप्स, चिन-अप्स, लंग्स, स्क्वैट्स, जंप स्क्वैट्स, क्रंचेस। ये न केवल करने में आसान हैं, बल्कि इससे आप खुद को

इतना रोमांच कभी नहीं देखा होगा... पहले नहीं, दूसरे सुपर ओवर से मिला विजेता

दक्षिण अफ्रीका और अफगानिस्तान के बीच क्रिकेट के मैदान पर एक ऐसा मुकाबला देखने को मिला, जिसने फैंस की धड़कनें थाम दीं। यह सिर्फ एक मैच नहीं, बल्कि फैंस के इमोशनंस का रोलरकोस्टर मोमेंट रहा, जहां टेंशन, एक्शन और रोमांच अपनी चरम सीमा पर था।

मैदान पर जोश इतना हाई था कि जीत-हार का फैसला निर्धारित ओवरों में नहीं हो सका। 188 रन का पीछा करने उतरी अफगानिस्तान की टीम ने मैच को सुपर ओवर तक पहुंचाया, लेकिन सुपर ओवर भी टाई हुआ और रोमांच का असली इम्तिहा दूसरे सुपर ओवर की आखिरी गेंदों पर जाकर आया और आखिरकार साउथ अफ्रीका ने ये मुकाबला अपने नाम कर लिया। ऐसे में आपको बताते हैं उन दो सुपर ओवर के हर एक गेंद का पूरा हाल।

पहले सुपर ओवर का ऐसा रहा हाल- टी-20 विश्व कप 2026 का पहला सुपर ओवर साउथ अफ्रीका बनाम अफगानिस्तान के मैच में देखने को मिला। आखिरी ओवर में 13 रन चाहिए थे, लेकिन अफगानिस्तान के आखिरी दो बल्लेबाज दो गेंद पहले ही रन आउट हो गए और मैच सुपर ओवर की तरफ चले गया। हालांकि, उसके बाद दो और गेंद बची हुई थी, लेकिन अफगानिस्तान के पास विकेट नहीं बचे और इस वजह से सुपर ओवर में मैच गया।

अफगानिस्तान को मैच जीतने के लिए आखिरी ओवर में 13 रन की दरकार थी, लेकिन उनके हाथ में सिर्फ एक विकेट था। नूर अहमद स्ट्राइक पर थे। आखिरी ओवर कगिसो रबाडा के हाथों में दिया गया। पहली ही गेंद पर नूर अहमद कैच आउट हो गए, जिसके बाद लगा कि ये मैच खत्म हो गया, लेकिन ये नो बॉल थी।

इसके बाद वाइड और पहली लीगल गेंद डॉट रही। दूसरी लीगल गेंद पर नूर अहमद ने छक्का लगया। तीसरी गेंद डॉट और चौथी गेंद पर नूर अहमद ने 2 रन लिए। लेकिन चौथी गेंद भी नो बॉल थी, जिसके बाद लगा कि अब मैच अफगानिस्तान की झोली में आ गया।

अब अफगानिस्तान को जीतने के लिए 3 गेंदों में 2 रन चाहिए थे। फ्री हिट गेंद पर फजलहक फारुख यहां दूसरे रन के प्रयास में रन आउट हो गए। इस तरह मैच सुपर ओवर में पहुंच गया। मैच में पहले बैटिंग करते हुए साउथ अफ्रीका की टीम ने निर्धारित 20 ओवर में 187/6 रन का स्कोर खड़ा किया था।

पहले सुपर ओवर में अफगानिस्तान की टीम ने 17 रन बनाए और साउथ अफ्रीका के सामने 18 रनों का टारगेट रखा।

तवे पर बनाएं रेस्टोरेंट जैसा तंदूरी नान, जानें आसान रेसिपी

(एजेंसी)। कभी-कभी रोजाना रोटी खाते रहने की जगह मन नान खाने का करने लगता है, लेकिन ऐसे में सबसे बड़ी परेशानी यह आती है कि तंदूर के बिना घर पर नान कैसे बनाएं? अगर आप भी कुछ ऐसा ही सोच रहे हैं, तो आपकी यह प्रॉब्लम दूर करने के लिए हम आपको बता रहे हैं, तवे पर नान बनाने की रेसिपी-

नान बनाने के लिए सामग्री-

मैदा - 2 कप
बेकिंग सोड़ा - 1/2 टी स्पून
तेल - 1 टेबल स्पून
दही - 1/4 कप
चीनी - 1 टी स्पून

विधि-

नान बनाने के लिए सबसे पहले मैदे को एक बाउल में निकाल लीजिए। अब इसके बीच में जगह बनाकर दही, नमक, बेकिंग सोड़ा और चीनी डाल दीजिए। अब इन सारी चीजों को अच्छे से मिला दीजिए। अब आटे में हल्का गरम पानी डालते हुए इसे गूंद लीजिए। ध्यान रहे कि आटा एकदम नरम गूंदा होना चाहिए। आटे को हाथों में तेल लगाकर मसल-मसल कर गूंदना चाहिए, जिससे कि वह एकदम चिकना हो जाए। यह प्रक्रिया लगभग 6-7 मिनट तक करें।

अब गूंथे हुए आटे को ढककर गरम जगह पर रख दीजिए। आटा 2-3 घंटे बाद फूल जाएगा। अब यह नान बनाने के लिए तैयार हो चुका है। नान बनाने के लिए सबसे पहले हाथ पर सूखा आटा लगा लें। फिर नान के आटे की बराबर-बराबर लोइयां बना लीजिए। अब एक-एक लोई को लें और उसे सूखे मैदा में हल्का लपेट लें। अब इसे किसी प्लेट में रख दीजिए। ध्यान रखे कि सभी लोइयां कपड़े से ढकी रहें।

अब एक लोई को उठाइए। उस पर हल्के से सूखा आटा लगाएं और फिर नान की तरह बेल लें। इसे हल्का मोटा रखते हुए ओवल शेप दें। अब इसके चारों तरफ थोड़ा सा पानी छिड़ककर ऊपरी साइड से गीला कर लीजिए।

अब नान की गीली सतह को तवे पर डालिए और सिकने दीजिए। ऊपर की सतह हल्की सी भूरी होने पर यानी निचली सतह के सिक जाने पर तवे को हैंडल से पकड़ लीजिए और गैस फ्लेम पर तवे को उल्टा कर दीजिए। इस दौरान तवे को इधर-उधर घुमाते रहें। यह देखते रहे कि नान अच्छे से सिक पा रहा है या नहीं। जब नान अच्छी तरह से सिक जाए, तो तवे को दोबारा सीधा कर लीजिए। अब चिमटे से नान को तवे से उतार लें। आपका होटल जैसा नान तैयार है।

हेल्दी बालों के लिए घर पर बनाएं चिरौंजी का तेल

चरौंजी का तेल बालों के लिए फायदेमंद माना जाता है। चाहे सफेद बाल हों या बालों में रूखेपन की समस्या हो आप चरिंजी का तेल लगा सकते हैं। चरिंजी के तेल में प्रोटीन की अच्छी मात्रा होती है इससे बालों को पोषण मलिता है। बाजार में मलिने वाले तेल में कैमकिल्स होते हैं जो आपके बाल और स्कैल्प को डैमेज कर सकते हैं जबकि चरिंजी के तेल को आप खुद ही घर पर आसानी से बना सकते हैं। चरिंजी का तेल बालों को स्ट्रेट करने का काम भी करता है। ये बालों के लएि नैचुरल मॉइश्चराइजर का काम करता है। इस लेख में हम चरिंजी से हेयर ऑयल बनाने का तरीका और उसके फायदों पर चर्चा करेंगे।

चरिंजी का तेल कैसे बनाएं
चरिंजी को एक मक्सिी में पीस लें।
पीसी हुई चरिंजी के पाउडर को एक पैन में डालें।
पैन में कोकोनट या बादाम का तेल डालें।
अब हल्की आंच पर तेल को गरम होने दें।
जब तेल का रंग बदल जाए तो गैस बंद कर दें।
अब तेल को छान लें और एक बाउल में नकिाल लें।

गैरी सोबर्स की झलक दिखती, 14 साल के वैभव सूर्यवंशी के मुरीद हुआ इंग्लैंड का ये दिग्गज

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व इंग्लिश बल्लेबाज मार्क बुचर भी 14 साल के वैभव सूर्यवंशी के मुरीद हो गए हैं। उन्होंने वैभव की तारीफ में कसीदे पढ़ते हुए उनकी तुलना महान वेस्टइंडीज ऑलराउंडर सर गैरी सोबर्स से कर दी हैं। बोचर ने कहा कि इस युवा भारतीय दिग्गज का बैट स्विंग महान वेस्टइंडीज ऑलराउंडर सर गैरी सोबर्स की याद दिलाता है।

अंडर-19 विश्व कप 2026 के फाइनल में इंग्लैंड के खिलाफ वैभव की पारी के दम पर भारत ने न केवल अंडर-19 विश्वकप का रिकॉर्ड छठा खिताब जीता, बल्कि दिग्गजों का भी दिल जीत लिया है। इंग्लैंड के खिलाफ 80 गेंद में वैभव ने 175 रन की पारी खेली थी।

बिहार के 14 वर्षीय बल्लेबाजी सनसनी वैभव सूर्यवंशी ने अपने धमाकेदार प्रदर्शन के दम पर हर किसी का दिल जीत लिया है। विस्डन क्रिकेट से बातचीत में बोचर ने कहा, जब मैंने वैभव को बल्लेबाजी करते देखा, तो जो पहला नाम मेरे दिमाग में आया, वह गैरी सोबर्स का था। उनके खेलने का अंदाज, संतुलन और टाइमिंग उनकी (सोबर्स) की तरह है।

बुचर ने साथ ही फैंस से साल 1968 में स्वानसी में सोबर्स द्वारा लगाए गए 6 छक्कों के फुटेज को देखने का आग्रह किया। उनका दावा है कि उस मैच में सोबर्स का बल्ले का स्विंग बिल्कुल वैभव के स्विंग जैसा दिखता है।

सानिया बनेंगी अर्जुन की दुल्हनिया.. कब घोड़ी पर चढ़ेंगे सचिन के लाडले

नई दिल्ली (एजेंसी)। क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले सचिन तेंदुलकर के घर में खुशियों ने दस्तक दी है। अगस्त 2025 में एक बेहद निजी समारोह में सगाई करने के बाद, अब सचिन के बेटे अर्जुन तेंदुलकर अपनी मंगेतर सानिया चंडोक के साथ सात फेरे लेने के लिए तैयार हैं। हाल ही में सचिन तेंदुलकर ने पीएम मोदी को भी अपने बेटे की शादी के लिए आमंत्रित किया। ऐसे में जानते हैं कब, कहां अर्जुन-सानिया की शादी होगी और कौन-कौन से मेहमान नजर आएंगे।

अर्जुन तेंदुलकर के परिवार ने शादी को लेकर चीजों को ज्यादा खुलकर नहीं रखा है, लेकिन रिपोट के अनुसार, अर्जुन-सानिया की शादी 5 मार्च 2026 को मुंबई में होगी।

शादी से पहले की रस्में 3 मार्च से ही शुरू हो जाएंगी। मुख्य समारोह शाम को होने की उम्मीद है, उसके बाद रात्रिभोज होगा। बता दें कि 26 साल के बाएं हाथ के पेसर अर्जुन ने पिछले साल अगस्त में बिजनेसमैन रवि घई की पोती सानिया चंडोक से सगाई की थी।

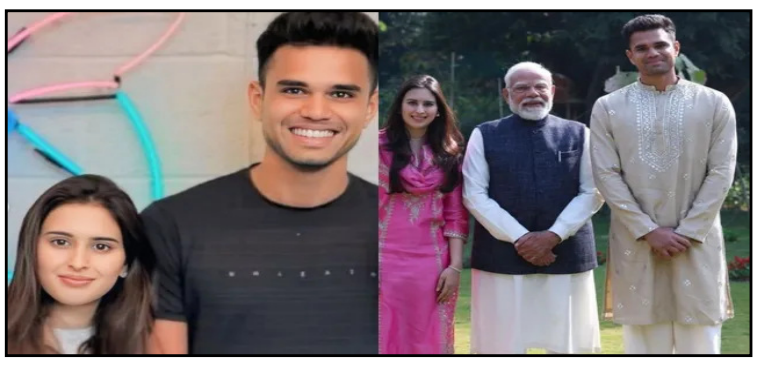

सचिन तेंदुलकर हाल ही में भारत के शीर्ष नेतृत्व को व्यक्तिगत रूप से निमंत्रण देने के लिए नई दिल्ली में थे, जिसमें- राजनीतिक नेता॰ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, गृह मंत्री अमित शाह और विपक्ष के नेता राहुल गांधी।

क्रिकेट जगत॰ सौरव गांगुली, वीवीएस लक्ष्मण और एमएस धोनी जैसे करीबी दोस्त। आईपीएल से कनकेशन॰ लखनऊ सुपरजाइंट्स (अर्जुन की नई टीम) के सदस्य और मुंबई इंडियंस के उनके पूर्व साथी।

बिजनेस ग्रुप ॰ सानिया उद्योगपति रवि घई (ग्रेविस ग्रुप के अध्यक्ष) की पोती हैं, इसलिए आतिथ्य और खाद्य उद्योग से कई बड़े नामों की उम्मीद है।

कौन हैं सानिया चंडोक- सानिया चंडोक एक जाने-माने बिजनेस परिवार से हैं। उनके दादा ग्रेविस ग्रुप के मालिक हैं, जिनके पास द ब्रुकलिन क्रीमकी और बास्किन रॉबिंस जैसे जाने-माने आइसक्रीम ब्रांड्स की जिम्मेदारी है। मिनिस्ट्री ऑफ कॉर्पोर्ट अफेयर्स के रिकॉर्ड के मुताबिक, सानिया अभी मुंबई में मिस्टर पॉड पेट स्पा एंड स्टोर स्न्क्र में डेजिग्नेटेड पार्टनर और डायरेक्टर हैं।

वहीं, वो कई सालों से अर्जुन की बहन, सारा तेंदुलकर की करीबी दोस्त रही है और इन दोनों की मुलाकात इसी तरह हुई थी।

अर्जुन तेंदुलकर का क्रिकेट करियर- बाएं हाथ के तेज गेंदबाज अर्जुन तेंदुलकर घरेलू क्रिकेट में गोवा को रिप्रेजेंट करते हैं और इससे पहले आईपीएल में मुंबई इंडियंस के लिए खेल चुके हैं।

न्यूयॉर्क में कड़ाके की ठंड से अबतक 18 लोगों की मौत, लोगों से घर के अंदर रहने की सलाह

नई दिल्ली (एजेंसी)। न्यूयॉर्क शहर में खतरनाक ठंड से मरने वालों की संख्या बढ़कर 18 हो गई है। जनवरी के आखिर से, शहर में बहुत ज़्यादा ठंड पड़ रही है, जिसमें 13 दिन जीरो सेल्सियस या उससे कम टेम्परेचर दर्ज की गई। न्यूयॉर्क में पिछले छह दशकों में सबसे लंबे समय तक सब-ज़ीरो टेम्परेचर दर्ज की गई है।

नहीं थम रहा मौत का सिलसिला- हालिया मौत शनिवार सुबह करीब 9 बजे ब्रोंक्स में एक व्यक्ति की हुई। इसके अलावा, सिटी हॉल के अधिकारी के मुताबिक, ब्रुकलिन के एक 81 साल के आदमी को उसके अपार्टमेंट की छत पर मृत पाया गया, जहां पुलिस का मानना है कि किराने का सामान ले जाते समय वह बर्फ पर फिसल गया।

न्यूयॉर्क के लोगों के लिए ये जमा देने वाले हालात हाल की सर्दियों से अलग हैं। 2020 में, शहर को ह्यूमिड सबट्रॉपिकल क्लाइमेट ज़ोन में रखा गया था। लेकिन पिछले कुछ हफ़्तों से ऐसा कुछ भी महसूस नहीं हुआ।

लोगों से घर के अंदर रहने की सलाह- न्यूयॉर्क के मेयर ज़ोहरान मामदानी ने लोगों से घर के अंदर रहने की सलाह देते हुए कहा कि 19 जनवरी से, जब कोड ब्लू इमरजेंसी की घोषणा की गई थी, जिससे बेघर शेल्टर के लिए एंट्री पॉलिसी में ढील दी गई थी।

लगभग 1,400 लोगों को शेल्टर में रखा गया था। शहर की शेल्टर कैपेसिटी में 64 और होटल रूम जोड़े गए थे, और सड़कों पर कम से कम 150 और आउटरीच वर्कर थे।

न्यूयॉर्क शहर के अधिकारियों ने बहुत ज़्यादा ठंड की वजह से कोड ब्लू घोषित किया गया हैं। इस घोषणा के तहत किसी को भी शेल्टर में जाने से रोका नहीं जा सकता, और यह पुलिस को लोगों को सबवे सिस्टम में शेल्टर लेने से रोका जा सकता है।

बेघरों तक पहुंचने वाली टीमें भी सड़कों पर एक्टिव रूप से घूम रही हैं, कमज़ोर, बेघर लोगों पर ध्यान देती हैं और नॉन-इमरजेंसी 311 कॉल इमरजेंसी 911 पर भेजी जाती हैं।

महिंद्रा एंड महिंद्रा के शानदार नतीजे, Q3 में 47% बढ़ा मुनाफा; ऑटोमोटिव सेगमेंट का दबदबा

नई दिल्ली (एजेंसी)। महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड ने वित्त वर्ष 2026-26 की तीसरी तिमाही के वित्तीय नतीजे पेश कर दिए हैं। इसका कंसोलिडेटेड नेट प्रॉफिट साल-दर-साल 47 फीसदी बढ़कर 4,675 करोड़ रुपये हो गया, जबकि ऑपरेशन से रेवेन्यू 26 फीसदी बढ़कर 52,100 करोड़ रुपये हो गया। कंपनी ने कहा कि तिमाही के दौरान लेबर कोड रेगुलेशन में बदलाव के असर को छोड़कर, कंसोलिडेटेड प्रॉफिट आफ्टर टैक्स साल-दर-साल 54 फीसदी बढ़ा। वहीं कंसोलिडेटेड PAT मार्जिन Q3 FY26 में बढ़कर 9 फीसदी हो गया, जबकि एक साल पहले यह 7.7 फीसदी था।

ऑटोमोटिव सेगमेंट का कैसा रह परफॉर्मेंस- महिंद्रा एंड महिंद्रा के ऑटोमोटिव सेगमेंट ने Q3 FY26 में 30,370 करोड़ रुपये का कंसोलिडेटेड रेवेन्यू दर्ज किया, जो साल-दर-साल 30 फीसदी अधिक है। सेगमेंट के लिए कंसोलिडेटेड प्रॉफिट 42 फीसदी बढ़कर 1,993 करोड़ रुपये हो गया।

वहीं तिमाही वॉल्यूम 3.02 लाख गाड़ियां रहा, जो 23 फीसदी अधिक है, जिसमें यूटिलिटी व्हीकल वॉल्यूम 1.79 लाख यूनिट रहा।

महिंद्रा ने SUVs में अपनी लीडरशिप बनाए रखी और इस तिमाही में रेवेन्यू मार्केट शेयर 24.1 प्रतिशत रहा, जो साल-दर-साल 0.90 फीसदी अधिक है। लाइट कमर्शियल व्हीकल्स (3.5 टन से कम) में, मार्केट शेयर 0.10 फीसदी पॉइंट्स बढ़कर 51.9 प्रतिशत हो गया।

शेयर पर क्या पड़ा असर- तिमाही नतीजों का कंपनी के शेयर पर कोई असर नहीं पड़ा। BSE पर ये 3675.40 रुपये के मुकाबले 3,696.60 रुपये पर खुला और कारोबार के दौरान 3,786 रुपये तक ऊपर गया। करीब सवा 3 बजे ये BSE पर 1.60 रुपये गिरकर 3,673.80 रुपये पर है।

ईरान में विपक्षी नेताओं पर बड़ी कार्रवाई, नोबेल विजेता नरगिस सहित कई सुधारवादी नेता गिरफ्तार

नई दिल्ली (एजेंसी)। ईरानी सुरक्षा बलों ने देश में जारी सुधारवादी आंदोलन से जुड़े विपक्षी नेताओं और प्रमुख हस्तियों को हिरासत में लेने के लिए अभियान शुरू कर किया। सुरक्षा बलों के इस कदम से दमनकारी कार्रवाई और भी तेज हो गई है।

इससे पहले अधिकारियों ने हिंसा के जरिए देशव्यापी प्रदर्शनों को दबा दिया था। सुरक्षा बलों की कार्रवाई में हजारों लोग मारे गए थे और हजारों अन्य प्रदर्शनकारियों को हिरासत में ले लिया गया था।

नोबेल पुरस्कार विजेता को सात साल की जेल- न्यूयार्य टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार, नोबेल शांति पुरस्कार विजेता नरगिस मोहम्मदी को गिरफ्तार कर सात साल से अधिक जेल की एक अन्य सजा सुनाई गई है। यह कदम ईरान सरकार के अशांति के खिलाफ बगावत करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को चुप कराने का प्रयास दिखाई देता है क्योंकि ईरान, अमेरिका के साथ नई परमाणु वार्ता का सामना कर रहा है।

ट्रंप कई बार दे चुके हैं चेतावनी- राष्टपति डोनल्ड ट्रंप ने कई बार चेतावनी दी है कि अगर कोई समझौता नहीं हुआ तो वह देश पर हमला कर सकते हैं। मीडिया में प्रसारित खबरों में ईरान की धर्मतांत्रिक व्यवस्था को बदलने की कोशिश कर रहे सुधारवादी आंदोलन के कार्यकर्ताओं के हवाले से बताया गया कि उनके कम से कम चार सदस्यों को गिरफ्तार किया गया है, जिनमें कई सुधारवादी गुटों का प्रतिनिधित्व करने वाले सुधारवादी मोर्चे के प्रमुख अजर मंसूरी और पूर्व राजनयिक मोहसेन अमीनजादेह शामिल हैं।

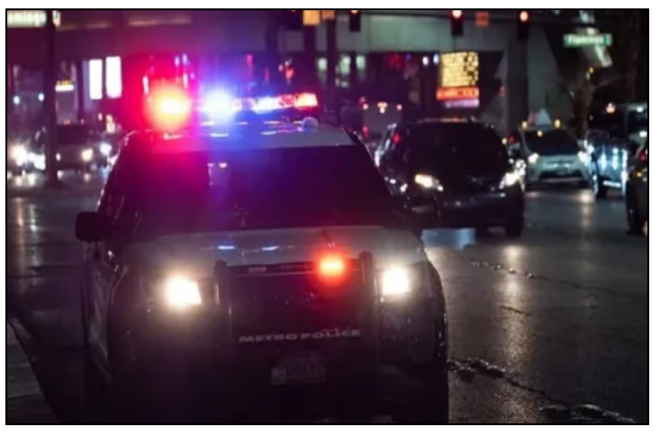

फ्रांस के टीचर की हैवानियत, भारत समेत 9 देशों में 89 नाबालिगों का किया यौन शोषण; सालों बाद खुला राज

नई दिल्ली (एजेंसी)। फ्रांस में 79 साल के एक पूर्व शिक्षक पर पांच दशकों से ज्यादा समय में 89 नाबालिगों का रेप और यौन शोषण करने का आरोप लगा है। प्रॉसिक्यूटर एटिएन मांटो ने इस आरोपी की पहचान सार्वजनिक कर दी है, ताकि और पीड़ित सामने आएं। यह अपराध नौ देशों में फैला हुआ है, जिसमें भारत भी शामिल है। आरोपी 2024 से हिरासत में है और जांचकर्ता अब गवाहों और पीड़ितों की तलाश में जुटे हैं।

प्रॉसिक्यूटर ने कहा कि आरोपी का नाम पहले इसलिए नहीं बताया गया, क्योंकि तथ्यों की पुष्टि जरूरी थी। अब नाम जाहिर करने का मकसद है कि संभावित पीड़ित खुद आगे आएं और न्याय की प्रक्रिया में मदद करें। आरोपी का नाम जैक्स लेव्यूगल है, जो 1946 में फ्रांस के एनेसी में पैदा हुआ था।

किन देशों में आरोपी ने किया अपराध- लेव्यूगल पर 1967 से 2022 तक 13 से 17 साल के नाबालिगों के खिलाफ यौन अपराध करने के आरोप हैं। ये अपराध जर्मनी, स्विट्जरलैंड, मोरक्को, नाइजर, अल्जीरिया, फिलीपींस, भारत, कोलंबिया और फ्रेंच क्षेत्र न्यू कैलेडोनिया में हुए थे। वह इन जगहों पर फ्रीलांस टीचर और इंस्ट्रक्टर के रूप में काम करता था।

प्रॉसिक्यूटर मांटो ने बताया कि आरोपी इन देशों में घूमता था और जहां भी बसता, वहां ट्यूशन या पढ़ाई के बहाने युवाओं से मिलता और उनके साथ यौन संबंध बनाता था। उसके रोल में गुफाओं की साइंस (स्पेलियोलॉजी) का इंस्ट्रक्टर और फ्रेंच टीचर शामिल था। पीड़ितों ने जांचकर्ताओं को बताया कि वह उन्हें विदेशी भाषाएं सिखाने और संस्कृति के बारे में जागरूक करने में काफी समय लगाता था। मांटो ने आरोपी के व्यक्तित्व को जटिल बताया है।

यूएसबी ड्राइव से खुला राज- यह मामला तब सामने आया जब आरोपी की एक यूएसबी ड्राइव मिली, जिसमें उसने नाबालिगों के साथ अपने यौन संबंधों के बारे में विस्तार से लिखा था। यूएसबी उसके भतीजे को मिली, जो अक्टूबर 2023 में आरोपी की गैरमौजूदगी में उसके सामान की तलाशी ले रहा था। भतीजा आरोपी की भावनात्मक और यौन जिंदगी के बारे में उत्सुक था।

यूएसबी में 15 हिस्सों में कंटेट थी, जिसकी जांच से 89 नाबालिगों की पहचान हुई। जांचकर्ता इन दस्तावेजों से पीड़ितों को ढूंढने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन कई जगह नाम अधूरे हैं, जो दशकों बाद उन्हें ट्रेस करना मुश्किल बना रहा है। मांटो ने कहा कि शुरू में लगा था कि आंतरिक जांच से सब पीड़ित मिल जाएंगे, लेकिन ऐसा संभव नहीं हो सका।

हत्याओं का कबूलनामा- जांच के दौरान मामला और भी गंभीर हो गया, जब आरोपी ने अपनी मां और आंटी की हत्या कबूल की। उसने अपनी कैंसर से पीड़ित मां को तकिए से दबाकर मार डाला। इसी तरह, 92 साल की आंटी को सोते हुए मार दिया। आरोपी ने जांचकर्ताओं को बताया कि आंटी उसे सीवेंस लौटने से रोक रही थी और रो रही थी, इसलिए उसने ऐसा किया।

उसने अपने इन कृत्यों को जायज ठहराते हुए कहा कि अगर वह खुद ऐसी स्थिति में हो, तो कोई उसे भी ऐसा ही करे। ये हत्याएं यौन अपराधों से अलग हैं, लेकिन जांच में जुड़ गईं। अधिकारियों ने अब एक हॉटलाइन शुरू की है, ताकि लोग संपर्क करें और जानकारी दें।

वोडाफोन आइडिया में इस दिग्गज अरबपति ने बढ़ाई हिस्सेदारी, एक झटके में खरीद लिए 4 करोड़ शेयर; आएगी तेजी!

नई दिल्ली (एजेंसी)। वोडाफोन आइडिया के शेयरों को लेकर बड़ी खबर है। भारत के दिग्गज अरबपति उद्योगपति और वोडाफोन आइडिया के प्रमोटर कुमार मंगलम बिड़ला ने ओपन मार्केट से 4 करोड़ से अधिक शेयर खरीदे। उन्होंने ओपन मार्केट से शेयर खरीदकर अपनी हिस्सेदारी बढ़ाई है। यह खरीदारी 30 जनवरी से 1 फरवरी के बीच की गई है।

NSE पर वोडाफोन आइडिया के शेयर 1.04 फीसदी की गिरावट के साथ 11.46 रुपये के स्तर पर बंद हुए। कुमार मंगलम बिड़ला के शेयर खरीदने वाली खबर से बाद अब वोडाफोन आइडिया के शेयरों में कल तेजी देखने को मिल सकती है।

कितने रुपये में हुई खरीदारी- कुमार मंगलम बिड़ला ने 30 जनवरी को 10.95 रुपये प्रति शेयर के हिसाब से 2.21 करोड़ शेयर खरीदे। वहीं, इसके बाद बजट वाले दिन यानी 1 फरवरी को उन्होंने अतिरिक्त 1.88 करोड़ शेयर 11.13 रुपये प्रति शेयर की औसत कीमत पर खरीदे। कुल ट्रांजैक्शन कंपनी की आउटस्टैंडिंग इक्विटी का लगभग 0.03% है।

कैसे थे कंपनी के तिमाही नतीजे- टेलीकॉम ऑपरेटर वोडाफोन आइडिया को तीसरी तिमाही में 5,286 करोड़ रुपये का नेट लॉस हुआ था। यह पिछली तिमाही से 5,524 करोड़ के लॉस से कम है। तिमाही दर तिमाही रेवेन्यू में 1.1% की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। तीसरी तिमाही वोडाफोन आइडिया का रेवेन्यू 11,323 करोड़ रहा। EBITDA 2.8त्न बढ़कर Rs 4,817 करोड़ हो गया। EBITDA मार्जिन Q2 के 41.8त्न से बढ़कर 42.5% हो गया। ARPU Q3FY26 में Rs 186 हो गया, जो एक साल पहले 173 रुपये था, जिसमें YoY 7.3% की बढ़ोतरी हुई, जो मुख्य रूप से कस्टमर अपग्रेड की वजह से हुआ।

कंपनी का सब्सक्राइबर बेसिस YoY बेसिस पर 3.4% घटकर 19.98 करोड़ से 19.29 करोड़ हो गया। हालांकि, Vi के पोस्टपेड और 4%/5% सब्सक्राइबर में बढ़ोतरी देखी गई। कंपनी का पोस्टपेड सब्सक्राइबर बेसिस एक साल पहले के 2.52 करोड़ से 14.2% बढ़कर 2.88 करोड़ हो गया। YoY बेसिस पर 4% और 5% सब्सक्राइबर बेसिस 12.6 करोड़ से बढ़कर 12.85 करोड़ हो गया।

ट्रेड वॉर- ट्रंप ने कनाडा को दी धमकी, नहीं खुलने देंगे अमेरिका-कनाडा ब्रिज; माननी होंगी ये शर्तें

नई दिल्ली (एजेंसी)। ट्रेड वॉर के बीच अमेरिका के राष्टपति डोनल्ड ट्रंप ने कनाडा को धमकाया है कि अगर उसने शिकायतों का समाधान नहीं किया तो अमेरिका और कनाडा को जोड़ने वाले नए ब्रिज को खोलने नहीं दिया जाएगा।

ट्रंप की इस नई धमकी से दोनों पड़ोसी देशों के बीच कूटनीतिक तनाव और बढ़ गया है। अमेरिका की अपने इस उत्तरी पड़ोसी देश के साथ टैरिफ को लेकर पहले से ही तनातनी है।

अमेरिका के मिशिगन प्रांत के डेट्राइट और कनाडा में ओंटारियो के विंडसर को जोड़ने वाले करीब ढाई किमी लंबे पुल का निर्माण लगभग पूरा हो चुका है और जल्द ही इसे खोले जाने की उम्मीद है।

4.7 अरब डॉलर की लागत वाला यह पुल कनाडा द्वारा वित्तपोषित है। अमेरिका ने इसके निर्माण के लिए भुगतान से इनकार कर दिया था।

ट्रंप ने ब्रिज न खोलने की दी धमकी - ट्रंप ने सोमवार, 9 फरवरी को कहा कि वह गार्डी होवे इंटरनेशल ब्रिज को खोलने की अनुमति नहीं देंगे। उन्होंने कहा, जब तक अमेरिका को हर चीज के लिए पूरा मुआवजा नहीं मिलता, जो हमने उन्हें दिया है, तब तक अनुमति नहीं मिलेगी।

ट्रंप ने आगे कहा, सबसे महत्वपूर्ण चीज यह है कि कनाडा को अमेरिका के साथ निष्पक्षता और सम्मान के साथ व्यवहार करना चाहिए, जिसके हम हकदार हैं। इधर, कनाडा के सबसे बड़े कारोबारी समूह कनाडाई चैंबर आफ कामर्स ने ट्रंप की धमकी आलोचना की और कहा कि पुलों को बाधित करना या बैरिकेड लगाना आत्मघाती कदम है।

कनाडा को लेकर अपना रखा है सख्त रुख- अपने दूसरे कार्यकाल में ट्रंप ने कनाडा को लेकर सख्त रुख अपना रखा है। वह कनाडा को अमेरिका का 51वां राज्य बनाने की धमकी दे चुके हैं। उस पर टैरिफ भी बढ़ा दिया है। पिछले महीने ट्रंप ने यह धमकी भी दी थी कि अगर कनाडा ने चीन के साथ व्यापार समझौता किया तो उस पर 100 प्रतिशत टैरिफ लगा दिया जाएगा।

गौतम अदाणी को ट्रंप के US ने क्यों किया टारगेट

नई दिल्ली (एजेंसी)। गौतम अदाणी के पीछे अमेरिका हाथ धोकर पड़ गया है। ऐसा हम नहीं बल्कि, आए साल अमेरिकी फर्म या फिर वहां की सरकारी संस्थाएं आरोप लगा रही हैं। इन आरोपों से तो यही साबित हो रहा है। अब वॉल स्ट्रीट जर्नल का मुद्दा सुर्खियों में हैं। दरअसल, इस अखबार ने पिछले साल जून में गौतम अदाणी को लेकर एक खबर छापी थी, जिसमें अदाणी ग्रुप के ऊपर आरोप लगाए गए थे। अब उसी आरोपों पर अदाणी एंटरप्राइजेज ने एक्सचेंज फाइलिंग में जानकारी देते हुए कहा कि वह इस मामले में अमेरिका के फॉरेन एसेट्स ऑफिस से बातचीत कर रही है।

अदाणी एंटरप्राइजेज ने कहा कि उसे 4 फरवरी को फॉरेन एसेट्स ऑफिस से जानकारी के लिए एक रिक्वेस्ट मिली थी। उसने कहा, ÷इस कम्युनिकेशन में किसी भी तरह की गड़बड़ी या नियमों का पालन न करने की बात नहीं है।÷ जून 2025 की वॉल स्ट्रीट जर्नल की रिपोर्ट में आरोप लगाया गया कि गौतम अदाणी ने विदेशी रिश्वत के आरोपों को हटाने के लिए .स्. दखल की मांग की। अखबार ने छापा था कि क्या अदाणी की कंपनियों ने मुंद्रा पोर्ट के जरिए ईरानी स्क्ल इंपोर्ट करके बैन तोड़े हैं। अदाणी ग्रुप अब .स्. ऑफिस ऑफ फॉरेन एसेट्स के साथ बातचीत कर रहा है। ऐसा पहला मामला नहीं जब अमेरिका में अदाणी ग्रुप के ऊपर आरोप लगे हैं।

ट्रंप का डर या वजह कुछ और... अमेरिका से तनातनी के बीच खामेनेई ने क्यों तोड़ दी 37 साल पुरानी परंपरा?

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका के साथ चल रही तनातनी के बीच ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई अपनी 37 साल पुरानी परंपरा को तोड़ दिया। 1989 में नेतृत्व हाथ में आने के बाद से खामेनेई लगातार ये काम करते आ रहे थे।

दरअसल, वह पिछले 37 सालों से एयर फोर्स कमांडरों के साथ होने वाली सालाना मीटिंग में हिस्सा लेते आ रहे थे, यहां तक कि कोविड-19 महामारी के दौरान भी उन्होंने इस मीटिंग में हिस्सा लिया था। मगर इस बार 8 फरवरी को हुई बैठक में वह नहीं पहुंचे।

क्यो अहम है ये मीटिंग- यह सालाना मीटिंग 8 फरवरी, 1979 की सालगिरह के मौके पर होती है, जब एयर फोर्स के अधिकारियों के एक ग्रुप ने पहलवी राजवंश को हटाने के लिए रुहोल्लाह खुमैनी के प्रति वफादारी की कसम खाई थी। खुमैनी इस्लामिक रिपब्लिक के संस्थापक थे और सुप्रीम लीडर भी।

अगले चार दशकों में यह दिन एक प्रतीकात्मक घटना बन गया, जिसमें एयर फोर्स के जवान और कमांडर हर साल उसी तारीख को ईरान के धार्मिक नेताओं से मिलते थे। रिपोर्ट में कहा गया है कि इस साल खामेनेई के बजाय सशस्त्र बलों के चीफ ऑफ स्टाफ, अब्दोलरहीम मौसवी ने रविवार को सेना के एयर फोर्स कमांडरों से मुलाकात की।

खामेनेई की गैरमौजूदगी ऐसे समय में हुई है जब तेहरान और वॉशिंगटन के बीच तनाव बढ़ गया है। अमेरिका ने इस क्षेत्र में अपनी मिलिट्री मौजूदगी बढ़ा दी है और इस्लामिक रिपब्लिक पर संभावित अमेरिकी मिलिट्री हमले का खतरा मंडरा रहा है।

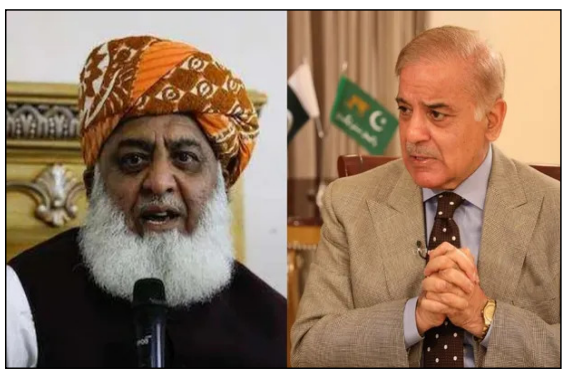

विदेश नीति में फेल पाकिस्तान सरकार, भारत-अफगानिस्तान से दुश्मनी तो चीन और ईरान हुए नाराज; मौलाना का दावा

नई दिल्ली (एजेंसी)। जमीयत उलेमा-ए-इस्लाम (स्न) के प्रमुख मौलाना फजल-उर-रहमान ने शहबाज शरीफ के नेतृत्व वाली पाकिस्तान सरकार पर निशाना साधा है। फजल-उर-रहमान ने शहबाज शरीफ पर सवाल उठाते हुए कहा, सरकार की अफगान नीति बुरी तरह फेल हो गई है।

फजल-उर-रहमान ने पाकिस्तान सरकार की अफगानिस्तान चरमपंथी मुद्दे को संभालने के तरीके की आलोचना की। रहमान ने कहा, अफगानिस्तान के साथ व्यापार तो बंद है, लेकिन चरमपंथी आते रहते हैं।

फजल-उर-रहमान का पाकिस्तानी सरकार पर हमला- फजल-उर-रहमान ने रविवार, 8 फरवरी को रावलपिंडी में एक सभा में बोलते हुए कहा, हमने कभी यह पूछने के लिए नहीं सोचा कि हमारी अफगान नीति इतनी बुरी तरह फेल क्यों हुई। एक भी अनार या खरबूजा पाकिस्तान में नहीं आ सकता, फिर भी आतंकवादी सीमा पार करते रहते हैं।

जमीयत उलेमा-ए-इस्लाम के मौलाना ने आगे कहा, अधिकारी कहते हैं कि आतंकवादी अफगानिस्तान से आ रहे हैं। अगर वे आ रहे हैं, तो उन्हें रोकें। अगर वे आ रहे हैं, तो उन्हें खत्म करें।

पाकिस्तान की विदेश नीति की निंदा- रहमान ने कहा, पाकिस्तान सरकार की नीतियां इतनी असफल हैं कि भारत हमारा दुश्मन है, अफगानिस्तान हमारा दुश्मन है और यहां तक कि ईरान और चीन भी हमसे नाराज हैं।

रहमान ने आगे कहा, पाकिस्तान के लोगों को जवाब चाहिए। कोई भी देश तब तक जीवित नहीं रह सकता जब उसकी नीतियां केवल अलगाव, अविश्वास और असुरक्षा पैदा करती हैं।

जमीयत उलेमा-ए-इस्लाम के नेता ने कहा, देश की विदेश नीति नागरिक सरकार द्वारा नहीं, बल्कि सैन्य बल तय करता है। एक जनरल आता है और कहता है कि हम बातचीत करेंगे, दूसरा आता है और कहता है कि हम युद्ध करेंगे।

2027 की जनगणना देश की प्रथम डिजिटल जनगणना होगी

रतलाम। कलेक्टर श्रीमती मिशा सिंह की अध्यक्षता में कलेक्टर कार्यालय सभाकक्ष में जिला जनगणना समन्वय समिति की बैठक आयोजित हुई। बैठक में अपर कलेक्टर डॉ. शालिनी श्रीवास्तव,पीओ डूडा श्री अरूण पाठक,आयुक्त नगर निगम श्री अनिल भाना, जिला योजना एवं सांख्यिकी अधिकारी बालकृष्ण पाटीदार, जिला सूचना विज्ञान अधिकारी श्रेय भावसार, उपसंचालक जनसंपर्क श्रीमती अनुराधा गहरवाल, जिला जनगणना समन्वय समिति के सदस्य और संबंधित अधिकारी उपस्थित थे। कलेक्टर ने बैठक में सभी संबंधित अधिकारियों को आवश्यक संख्या में कर्मचारियों की जनगणना कार्य के लिए ड्यूटी लगाने और जनगणना निदेशालय भारत सरकार के निर्देशानुसार सभी आवश्यक तैयारियां पूर्ण करने के निर्देश दिए।

बैठक में जनगणना निदेशालय भारत सरकार द्वारा नियुक्त प्रभारी अधिकारी सुश्री ओजस्विनी सांख्यिकीय अन्वेषक ग्रेड दो ने जानकारी देते हुए बताया कि भारत की जनगणना 2027 दो चरणों मे की जाएगी। प्रथम चरण 01 मई 2026 से 30 मई 2026 तक आयोजित किया जाएगा। प्रथम चरण में मकान सूचीकरण और मकानों की गणना की जाएगी। जनगणना 2027 का दूसरा चरण फरवरी 2027 में आयोजित किया जाएगा। दूसरे चरण में जनसंख्या गणना की जाएगी।

प्रथम चरण में प्रगणक और पर्यवेक्षक द्वारा घर-घर दस्तक देकर मकान सूचीकरण का कार्य 01 मई 2026 से 30 मई 2026 तक किया जाएगा। मकान सूचीकरण के कार्य के लिए स्वगणना का विकल्प 16 अप्रैल से 30 अप्रैल 2026 तक प्रथम चरण के पूर्व 15 दिन तक उपलब्ध रहेगा। मकान सूचीकरण के कार्य में प्रगणक और पर्यवेक्षक द्वारा शासन द्वारा अधिसूचित 33 सवाल पूछे जाएगें।

दुसरे चरण में जनसंख्या की गणना का कार्य फरवरी, 2027 में होगा। जनसंख्या की गणना के दौरान प्रत्येक व्यक्ति की गणना की जाएगी साथ ही व्यक्तियों के सम्बन्ध में अन्य विभिन्न बिन्दुओं जैसे- आयु,लिंग,वैवाहिक स्थिति, धर्म, दिव्यांगता, मातृभाषा, साक्षरता, शैक्षणिक योग्यता, आर्थिक क्रियाकलाप, प्रवास, प्रजननता विवरण इत्यादि पर जानकारी एकत्रित की जाएगी। जनगणना 2027 देश की प्रथम डिजिटल जनगणना होगी, जिसमें एच एल ओ एप्लीकेशन के माध्यम से आंकड़ो का संकलन किया जाएगा। जनगणना के समस्त कार्य की रियल टाइम मॉनिटरिंग सेन्सस् मेनेजमेन्ट एंड मॉनिटरिंग सिस्टम(सीएमएमएस) पोर्टल के माध्यम से की जाएगी। इसके अतिरिक्त, निवासियों को अपना जनगणना डेटा स्वयं ऑनलाइन भरने की सुविधा प्रदान करने के लिए स्वगणना वेब पोर्टल विकसित किया जाएगा।

जनगणना से संबंधित विभिन्न कार्यकलापों का निष्पादन जनगणना अधिनियम 1948 एवं जनगणना नियम 1990 के प्रावधानों के तहत किया जाता है। जनगणना के दौरान संकलित व्यक्तिगत जानकारियाँ पूर्णतः गोपनीय होती हैं और इसे किसी अन्य के साथ साझा नहीं किया जाता है साथ ही एकत्रित की गई व्यक्तिगत जानकारी को कहीं पर भी साक्ष्य के लिए उपयोग नहीं किया जा सकता। जनगणना 2027 के प्रगणक, पर्यवेक्षक या कोई अन्य व्यक्ति द्वारा किसी भी प्रकार के ओटीपी या बैंक डिटेल्स की मांग नहीं की जाएगी। जनगणना 2027 के लिए मास्टर ट्रेनरों द्वारा फील्ड ट्रेनरों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। फील्ड ट्रेनरों द्वारा प्रगणक एवं पर्यवेक्षकों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। जनगणना 2027 में भाग लेने वाले प्रगणकों एवं पर्यवेक्षकों को शासन द्वारा मानदेय भी दिया जाएगा।

मोरवन टेक्सटाइल प्रोजेक्ट को हाईकोर्ट से बड़ी राहत

नीमच। जिले की जावद तहसील के ग्राम मोरवन में प्रस्तावित सुविधि रेयॉन्स मोरवन टेक्सटाइल फैक्ट्री को लेकर पिछले कई महीनों से चल रहा विवाद एक अहम मोड़ पर पहुंच गया है। मध्यप्रदेश हाईकोर्ट ने पूर्व में लगाए गए अंतरिम स्टे को हटाते हुए राज्य शासन और एमपीआईडीसी को बड़ी राहत दी है। करीब ढाई महीने से रुका निर्माण कार्य अब दोबारा शुरू हो सकेगा। 350 करोड़ रुपये की लागत से प्रस्तावित यह परियोजना जिले की सबसे बड़ी औद्योगिक इकाइयों में गिनी जा रही है, जिससे लगभग 1500 लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार मिलने का अनुमान है।

विवाद की शुरुआत नवंबर 2025 में हुई थी, जब इस परियोजना को चुनौती देते हुए हाईकोर्ट में याचिका दायर की गई। याचिकाकर्ताओं ने आरोप लगाया कि जिस भूमि पर फैक्ट्री स्थापित की जा रही है, वह चरनोई (चारागाह) भूमि है और उसका डायवर्सन विधिक प्रावधानों के विपरीत किया गया है। 17 नवंबर 2025 को प्रारंभिक सुनवाई के दौरान हाईकोर्ट ने यथास्थिति बनाए रखने के निर्देश दिए थे, जिसके चलते फैक्ट्री निर्माण सहित सभी गतिविधियां ठप हो गई थीं।

फैक्ट्री बनने के आदेश आने के बाद से मोरवन और आसपास के गांवों में विरोध तेज हो गया। किसान संगठनों और ग्रामीणों ने फैक्ट्री को डैम और प्रमुख जलस्रोतों के निकट स्थापित किए जाने पर आपत्ति जताई। उनका तर्क था कि कपड़ा प्रोसेसिंग यूनिट से निकलने वाला अपशिष्ट भविष्य में पेयजल आपूर्ति और सिंचाई व्यवस्था को प्रभावित कर सकता है। कई चरणों में धरना-प्रदर्शन, रैलियां, ज्ञापन और प्रशासन के साथ बैठकों का दौर चला। ग्रामीणों ने दर्ज प्रकरण वापस लेने और परियोजना निरस्त करने की मांग भी उठाई, लेकिन वार्ताओं में सहमति नहीं बन सकी।

हाईकोर्ट में राज्य शासन और मध्यप्रदेश औद्योगिक विकास निगम (एमपीआईडीसी) की ओर से विस्तृत जवाब प्रस्तुत किया गया। शासन ने स्पष्ट किया कि भूमि का डायवर्सन विधिसम्मत प्रक्रिया के तहत किया गया है और कलेक्टर को इसके लिए अधिकार प्राप्त हैं। यह भी बताया गया कि संबंधित क्षेत्र में चारागाह भूमि की उपलब्धता आवश्यक मानक से अधिक है तथा उपयोग में लाई गई भूमि बंजर श्रेणी की है। पर्यावरणीय आशंकाओं पर शासन ने आश्वस्त किया कि फैक्ट्री 'जीरो डिस्चार्ज' सिद्धांत पर संचालित होगी और प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की सभी शर्तों का पालन अनिवार्य होगा।

दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद हाईकोर्ट ने माना कि प्रथम दृष्टया अधिग्रहण और डायवर्सन की प्रक्रिया नियमों के अनुरूप प्रतीत होती है। केवल आशंकाओं के आधार पर औद्योगिक विकास को अनिश्चितकाल तक रोका नहीं जा सकता। इसी आधार पर अंतरिम स्टे को आगे जारी रखने से इनकार करते हुए उसे समाप्त कर दिया गया।

स्टे हटने के बाद प्रशासन और फैक्ट्री प्रबंधन ने राहत जताई है और निर्माण कार्य शीघ्र प्रारंभ करने की तैयारी शुरू कर दी है। दूसरी ओर, विरोध कर रहे किसान संगठनों ने निर्णय के अध्ययन के बाद आगे की कानूनी और लोकतांत्रिक रणनीति तय करने की बात कही है। कुल मिलाकर, हाईकोर्ट के इस फैसले ने मोरवन परियोजना को नई गति दी है, लेकिन सामाजिक और पर्यावरणीय सवालों को लेकर क्षेत्र में बहस अभी भी जारी है।

नीमच में आगामी 29 अप्रेल को होगा भव्य सनातन सामूहिक विवाह सम्मेलन

नीमच। इस सनातन सामूहिक विवाह सम्मेलन के मुख्य आयोजक श्री रानी सती दादी मंदिर ट्रस्ट नीमच, सह आयोजक अन्नपूर्णा सेवा न्यास नीमच एवं सहआयोजक नानीबाई मायरा उत्सव समिति नीमच के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 29 अप्रैल 2026 को नीमच में एक भव्य सनातन सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस सामूहिक विवाह सम्मेलन में समाज के सभी वर्गों की बेटियों को समान रूप से सम्मिलित किया जाएगा। आयोजन पूर्णतः निःशुल्क रहेगा तथा प्रत्येक कन्या को लगभग ?50,000/- तक का कन्यादान व घरेलू उपयोग की आवश्यक सामग्री उपहार स्वरूप प्रदान की जाएगी। अन्नपूर्णा सेवा न्यास के संयोजक एवं पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष श्री राकेश पप्पू जैन ने जानकारी देते हुए बताया कि यह आयोजन सामाजिक समरसता, सनातन संस्कारों एवं बेटियों के सम्मान को समर्पित है। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजनों से आर्थिक रूप से सामान्य परिवारों को बड़ा संबल मिलता है। इस सामूहिक विवाह सम्मेलन में केवल नीमच जिले की कन्याएं को प्राथमिकता होंगी। इच्छुक परिवार अन्नपूर्णा सेवा न्यास कार्यालय, नीमच पर अपना पंजीय( )न करवा सकते हैं। इस अवसर पर श्री रानी सती दादी मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री कैलाश जी धानुका श्री सुनील धानुका अन्नपूर्णा सेवा न्यास के श्रीराम गोडबोले एवं श्री प्रकाश मंडवारिया नानीबाई मायरा उत्सव समिति के अध्यक्ष श्री विक्की मित्तल जी ने भी समाजजन से अधिक से अधिक संख्या में सहभागिता कर इस पुनीत आयोजन को सफल बनाने की अपील की।

महादेव को निहारने मंदिरों में उमड़ी भक्तों की भीड़

शाजापुर। 15 फरवरी रविवार को जिले भर में शिवरात्रि महोत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा। आयोजन को लेकर शिवालयों में तैयारियां की जा रही है। इसी को लेकर बुधवार को नगर के प्राचीन श्री ओंकारेश्वर महादेव मंदिर व श्री घाट स्थित शिव मंदिर में महादेव को हल्दी व मेहंदी लगाकर श्रद्धालुओं ने मंगल गीत गाए।

आयोजन की शुरूआत 10 फरवरी को श्री गणेश पूजन से हो गई। आयोजन के दूसरे दिन बुधवार को मंदिर में महिलाओं ने महादेव को हल्दी व मेहंदी लगाई गई। इसके बाद महिलाएं मंगल गीत गाते हुए ढोल-ढमाकों के साथ कुम्हार के यहां पहुंचे और चॉक का पूजन कर चॉक बधाई दी गई। वहीं खल मट्टी पूजा की गई। इसके बाद महिलाओं ने मंदिर पहुंचकर गणेश पूजन, माता पूजन की रस्मे निभाई। आयोजन के अगले दिन गुरूवार को भी मंदिर में शिव विवाह को लेकर आयोजन किए जाएंगे। इसके बाद 15 फरवरी को माता पार्वती संग महादेव का विवाह धूमधाम से होगा। जिसके लिए तेयारियों को अंतिम रूप देने के साथ ही पांच दिवसीय विवाह महोत्सव भी मनाया जा रहा है। जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालू शामिल होकर नाच-गाकर विवाह की खुशियां मना रहे हैं।

मंदिरों में हो रहा रंग रोगन, विद्युत सज्जा- हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी शिव विवाह को लेकर भक्तों में उत्साह नजर आ रहा है जो शिवालयों को सजाने में जुट गए हैं। कहीं रंग-रोंगन किया जा रहा है तो कहीं आकर्षक विद्युत सज्जा की तैयारियां की जा रही है। नगर के ओंकारेश्वर महादेव मंदिर सहित श्री घाट, भीमघाट, नीलकंठेश्वर महादेव मंदिर, मंगलनाथ महादेव मंदिरों में सुबह से शाम तक श्रद्धालू शिव विवाह की तैयारियो में जुटे नजर आ रहे हैं।

1 करोड़ की लहसुन चिप्स गबन कांड में दो माह बाद भी गिरफ्तारी नहीं, व्यापारी ने पुलिस कार्यप्रणाली पर उठाए सवाल

मंदसौर। पिपलियामंडी के एक व्यापारी के साथ करीब एक करोड रुपये की धोखाधड़ी एवं अमानत में खयानत के मामले में दो माह बीत जाने के बाद भी मुख्य आरोपी की गिरफ्तारी नहीं होने से मामला तूल पकड़ता जा रहा है। पीड़ित व्यापारी ने पुलिस पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा है कि आरोपी को पकड़ने के बजाय उन्हें ही बार-बार थाने बुलाकर मानसिक रूप से परेशान किया जा रहा है। फरियादी सुनील पिता मोहनलाल जैन, निवासी महात्मा गांधी मार्ग, पिपलियामंडी ने बताया कि मामले में प्रकरण दर्ज होने के बाद अब तक उन्हें छह बार यशोधर्मन नगर थाने पर बयान देने के लिए बुलाया गया है। जबकि वे पहले ही विस्तृत बयान दे चुके हैं और केस की कायमी भी हो चुकी है। उनका आरोप है कि आरोपी प्रभावशाली और रसूखदार होने के कारण पुलिस उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई करने से बच रही है। सुनील जैन ने बताया कि आरोपी नीमच में खुलेआम व्यापार कर रहा है और सामान्य रूप से घूम रहा है, लेकिन गिरफ्तारी की दिशा में ठोस कदम नजर नहीं आ रहे। उन्होंने इस संबंध में जिला पुलिस अधीक्षक मंदसौर के समक्ष भी आवेदन देकर न्याय की गुहार लगाई है।

वर्ष 2019 से जमा था माल - प्राप्त जानकारी के अनुसार, सुनील जैन अपने भाई दिलीप जैन के साथ लहसुन चिप्स का कमीशन एजेंट के रूप में व्यापार करते हैं। वर्ष 2019 में उन्होंने अपना माल भंडारण के लिए नाकोड़ा कोल्ड स्टोरेज एंड आइस प्लांट, औद्योगिक क्षेत्र जग्गाखेड़ी, मंदसौर में रखा था। उक्त कोल्ड स्टोरेज के संचालक संदीप पिता रमेशचंद्र चौधरी (जैन), निवासी 197, जवाहर नगर, नीमच हैं। रिपोर्ट के अनुसार 13 जनवरी 2019 से 3 मई 2019 के बीच विभिन्न तिथियों पर कुल 2893 बैग लहसुन चिप्स रसीद क्रमांक 2110, 2263, 2248, 2246, 2244 एवं 1219 के माध्यम से जमा किए गए थे। इसके अलावा 20 जून 2019 को 319 बैग तथा 20 जून 2021 को 318 बैग और जमा किए गए। इन अतिरिक्त बैगों की पक्की रसीद नहीं दी गई, बल्कि कच्ची रसीद देकर आश्वासन दिया गया कि रसीद बुक छपने के बाद पक्की रसीद उपलब्ध करा दी जाएगी। 16 नवम्बर 2020 को 23 बैग वापस प्राप्त किए गए। इस प्रकार कुल 3507 बैग लहसुन चिप्स अमानत माल के रूप में कोल्ड स्टोरेज में जमा थे।

110 रुपये किलो में हुआ था सौदा - फरियादी के अनुसार 24 फरवरी 2025 को उक्त लहसुन चिप्स का सौदा जय दुर्गा माँ ट्रेडर्स, पिपलियामंडी के साथ 110 रुपये प्रति किलोग्राम के भाव से किया गया था। अनुबंध के अनुसार अगस्त 2025 तक माल की डिलीवरी देना तय था। डिलीवरी की तिथि नजदीक आने पर जब कोल्ड स्टोरेज संचालक से संपर्क किया गया तो वह बार-बार ÷दो-चार दिन में माल देने÷ का आश्वासन देता रहा। लगातार टालमटोल से शंका होने पर जब सुनील जैन स्वयं जग्गाखेड़ी स्थित कोल्ड स्टोरेज पहुंचे तो परिसर खाली मिला।

स्थानीय लोगों से पूछताछ में पता चला कि संचालक पूरा माल उठाकर कोल्ड स्टोरेज बंद कर चला गया है। बाद में नीमच जाकर संपर्क करने पर भी आरोपी ने कोई स्पष्ट जवाब नहीं दिया और न ही माल लौटाया। पीड़ित व्यापारी के अनुसार लगभग 3507 बैग लहसुन चिप्स, जिसकी अनुमानित बाजार कीमत करीब एक करोड़ रुपये है। पुलिस ने मामले में जांच के बाद सुनील जैन एवं उनके भाई दिलीप जैन के कथन दर्ज किए। प्रारंभिक जांच में आरोपी संदीप चौधरी के विरुद्ध 4 नवम्बर 2025 को धारा 316(2) बीएनएस के अंतर्गत संज्ञेय अपराध पंजीबद्ध किया गया। इसके बावजूद अब तक आरोपी की गिरफ्तारी नहीं होने से व्यापारिक वर्ग में भी नाराजगी व्याप्त है।

व्यापारियों का कहना है कि यदि ऐसे मामलों में समय पर कार्रवाई नहीं हुई तो भंडारण और व्यापार व्यवस्था पर विश्वास डगमगा सकता है। मामले में अब सबकी नजर पुलिस की आगामी कार्रवाई पर टिकी है। पीड़ित व्यापारी ने जल्द गिरफ्तारी और माल अथवा राशि की वसूली की मांग की है, ताकि उसे आर्थिक नुकसान से राहत मिल सके।

टीआई ने कहा, गिरफ्तारी के प्रयास जारी - पुलिस थाना यशोधर्मन नगर टीआई शिवांशु मालवीय ने बताया कि प्रकरण दर्ज है और विवेचना जारी है। फरियादी को पूछताछ के लिए बुलाया गया था। आरोपी की गिरफ्तारी के प्रयास किए जा रहे हैं।

शिवपुर मातमोर जैन तीर्थ समीप बस्ती निर्माण पर जैन समाज में गहरा आक्रोश

देवास। देवास जिले के भारत भर में विख्यात चापड़ा के समीप शिवपुर मातमोर जैन तीर्थ असामाजिक एवं हिंसक गतिविधियों से घिरता हुआ दृष्टिगत हो रहा है। इसको लेकर संपूर्ण जैन समाज में गहरा आक्रोश व्याप्त है। अहिंसक समाज के लिए तीर्थ स्थल के समीप इस प्रकार की गतिविधियां असहनीय है। प्रशासन द्वारा मातमोर से विस्थापित कई परिवारों की शिवपुर जैन तीर्थ के समीप बस्ती बनाकर घर बनाने का आदेश

जारी किया गया है। इस हेतु प्रशासनिक कार्यवाही भी प्रारंभ हो चुकी है। पूज्य आचार्य श्री वीररत्न विजयजी म.सा. एवं जैन समाज के अथक प्रयासों से आज यह तीर्थ भारत भर में साधना, आराधना एवं तप स्थली के रूप में विख्यात हो चुका है। वर्ष भर में हजारों भक्त यहां पर साधना, आराधना एवं तीर्थ यात्रा करने आते है। यहां पर भारत एक मात्र संपूर्ण निर्मित अद्भुत शिल्पकला वाला रथाकार मंदिर है। तीर्थ अधिष्ठायक देव श्री माणिभद्रवीर यहां पर स्वयंभू प्रकटित होकर स्थापित है तथा भक्तों की मनोकामना पूर्ण कर रहे है। इस प्रकार के धार्मिक एवं आध्यात्मिक वातावरण के समीप बस्ती बनाया जाना सर्वथा अनुचित है। जबकि आसपास के क्षेत्र में कई स्थान बस्ती बनाने के लिए उपयोग में लिए जा सकते है।

गणपति स्थापना के साथ शुरू हुआ पांच दिवसीय महाशिवरात्रि पर्व

सिंगोली। नगर में विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर भक्तों द्वारा पांच दिवसीय महाशिवरात्रि पर्व हर्षोल्लास से मनाया जाएगा। मिली जानकारी के अनुसार दिनांक 11 फरवरी को विनायक स्थापना के साथ ही पांच दिवसीय महाशिवरात्रि पर्व की शुरुआत हो गई जिसके अंतर्गत 11 फरवरी को प्रात 10-15 बजे तहसील कार्यालय के बाहर स्थित शिव मंदिर पर भक्तों ने सजोड़े विधि विधान पूर्वक विनायक स्थापना की गई आगे दिनांक 12 फरवरी को रात्रि 7 बजे से तहसील कार्यालय के बाहर भव्य संध्या दिनांक 13 फरवरी रात्रि 7 बजे हल्दी- मेंहदी कार्यक्रम दिनांक 14 फरवरी नंदीश्वर महादेव से प्रातः 11-15 बजे मंगल कलश निकलेगे जो नगर भ्रमण कर तहसील कार्यालय के बाहर शिव मंदिर पर पहुंचेगे जहां प्रसाद वितरण किया जाएगा दिनांक 15 फरवरी महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर नगर में विशाल शाही सवारी के साथ भूत-भावन भूतेश्वर नाथ नगर भ्रमण पर निकलेंगे शाही सवारी मे हजारो भक्तो का रैला होगा साथ ही नगर का प्रसिद्ध सांवरिया अनिल बेन्ड,नासिक के ढ़ोल, भटिंडा बेंन्ड,शाही हाथी अनेक झांकियां,बाबा खाटु श्याम का सुन्दर दरबार, अघोरी पार्टी,मस्का बेंड,एल ई डी वाल से लाइव, स्पेशल डीजे, नाचने वाले घोड़े, दिनेश ढ़ोल, भव्य आतिशबाजी,ड्रोन द्वारा पुष्प वर्षा,शाही बग्घी,बजरंग व्यायाम शाला का अखाड़ा, सहित अनेक आकर्षण के केंद्र शाही सवारी मे रहेगे।

विद्युत मंडल पेंशनर्स एसोसिएशन का धरना प्रदर्शन संपन्न

देवास। विद्युत मंडल के पेंशनर्स द्वारा दो सूत्रीय मांगों को लेकर एक दिवसीय धरना प्रदर्शन मंडुक पुष्कर धरना स्थल पर किया गया। धरना प्रदर्शन में एसोसिएशन के अध्यक्ष हुकुमसिंह सायल ने बताया कि विद्युत मंडल पेंशनरों की दो सूत्रीय प्रमुख मांगे जिसमें म.प्र. शासन द्वारा पेंशन की गारंटी एवं केन्द्र सरकार द्वारा घोषित तिथि व दर से महंगाई राहत के भुगतान के लिए विद्युत मंडल के चार प्रमुख पेंशनर संगठनो द्वारा प्रदेश स्तर पर संयुक्त मोर्चा का गठन कर आव्हान किया गया। मोर्चा के आव्हान पर प्रदेश भर में क्रमबद्ध आंदोलन चलाए जा रहे है। इसमें प्रथम चरण में प्रदेशभर में 23 दिसम्बर 2025 को जिलाधीश के माध्यम से मुख्यमंत्री को ज्ञापन प्रेषित किये गये एवं द्वितीय चरण में प्रदेशभर में जिला स्तर पर एक दिवसीय धरना प्रदर्शन दोपहर 12 से शाम 4 बजे तक किये गये।

पुलिस व डॉक्टर्स ने बताया आपात स्थिति में जान बचाने का तरीका

शाजापुर। यातायात पुलिस ने आम नागरिकों को सीपीआर (कार्डियो पल्मोनरी रिससिटेशन) का प्रशिक्षण दिया। यह प्रशिक्षण टंकी चौराहा और दुपाड़ा रोड पर आयोजित किया गया, जिसमें जिला अस्पताल शाजापुर के डॉक्टरों की टीम भी शामिल हुई। जिन्होंने आपात स्थिति में लोगों की जान कैसे बचाई जाए इसके बारे में विस्तार से बताया।

प्रशिक्षण के दौरान डॉक्टरों ने आपात स्थिति में जान बचाने के तरीकों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अचानक तबीयत बिगड़ने, दुर्घटना या हृदय गति रुकने पर सीपीआर कैसे दिया जाता है और शुरुआती समय में सही कदम उठाकर कैसे किसी की जान बचाई जा सकती है। इस दौरान डॉक्टरों ने डेमो के जरिए पूरी प्रक्रिया समझाई और आम लोगों से इसका अभ्यास भी करवाया।

नगरवासियों ने ली रूचि, लिया प्रशिक्षण- चौराहे पर चल रहे इस प्रशिक्षण को वहां से गुजर रहे जिस नगरवासी ने देखा वह अपने वाहन रोककर कार्यक्रम में शामिल हो गया। लोगों ने इसमें गहरी रुचि दिखाई और सवाल पूछे। साथ ही अपनी शंकाओं का समाधान किया। यातायात पुलिस और डॉक्टरों की टीम ने सभी प्रश्नों के उत्तर देकर जागरूकता बढ़ाने का प्रयास किया। यातायात थाने में पदस्थ सूबेदार सौरभ सिंह चौहान ने बताया कि यह सीपीआर प्रशिक्षण अभियान पुलिस मुख्यालय से प्राप्त निर्देशों के तहत चलाया जा रहा है। इसके अलावा लोगों को राहवीर योजना का भी प्रचार-प्रसार किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य सड़क दुर्घटनाओं में घायल लोगों को समय पर सहायता उपलब्ध कराना है।

मालिक, प्रकाशक, मुद्रक अशोक त्रिपाठी मो: 9425379389 द्वारा एमआईजी ए-17/1, वेद नगर, नानाखेडा, उज्जैन (म.प्र.) से प्रकाशित कर प्रियंका ऑफसेट, 2/10 पिपलीनाका, भैरुगढ रोड, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित, सम्पादक : अभय नरवरिया मो: 9584111186 (सभी वाद-विवादों का न्याय क्षेत्र उज्जैन रहेगा)